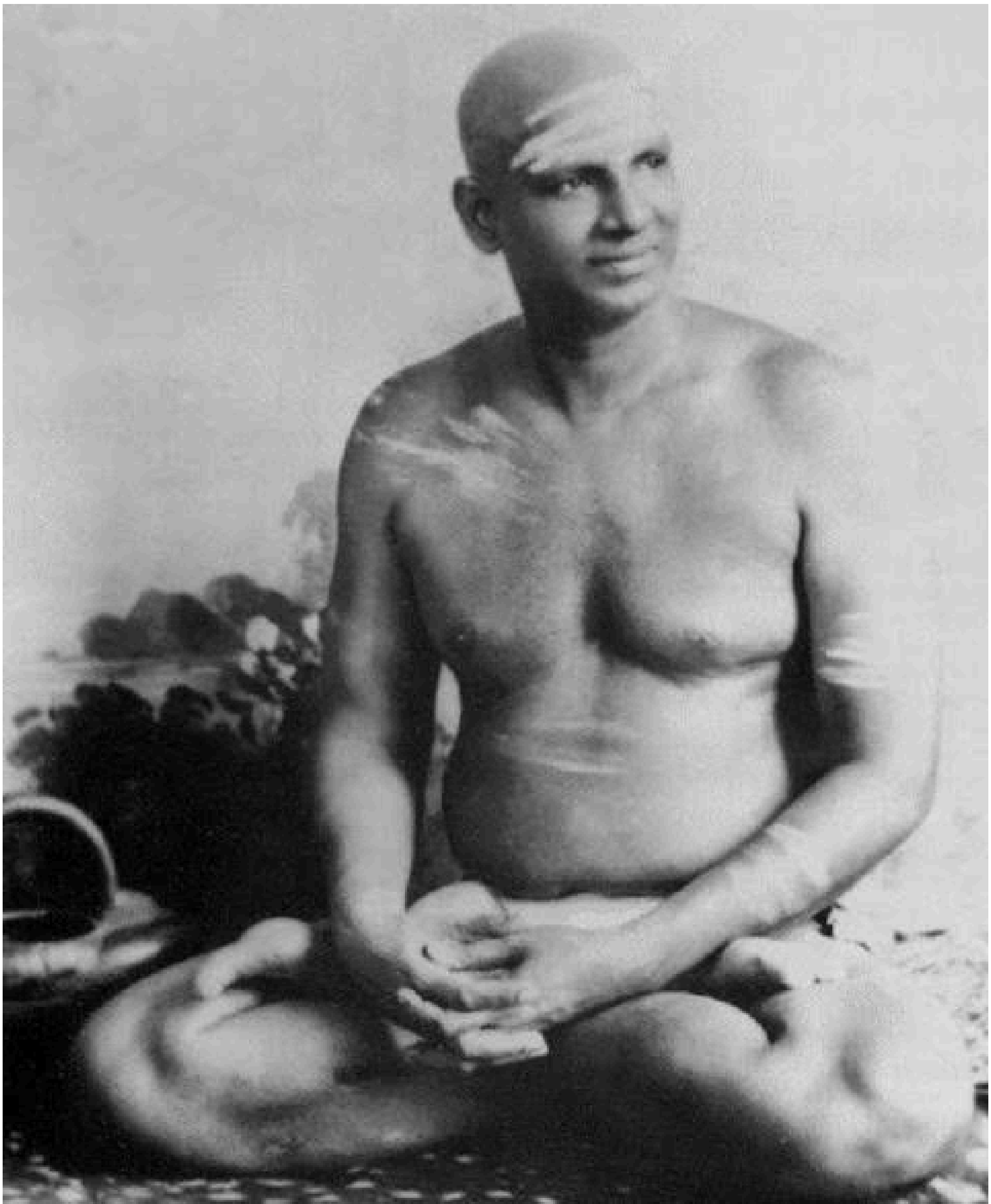
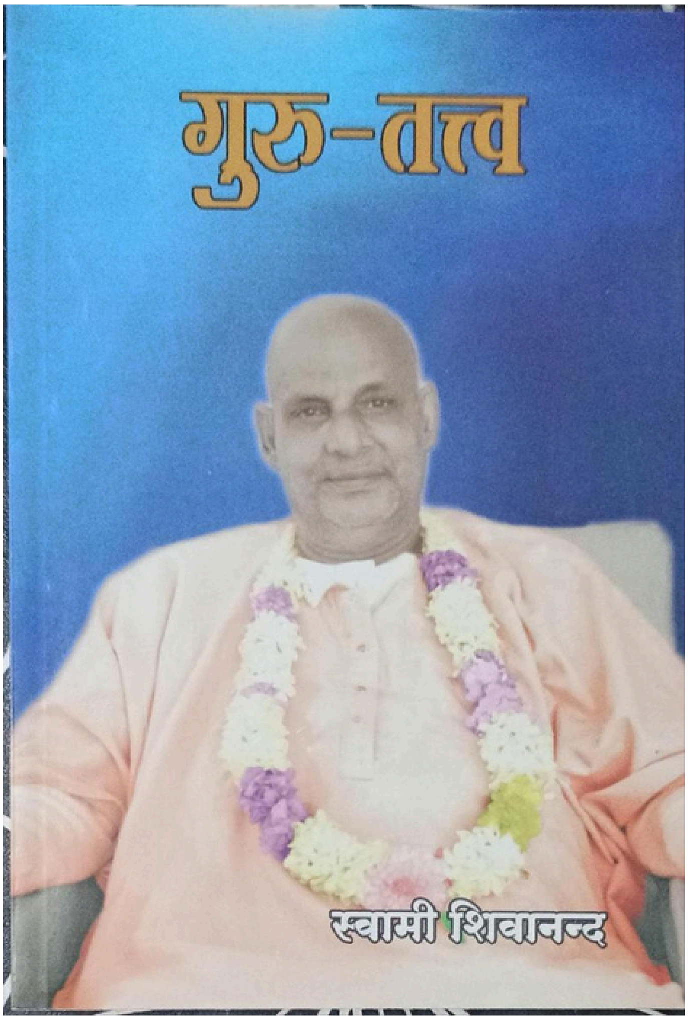



गुरु-तत्त्व
स्वामी शिवानन्द

गुरु-तत्त्व

GURU TATTVA काहिन्दीरूपान्तर

लेखक
श्री स्वामी हिवानन्द सरस्वती

SERVE LOVE MEDITATE REALIZE
THE DIVINE LIFE SOCIETY

अनुवादक
श्री कामेश्वरस्वरूप गगग

प्रकिाक
द हिवाइन लाइफ सोसायटी
पत्रालय : हिवानन्दनगर- 249192
हिला : हटिरीगढ़वालउत्तराखण्ड (हिमालय),भारत
www.sivanandaonline.org.www.dilshq.org

प्रथम हिन्दी संस्करण- १९८५
षष्ठ हिन्दी संस्करण-२०१८
(१,००० प्रहतयााँ)

ISBN 81-7052-102-5

HS53

PRICE : ₹55/-

'द हिवाइन लाइफ सोसायटी, हिवानन्दनगर' के हलए
स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाहित तथा उन्हीं के द्वारा 'योग-वेदान्त
फारेस्ट एकिोमी प्रेस, पो. हिवानन्दनगर, हि. हटिरी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, हपन २४९ १९२' में मुहित।
For online orders and Catalogue visit: disbooks.org

प्रकािकीय वक्तव्य

यद्यहप आध्यात्मिक गुरु की धारणा के सम्बन्ध में बहुत कुछ हलखा िा चुका िै; हफर भी इस मित्त्वपूणग हवषय को ले कर िनसाधारण के मन में अनेक भ्रात्मन्तयााँ, भ्रम और सन्देि बने हुए िैं।

क्या साधक के हलए गुरु एक अहनवायगता ि? सद्गुरु कौन ि? वि हकस सीमा तक अपने हिष्य की सियता कर सकता ि? हिष्य के क्या-क्या कतगव्य िैं ? दीक्षा का क्या अथग ि? इनके तथा इनसे सम्बत्मन्धत अनेक प्रश्नों के सुस्पष्ट तथा सुहनहित उत्तर उपलब्ध न िोने के कारण अनेक उत्सािी साधकों की आध्यात्मिक प्रगहत रुक िाती ि।

अिा ि, इन पररत्मथथहतयों में सद्गुरु हिवानन्द िी मिारि की प्रसुतुत पुस्तक अनेक साधकों के हलए वरदान हसद्ध िोगी। इस पुस्तक में पाठकों को गुरु-हिष्य के पारस्पररक सम्बन्धों की प्रामाहणक तथा सारगहभगत व्याख्या पढ़ने को हमलेगी।

आध्यात्मिक तृष्णा से आकुल-व्याकुल नर-नाररयों के लाभ के हलए इस पुस्तक को प्रकाहित करते हुए िमें अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव िो रिा ि। भगवान् तथा ब्रह्महवद्या-गुरुओं की कृपा आप सब पर बनी रिे !

यि पुस्तक मूल अँगरेिी पुस्तक Guru-Tattva का अनुवाद ि।

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

-

हवश्व- प्राथगना

िे स्नेि और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार ि, नमस्कार ि।
तुम सवगव्यापक, सवगित्मक्तमान् और सवगज्ञ िो ।
तुम सत्मिदानन्दघन िो ।
तुम सबके अन्तवागसी िो ।

िमें उदारता, समदहिगता और मन का समत्व प्रदान करो।

श्रद्धा, भत्मक्त और प्रज्ञा से कृताथग करो ।
मिें आध्यात्मिक अन्तःत्मिक्त का वर दो,
हिससे िम वासनाओं ंका दमन कर मनीय को प्राप्त िों।ं
मि अिंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित िों।ं
मिारा हृदय हदव्य गुणों ंसे पररपूररत करो ।

मि सब नाम-रूपों ंमें तुम्हारा दिगन करें।
तुम्हारी अचगना के िी रूप में इन नाम-रूपों ंकी सेवा करें।
सदा तुम्हारा िी स्मरण करें।
सदा तुम्हारी िी महिमा का गान करें।
तुम्हारा िी कहलकल्मषिारी नाम िमारे अधर-पुट पर िो।
सदा िम तुममें िी हनवास करें ।

- स्वामी डिवानन्द

डवषय-सूची

प्रथम अध्याय

गुरु की भूहमका

अज्ञानडिडमरान्धस्य ज्ञानांजनिलाकया ।
चक्षुषुरुन्मीडलिां येन िस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

"उस गुरु को नमस्कार िै िो अज्ञान रूपी हतहमर से अन्धे बने लोगों ंके नेत्र को ज्ञान रूपी अंनि की लिाका से खोल देता िै।"

(गुरुगीता)

गुरु साक्षात् भगवान् िै िो साधकों ंके पथ-प्रदिगन के हलए साकार रूप में प्रकट िोता िै। गुरु का दिगन भगवद्-दिगन िै। गुरु का भगवान् के साथ योग िोता िै। वि अन्य लोगों ंमें भत्मक्त अनुप्राहणत करता िै। उसकी उपत्मथथहत सबके हलए पावनकारी िै।

गुरु वसुतुतः िीविाा के मध्य की कडी िै। गुरु वि सत्ता िै हिसने अपने को त्वम् (िीवत्व) से तत् (ब्रह्म) में उन्नत कर हलया िै और इस प्रकार उसकी उभय लोकों ंमें मुक्त तथा अबाहधत पहुाँच िै। वि मानो हक अमरत्व की दिेली पर खडा िै और नीचे झुक कर एक िाथ से संघषगरत िीवाओं ंको उन्नत करता और दूसरे िाथ से उन्हें हनत्य-थथायी आनन्द तथा असीम सत्मित् की परम सत्ता में ऊपर उठाता िै।

सद्गुरु

ग्रन्ों ंके अध्ययन मात्र से कोई गुरु निीं ंबन सकता िै। िो श्रोहत्रय िो तथा हिसे आिा की अपरोक्षानुभूहत िो, उसी पर गुरु का नामारोपण हकया िा सकता िै। िीवनुमुक्त सन्त वास्तहवक गुरु िै। वि सद्गुरु िै। वि ब्रह्म अथवा परमािा से अहभन्न िोता िै। वि ब्रह्महवत् िोता िै।

हसत्मद्धयों ंपर आहधपत्य हकसी ऋहष की मित्ता घोहषत करने अथवा उसके आि-साक्षात्कार की उपलत्मब्ध प्रमाहणत करने की कसौटी निीं ंिै। सद्गुरु चमत्कार अथवा हसत्मद्धयों ंका प्रदिगन निीं ंकरता हफरता । वि साधकों ंको आहधभौहतक पदाथों की हवद्यमानता का हनिय हदलाने, उन्ें प्रोत्सािन देने तथा उनके हृदय में श्रद्धा हनवेहित करने के हलए कभी-कभी उन्ें प्रदहिगत कर सकता िै। सद्गुरु असंख्य हसत्मद्धयों ंसे सम्पन्न िोता िै। वि सभी हदव्य ऐश्वयों का स्वामी िोता िै।

सद्गुरु साक्षात् ब्रह्म िै । वि आनन्द, ज्ञान तथा करुणा का सागर िै। वि आपकी आिा का नेतृत्व करने वाला िै। वि सुख का स्रोत िै। वि आपके समस्त कष्टों, ं हवषादों ंतथा बाधाओं ंको हवदूररत करता, आपको सम्यक् हदव्य पथ दिगता, आपके अज्ञानावरण को हवदीणग करता, आपको अमर तथा हदव्य बनाता और आपकी हनम्न आसुरी प्रकृहत को रूपान्तररत करता िै। वि आपको ज्ञान-रजुजु देता और इस संसार सागर में िूबते समय आपको पकडता िै। उसे मात्र एक मनुष्य िी न समझें। यहद आप उसे मनुष्य समझते िैं, तो आप पिु िैं। अपने गुरु की पूिा करें और श्रद्धापूवगक उन्ें नमस्कार करें।

गुरु भगवान् िै । उसकी वाणी भगवद्-वाणी िै। उसे उपदेि देने की आवश्यकता निीं ंिै। उसका साहन्नध्य अथवा उसकी संगहत भी उन्नयनकारी, प्रेरणादायी तथा भावोत्तेिक िै। उसका संग िी आि-प्रबोधक िै। उसके साहन्नध्य में रिना आध्यात्मिक हिक्षा िै। श्री गुरु ग्रन् साहिब िी का अध्ययन करें, आपको गुरु की मित्ता ज्ञात िो िायेगी।

मनुष्य केवल मनुष्य से िी सीख सकता िै; अतः भगवान् मानव-िरीर के द्वारा हिक्षा देता िै। आप अपने गुरु में स्व-कत्मित पूणगता के मानवीय आदिग को साकार हुआ पाते िैं। यि वि आदिग िै हिसके अनुरूप आप अपना हनमागण करना चािते िैं। आपका मन सििि िी यि स्वीकार कर लेगा हक ऐसी मिान आिा आदर करने तथा श्रद्धा रखने योग्य िै।

गुरु मोक्ष का द्वार िै । वि इत्मियातीत सत्-हचत् का द्वार िै; हकनु्तु इस द्वार में साधक को िी प्रवेि करना िै। गुरु सिायक िै; हकनु्तु व्याविाररक साधना का वास्तहवक कायग तो साधक के हिर पर िी िै।

गुरु की आवश्यकिा

अध्यािा-पथ पर नवीन साधक को गुरु की आवश्यकता हुआ करती िै । एक दीपक को िलाने के हलए आपको एक प्रज्वहलत दीपक की आवश्यकता िोती िै; उसी प्रकार एक प्रबुद्ध आिा दूसरी आिा को प्रबुद्ध कर सकती िै।

कुछ लोग कुछ वषों तक स्वतन्त्र रूप से अध्ययन करते िैं। कालान्तर में उन्ें गुरु की आवश्यकता यथाथगतः अनुभव िोती िै। उन्ें पथ में कुछ बाधाएँ हमलती िैं। उन्ें इस बात का ज्ञान निीं ंिोता हक इन अवरोधों ं अथवा गहतरोधों ंको कैसे दूर करें। तब वे गुरु की खिो करना आरम्भ कर देते िैं।

िा व्यत्मक्त बदरीनाथ िा चुका िै, केवल विी आपको विााँ िाने का मागग बतला सकता िै। आध्यात्मिक पथ में तो अपना मागग ढूाँढ़ हनकालना आपके हलए और भी कहठन िै। मन आपको प्रायः बिकायेगा। गुरु पतन के गतों और अवरोधों ंको दूर कर आपको सन्मागग पर ले िायेगा । वि आपको बतलायेगा — "यि मागग आपको मोक्ष की ओर ले िायेगा, यि आपको बन्धन की ओर ले िायेगा।" आप िाना तो बदरीनाथ चािते िोंगे; हकन्तु इस पथ-प्रदिगन के अभाव में आप हदल्ली िा पहुाँचेंगे।

िास्त् अरण्य के समान िैं। उनमें अस्पष्ट लेखांि िोते िैं। उनमें ऐसे भी लेखांि िोते िैं िो प्रतीयमानतः परस्पर हवरोधी िैं। उनमें ऐसे भी लेखांि पाये िाते िैं हिनके गूढ़ अथग, नानाहवध अहभप्राय तथा रिस्यिाक व्याख्याएाँ िोती िैं। उनमें प्रहतहनदिे िैं। आपको गुरु की आवश्यकता िै िो आपको ठीक अथग समझाये, आपके सन्देिों ंतथा अस्पष्टताओं ंको दूर करे और आपके सम्मुख उपदेिों ंका सार प्रस्तुत करे। प्रत्येक साधक को अध्यात्म-पथ में एक गुरु की अपररिायग आवश्यकता िोती िै। गुरु िी आपके दोषों ंका पता लगा सकता िै। अिंकार का स्वरूप ऐसा िै हक आप स्वयं अपने दोषों ंका पता निीं ंलगा सकते िैं। िैसे व्यत्मक्त अपनी पीठ निीं ंदेख सकता िै, वैसे िी वि अपनी त्रुहटयों ंको निीं ंदेख सकता िै। अपने दुगुगणों ंतथा दोषों ंके उन्मूलन के हलए उसे एक गुरु के संरक्षण में रिना चाहिए।

हकसी गुरु के पथ-प्रदिगन में रिने वाला साधक पथ-भ्रष्ट िोने से िगत् सुरहक्षत रिता िै। गुरु के साथ सत्संग आपको भौहतक के सभी प्रलोभनों ंतथा प्रहतकूल ित्मक्तयों ंसे रक्षा करने का एक कवच तथा दुगग िै।

हिन लोगों ंने हकसी गुरु के संरक्षण में रि कर अध्ययन हकये हबना िी पूणगता प्राप्त की िो, उनके उदािरण गुरु की आवश्यकता के हवरुद्ध प्रमाण के रूप में उद्धृत निीं ंकरने चाहिए; क्योंहक ऐसे मिापुरुष आध्यात्मिक िीवन की सामान्य प्रसमता न िो कर उसके अपवाद हुआ करते िैं। आध्यात्मिक गुरु के रूप में उनका आहवभागव गत िीवनों ंमें की गयी उम्र सेवा, अध्ययन तथा ध्यान के फल-स्वरूप िोता िै। वे पिले िी गुरु के अधीन अध्ययन कर चुके िोते िैं। वतगमान िन्म केवल उसके आध्यात्मिक फल का हनवािि िै। अतएव उसके द्वारा गुरु का मित्त्व कम निीं ंिोता िै।

कुछ गुरु अपने साधकों ंको बिकाते िैं। वे सबसे किते िैं: "स्वयं िी हवचार करें। अपने को हकसी गुरु के प्रहत समहपगत न करें।" िब व्यत्मक्त यि किता िै : 'हकसी गुरु का अनुसरण न करें', तो उसका अहभप्राय श्रोता का गुरु स्वयं बनने का िोता िै। ऐसे नकली गुरुओं ंके पास न िायें। उनके प्रवचनों ंको न सुनें ।

सभी मिापुरुषों ंके गुरु थे। सभी ऋहषयों,ं मुहनयों,ं पैगम्बरों,ं िगद्गुरुओं,ं अवतारों,ं मिापुरुषों ंके; चािे वे हकतने िी मिान् क्यों ंन रिे िों;ं अपने हनिी गुरु थे । श्वेतकेतु ने उद्दालक से, मैत्रेयी ने याज्ञवल्क्य से, भृगु ने वरुण से, नारद ने सनत्कुमार से, नहचकेता ने यम से, इन्द्र ने प्रिापहत से सत्य के स्वरूप की हिक्षा प्राप्त की तथा अन्य अनेक लोग ज्ञानी िनों ंके पास हवनम्रतापूवगक गये, ब्रह्मचयग व्रत का अहत-हनयमहनष्ठा से पालन हकया, कठोर अनुिासनों ंकी साधना की तथा उनसे ब्रह्महवद्या सीखी।

भगवान् कृष्ण अपने गुरु सान्दीपहन के चरणों ंमें बैठे। भगवान् राम के गुरु वहसष्ठ थे हिन्होंने उन्ें उपदेि हदया। प्रभु यीिु ने िान से िॉडगन नदी के तट पर दीहक्षत िोने के हलए उन्ें खोिा था। देवताओं ंके भी बृिस्पहत गुरु िैं। हदव्य आत्माओं ंमें से सवागहधक मिान् भी गुरु दहक्षणामूहतग के चरणों ंमें बैठे थे।

नव-दीहक्षत के हलए प्रथम दैहिक गुरु िोना आवश्यक ि।ै वि प्रारम्भ में िी भगवान् को गुरु निीं ंबना सकता ि।ै उसका हचत्त िुद्ध िोना चाहिए। उसमें नैहतक पूणगता िोनी चाहिए। उसे पूणगरूपेण धाहमगक िोना चाहिए। तभी वि भगवान् को अपना गुरु बना सकता ि।ै

गुरु का चयन

यहद आप हकसी मिात्मा के साहन्नध्य में िात्मन्त पाते िैं; यहद आप हकसी के प्रवचनों ंसे अनुप्राहणत िोते िैं; यहद वि आपकी िंकाओं ंका समाधान कर सकता ि;ै यहद वि काम, क्रोध तथा लोभ से मुक्त ि;ै यहद वि हनःस्वाथग, स्नेिी तथा अत्मस्मता-रहित ि,ै तो आप उसे अपना गुरु स्वीकार कर सकते िैं। िो आपके सन्देिों ंका हनवारण कर सकता ि,ै िो आपकी साधना में सिानुभूहतिील ि,ै िो आपकी आथथा में बाधा निीं ंिालता, वरन् िििा आप िैं विाँ से आगे आपकी सिायता करता ि,ै हिसकी उपत्मथथहत में आप आध्यात्मिक रूप से अपने को उत्मित अनुभव करते िैं, वि आपका गुरु ि।ै यहद आपने एक बार गुरु का चयन कर हलया, तो हनहवगवाद रूप से उनका अनुसरण करें। भगवान् गुरु के माध्यम से आपका पथ-प्रदिगन करेगा।

अपने गुरु के चयन में अपनी बुत्मद्ध का उपयोग अहधक न करें। ऐसा करने पर आप असफल रिेंगे। यहद आप श्रेष्ठ गुरु प्राप्त करने में असफल िों ंतो उस साधु की हिक्षाओं ंका पालन कीहिए िो कुछ वषों से उस पथ पर चल रिा िो, हिसमें िुहचता तथा अन्य सद्गुण िों,ं हिसे िास्त्रों ंका ज्ञान िो। िैसे स्नातकोत्तर उपाहध वाले प्राध्यापक के उपलब्ध न िोने पर माध्यहमक कक्षा का छात्र तृतीय कक्षा के छात्र को पढ़ा सकता ि,ै िैसे िानपद ल्यि-हचहकत्सक (हसहवलसिगन) के उपलब्ध न िोने पर उपसिायक िल्य-हचहकत्सक रोगी का उपचार कर सकता ि,ै वैसे िी यि मध्यम कोहट का गुरु आपकी सिायता कर सकता ि।ै

यहद आप इस मध्यम कोहट के गुरु को पाने में भी असमथग िैं, तो आप श्री िंकराचायग, दत्तात्रेय िैसे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त सन्तों ंद्वारा हलत्मखत ग्रन्थों ंमें अन्तहवगष्ट उपदेिों ंका अनुसरण कर सकते िैं। यहद प्राप्य िो तो ऐसे साक्षात्कार प्राप्त गुरु का हचत्र रख सकते िैं तथा उसकी श्रद्धा और भत्मक्तपूवगक पूिा कर सकते िैं। िनैः-िनैः आपको प्रेरणा हमलेगी तथा गुरु स्वप्न में प्रकट िोंगे और उहचत समय आने पर आपको दीक्षा तथा प्रेरणा देंगे। सिे साधक के हलए रिस्यमय ढंग से सिायता आती ि।ै

भगवान् से रहस्यमयी सहायिा

रिा देखें हक हनम्नांहकत उदािरणों ंमें भगवान् ने भक्त की हकस प्रकार सिायता की। एकनाथ ने आकािवाणी सुनी। उसने किा- "िनादगन पन्त से देवहगरर में हमलो। वि तुम्हें ठीक मागग में ले िायेंगे तथा तुम्हारा पथ-प्रदिगन करेंगे।" उन्िोंने तदनुसार कायग हकया तथा उन्िें अपना गुरु हमल गया। तुकाराम को अपना मन्त्र 'राम कृष्ण िरर' स्वप्न में हमला। उन्िोंने इस मन्त्र का िप हकया तथा भगवान् कृष्ण के दिगन हकये। भगवान् कृष्ण ने नामदेव को उत्तर हिक्षा प्राप्त करने के हलए मत्मल्लकािुगन के एक संन्यासी के पास भेिा। रानी चुिाला ने कुम्भ मुहन का रूप धारण हकया, वन में अपने पहत हित्मखध्वि के सम्मुख प्रकट हुई तथा उन्िें कैवल्य के गूढ़ तत्त्व में दीहक्षत हकया। मधुर कहव आकाि में लगातार तीन हदन तक ज्योहत देखते रिे। इसने उनका मागग-प्रदिगन हकया और उन्िें हतन्नेवेली के हनकट एक इमली के वृक्ष के नीचे समाहधथथ उनके गुरु नम्माल्वर के पास पहुँचाया। हबल्वमंगल हचन्तामहण नतगकी से बहुत आसक्त थे । हपंगला उनकी गुरु बनी। तुलसीदास को एक अदृश्य आत्मा से िनुमान् के और िनुमान् के द्वारा श्री राम के दिगन का अनुदेि प्राप्त हुआ ।

अहधकारी हिष्यों ंको सुयोग्य गुरु का कभी भी अभाव निीं ंरिता िै। साक्षात्कार प्राप्त आिाएँ दुलगभ निीं ं िैं। सामान्य हनबुगत्मद्ध व्यत्मक्त उन्ें सिता से पिचान निीं ं पाते िैं। कुछ इने-हगने व्यत्मक्त िी, िो अनघ तथा सद्गुणों ं के मूतग रूप िैं, आिसाक्षात्कार प्राप्त आिाओं ं को पिचान सकते िैं तथा वे िी उनके साहन्नध्य से लाभात्मित िोते िैं।

बि तक संसार िै, तब तक आि-साक्षात्कार के पथ में संघषगरत आिाओं ंका पथ-प्रदिगन करने के हलए गुरु तथा वेद िैं। िो सकता िै हक सत्ययुग की अपेक्षा कहलयुग में साक्षात्कार प्राप्त आिाओं ंकी संख्या अि िो; हकनु्तु साधकों ंकी सिायता करने के हलए वे सदा हवद्यमान रिते िैं। प्रत्ेयेक व्यत्मक्त को अपनी क्षमता, प्रकृहत तथा बुत्मद्ध के अनुसार अपना मागग अपनाना चाहिए। उसके सद्गुरु उस मागग में उसे हमलेंगे।

हिक्षा-गुरु िथा दीक्षा-गुरु

इस भूलोक में व्यत्मक्त के हद्वधा कतगव्य िैं—अपने िीवन का परररक्षण तथा आि-साक्षात्कार। अपने िीवन के परररक्षण के हलए उसे अपनी दैहनक िीहवका िेतु कायग करना सीखना िोता िै। आि-साक्षात्कार के हलए उसे सेवा, प्ेरेम तथा ध्यान करना िोता िै। िो गुरु उसे सांसाररक कलाओं ंका ज्ञान प्रदान करता िै, वि हिक्षा-गुरु िै। िो गुरु उसे आि-साक्षात्कार का मागग प्रदहिगत करता िै, वि दीक्षा गुरु िै। हिक्षा-गुरु अनेक िो सकते िैं—हितनी बातें वि सीखना चािता िै, उतने गुरु िो सकते िैं। दीक्षा गुरु केवल एक िी िोता िै-विी िोता िै, िो उसे मोक्ष की ओर ले िाता िै।

एक गुरु से सांलग्न रहें

एक हचहकत्सक से आपको औषहध-हनदेि (नुस्खा) हमलता िै, दो हचहकत्सकों ंसे आपको परामिग प्राप्त िोता िै और यहद तीन हचहकत्सक हुए, तो आपका अपना दाि-संस्कार िोता िै। इसी भााँहत यहद आपके अनेक गुरु िोंगे, तो आप हंकंकतगव्यहवमूढ़ िो िायेंगे। क्या करणीय िै, यि आपको ज्ञात न िोगा। एक गुरु आपसे किेगा, 'सोऽिं का िप करो।' दूसरा आपसे किेगा, 'श्री राम का िप करो।' तृतीय गुरु आपसे किेगा, 'अनाित नाद को सुनो।' आप उलझन में पड िायेंगे। एक गुरु से संलग्न रिें और उनके उपदेिों ंका पालन करें।

सबकी बातें सुनें; हकनु्तु अनुगमन एक िी व्यत्मक्त का करें। सबका सम्मान करें; हकनु्तु श्रद्धा एक िी व्यत्मक्त पर रखें। सबसे ज्ञान एकत्र करें; हकनु्तु एक िी हिक्षक के उपदेिों ंको अपनायें। तब आपकी आध्यात्मिक प्रगहत िीघ्र िोगी।

गुरु-परम्परा

आध्यात्मिक ज्ञान गुरु-परम्परा का हवषय िै। यि गुरु से अपने हिष्य को प्रदान हकया िाता िै। गौपादाचायग ने अपने हिष्य गोहवन्दाचायग को, गोहवन्दाचायग ने अपने हिष्य िंकराचायग को और िंकराचायग ने अपने हिष्य सुरेश्वराचायग को आिज्ञान प्रदान हकया। मत्ें्स्यनाथ ने अपने हिष्य गोरखनाथ को, गोरखनाथ ने हनवृहत्तनाथ को और हनवृहत्तनाथ ने ज्ञानदेव को ज्ञान प्रदान हकया। तोतापुरी ने श्री रामकृष्ण को और रामकृष्ण ने स्वामी हववेकानन्द को ज्ञान प्रदान हकया। रािा िनक के िीवन को ढालने वाले अष्टावक्र थे। रािा भतृगिरर की आध्यात्मिक हनयहत को आकार देने वाले गोरखनाथ थे। िब अिुगन तथा उद्धव के मन अहनहित अवथथा में थे, तब भगवान् श्री कृष्ण ने िी उन्ें आध्यात्मिक पथ पर प्रहतहष्ठत हकया था।

दीक्षा -इसका अथथ

भक्त सन्त एक भक्त को भत्मक्त-मागग में दीहक्षत करता ि ै। ज्ञानी वेदान्त के साधक को मिावाक्यों ंकी दीक्षा देता ि ै। ि ठयोगी तथा रियोगी अपने-अपने हविेष मागग में दूसरों ंको दीहक्षत करते ि ैं; हकन्तु पूणग ज्ञानी अथवा पूणग योगी हकसी भी हविेष मागग की दीक्षा दे सकता ि ै। श्री ि ंकर अथवा मधुसूदन सरस्वती ि ैसा सन्त अथवा ज्ञानी हिस मागग के हलए साधक उपयुक्त ि ै, उसकी उसे दीक्षा दे सकता ि ै। गुरु साधक की सूक्ष्म ि ााँच द्वारा उसकी अहभरुहच, प्रकृहत तथा क्षमता का पता लगा लेता ि ै और उसके हलए सवागहधक उपयुक्त मागग हनहित करता ि ै। यहद उसका हृदय अपहवत्र ि ै, तो गुरु उसके हलए कई वषों तक हनःस्वाथग सेवा हनधागररत करता ि ै। तब गुरु पता लगाता ि ै हक साधक हकस हविेष मागग के उपयुक्त ि ै और उसको उसकी दीक्षा देता ि ै।

दीक्षा का अथग दूसरे व्यत्मक्त के कानों ंमें मन्त्रोिारण करना निीं ंि ै। यहद राम कृष्ण के हवचारों ंसे प्रभाहवत ि ै, तो राम ने पिले ि ी कृष्ण से दीक्षा ले ली ि ै। यहद एक साधक एक सन्त द्वारा हलत्मखत पुस्तकों ंका अध्ययन करके सन्मागग पर चलता ि ै और उसके उपदेिों ंको आत्मसात् करता ि ै, तो वि सन्त उसका गुरु बन चुका ि ै।

िक्ति-सांचार

आप हिस प्रकार एक सन्तरे को एक व्यत्मक्त को दे सकते ि ैं, उसी प्रकार आध्यात्मिक ि त्मक्त को एक व्यत्मक्त दूसरे व्यत्मक्त में संचाररत कर सकता ि ै। आध्यात्मिक ि त्मक्त को समे्प्रहषत करने की इस हवहध को ि त्मक्त-संचार कि ा ि ाता ि ै। ि त्मक्त-संचार में सद्गुरु के कुछ आध्यात्मिक सुफुरण वसुतुतः हिष्य के मत्मस्तष्क में थथानान्तररत हकये ि ाते ि ैं।

गुरु उस उपयुक्त हिष्य में आध्यात्मिक ि त्मक्त का संचार करता ि ै हिसे वि इसके हलए योग्य समझता ि ै। गुरु हिष्य को दृहष्ट-हनक्षेप, स्पिग, हवचार, ि ब्द अथवा इच्छा–ि त्मक्त से रूपान्तररत कर सकता ि ै।

ि त्मक्त-संचार परम्परागत ि ै। यि एक गुप्त रिस्यमय हवज्ञान ि ै ि ो गुरु से हिष्य को प्रदान हकया ि ाता ि ै।

प्रभु यिुि ने स्पिग द्वारा अपनी आध्यात्मिक ि त्मक्त अपने कुछ हिष्यों ंमें संचाररत की। समथग रामदास के एक हिष्य ने नतगकी की उस पुत्री में अपनी ि त्मक्त संचाररत की ि ो उसके प्रहत अत्यहधक कामातुर थी। हिष्य ने उसकी ओर एक टक देखा और उसे समाहधथथ कर हदया। उसकी काम वासना नष्ट ि ो गयी। वि बहुत ि ी धाहमगक तथा आध्यात्मिक बन गयी। भगवान् कृष्ण ने अन्धे सूरदास के नेत्रों ंको स्पिग हकया, सूरदास की अन्तदृगहष्ट खुल गयी। उन्ें भावसमाहध हुई। गौरांग मिाप्रभु ने अपने स्पिग द्वारा अनेक लोगों ंमें हदव्योन्माद उत्पन्न हकया और उनका मन अपनी ओर पररवहतगत कर हलया। उनके स्पिग से नात्मस्तक आनन्दाहतरेक से गहलयों ंमें नृत्य तथा ि रर-कीतगन करते थे।

हिष्य को गुरु के ि त्मक्त-संचार से ि ी सनुतुष्ट निीं ंि ो ि ाना चाहिए। उसे और अहधक पूणगता तथा उपलत्मब्धयों ंके हलए साधना में कठोर संघषग करना ि ोगा। श्री रामकृष्ण परमिंस ने स्वामी हववेकानन्द को स्पिग हकया, स्वामी हववेकानन्द को समाहध लग गयी। उन्ोंने स्पिग के बाद भी पूणगता की प्रात्मप्त के हलए और सात वषग तक कठोर साधना की।

कृपा ◌िथा स्व-प्रयास

आपके गुरु के चमत्कार के फल-स्वरूप आपको आि-साक्षात्कार निीं ◌ंि◌ो सकता। भगवान् बुद्ध, प्रभु यिीु, रामतीथग — सभी ने साधना की थी। भगवान् कृष्ण अिुगन को वैराग्य तथा अभ्यास हवकहसत करने के हलए किते ि◌ैं। उन्ोंनें अिुगन से यि निीं ◌ंकिा : "मैं तुम्हें अभी मुत्मक्त दे दूँगा।" अतः इस असत् धारणा का पररत्याग कर दें हक आपके गुरु आपको समाहध तथा मुत्मक्त दे देंगे। प्रयास करें, ि◌ुद्ध बनें, ध्यान करें तथा आि-साक्षात्कार करें ।

गुरु कृपा परमावश्यक ि◌ै; हकनु्तु इसका यि तात्पयग निीं ◌ंि◌ै हक हिष्य ि◌ाथ पर ि◌ाथ रख कर बैठा रिे। उसे कठोर पुरुषाथग करना ि◌ोता ि◌ै। सारा कायग हिष्य को करना ि◌ोता ि◌ै। आिकल तो लोग यि चािते ि◌ैं हक वे संन्यासी के कमण्डल से एक बूँद ि◌ल लें और उन्ें तुरन्त समाहध लग ि◌ाये। वे हनमगलीकरण तथा आि-साक्षात्कार के हलए हकसी प्रकार की साधना करने को तैयार निीं ◌ंि◌ैं। वे ि◌ादू की गोली चािते ि◌ैं ि◌ो उन्ें समाहध में धकेल दें। यहद आपको ऐसी भ्रात्मन्त ि◌ै, तो उसे तत्काल त्याग दीहिए।

गुरु तथा ि◌ास्त् आपका मागग-प्रदिगन कर सकते ि◌ैं और आपके सने्दिों ◌ंका हनवारण कर सकते ि◌ैं। अपरोक्षानुभूहत तो आपको स्वयं ि◌ी करनी ि◌ोगी। कुषुहधत व्यत्मक्त को स्वयं ि◌ी भोिन करना ि◌ोगा। हिसे दुःसि खुिली ि◌ो, उसे स्वयं खुिलाना ि◌ोगा।

हनःसने्दि गुरु का आिीवागद सब-कुछ कर सकता ि◌ै; परनु्तु हकसी को उसका आिीवागद कैसे प्राप्त ि◌ो ? गुरु को प्रसन्न करके ि◌ी यि प्राप्त हकया ि◌ा सकता ि◌ै। गुरु अपने हिष्य से तभी प्रसन्न ि◌ोता ि◌ै, ि◌ब उत्तरोक्त उसकी आध्यात्मिक हिक्षाओं ◌ंका हनहवगवाद पालन करता ि◌ै। अतएव गुरु की हिक्षाओं ◌ंका सावधानीपूवगक अनुसरण करें। उसकी हिक्षाओं ◌ंको कायागत्मित करें। तभी आप उसके आिीवागद के पात्र ि◌ोंगें और तभी उसका आिीवागद सब-कुछ कर सकेगा ।

हद्वतीय अध्याय

हिष्य के कतगव्य तथा हविेषाहधकार

यस्य देवे परा भत्मक्तयथा देवे ि◌था गुरौ ।

सिं्यि कडथिा ह्यथाथः प्रकिान्ते महात्मनः ॥

"हिस साधक की परम देव परमिाा में परम भत्मक्त िैं तथा (हिसकी भत्मक्त) हिस प्रकार परमेश्वर में िै उसी प्रकार गुरु में भी िै, उस मिािा पुरुष के हृदय में िी ये रिस्यमय अथग प्रकाहित िोते िैं।"

(श्वेताश्वतर उपहनषद् : ६-२३)

हिष्य वि िै िो गुरु के उपदेिों ंका अक्षरिः तथा भाविः पालन करता और उनकी हिक्षाओं ंका प्रचार तथा प्रसार अपने से कम हवकहसत िीवों ंमें िीवन करता रिता िै।

वास्तहवक हिष्य केवल गुरु के हदव्य स्वरूप से िी सम्बन्ध रखता िै। गुरु िो मानव िोने के नाते कायग करता िै, उसकी वि हचन्ता निीं ंकरता। वि इस ओर पूणग हवस्मरणिील-सा रिता िै। उसके हलए गुरु-गुरु िै भले िी वि लोकाचार के हवपरीत व्यविार करे। वि सदा स्मरण रखे हक सन्त का स्वरूप अतलस्पिग िोता िै। उनके हवषय में अपना कोई मत न बनाइए। अपनी अज्ञानता के अक्षम मापदण्ड से उसके हदव्य स्वरूप को न माहपए । व्यापक दृहष्टकोण से सम्पाहदत अपने गुरु के कायों की आलोचना न कीहिए।

हविुद्ध हिष्यत्व दृहष्ट का उन्मीलन करता िै। यि आध्यात्मिक अहि प्रज्वहलत करता िै। यि प्रसुप्त क्षमताओं ंको उद्बोहधत करता िै। यि आध्यात्मिक पथ की यात्रा में सवागहधक आवश्यक पाथेय िै। गुरु तथा हिष्य एक बन िाते िैं। गुरु हिष्य को आिीवागद देता, उसका पथ-प्रदिगन करता तथा उसे प्रेरणा देता िै। वि उसमें िमक्त-संचार करता िै, उसे रूपान्तररत करता तथा आध्यात्मिक बनाता िै।

गुरु का साडिध्य प्राप्त करने का अडिकारी कौन है

गुरु का साहन्नध्य प्राप्त करने के हलए आपको उपयुक्त अहधकारी िोना चाहिए। हववेक, वैराग्य, िम, दम, उपरहत, गुरु में श्रद्धा, भगवद्-भत्मक्त—इन आवश्यक उपकरणों ंसे सन्नद्ध िो कर साधक को गुरु के समीप िाना चाहिए।

गुरु केवल उसी साधक को आध्यात्मिक उपदेि प्रदान करता िै िो मुमुक्षु िो, िो िास्त्रों ंके आदेिों ंका यथावत् पालन करता िो, हिसने अपनी दुवागसनाओं ंतथा इत्मियों ंका दमन हकया िो, हिसका मन िान्त िो तथा िो करुणा, हवश्व-प्रेम, धैयग, हवनम्रता, हतहतक्षा, सहिष्णुता आहद सद्गुणों ंसे सम्पन्न िो । ब्रह्म के रिस्य की दीक्षा तभी फहलत िोती िै और हिष्य के मन में ज्ञान उत्पन्न करती िै, िब हिष्य का मन हनष्काम बन िाता िै।

गुरु-सेवा

अभीप्सुओं ंको आरम्भ में अपना समूपूणग अवधान गुरु की दीघगकाहलक सेवा द्वारा स्वाथगपरता के हनष्कासन में हनहदगष्ट करना चाहिए। अपने गुरु की सेवा हदव्य भाव से कीहिए। इससे पाथगक्य-रूपी ककगटाबुगद (कैंसर) हवलीन िो िायेगा।

पोत का कप्तान सदा सतकग रिता िै। एक धीवर सदा सतकग रिता िै। िल्य-हचहकत्सक िल्यकमग गृि में सदा सतकग रिता िै। इसी प्रकार हपपासु तथा कुषुहधत हिष्य को अपने गुरु की सेवा में सदा सतकग रिना चाहिए।

गुरु के सेवाथग िीवन यापन करें। आपको अवसरों ंकी ताक में रिना चाहिए। आमन्त्रण की प्रतीक्षा न कीहिए। गुरु-सेवा के हलए अपने को स्वेच्छा से अहपगत कीहिए ।

अपने गुरु की सेवा नम्रतापूवगक, स्ेवेच्छापूवगक, हनहवगवाद, हनरहभमानपूवगक, खिुी से, अथक रूप से तथा प्ेरेमपूवगक कीहिए। आप अपने गुरु की सेवा में हितनी अहधक ित्मक्त व्यय करेंगे, उतनी िी अहधक हदव्य ित्मक्त आपमें प्रवाहित िोगी।

िो गुरु की सेवा करता िै, वि समू्पूणग हवश्व की सेवा करता िै। गुरु की सेवा हबना हकसी स्वाथगपरायण उदे्देश्य से करें। गुरु की सेवा करते समय अपने आन्तररक उदे्देश्य की संवीक्षा करें। गुरु की सेवा नाम, यि, सत्ता, धन आहद की प्रत्यािा के हबना की िानी चाहिए।

गुरु की आज्ञाकाररिा

गुरु के प्रहत श्रद्धा रखने की अपेक्षा उनकी आज्ञाओं ंका पालन करना श्ेरेष्ठतर िै। आज्ञाकाररता एक मूल्यवान् सद्गुण िै; क्योंहक यहद आप आज्ञाकाररता के गुण का हवकास करने का प्रयास करेंगे, तो अि-साक्षात्कार के पथ के कट्टर ितुरु अिं का िनैः–िनैः उनूमूलन िो िायेगा ।

िो हिष्य अपने गुरु की आज्ञाओं ंका पालन करता िै, केवल विी अपनी हनम्न अिा पर आहधपत्य रख सकता िै। आज्ञाकाररता अत्यन्त व्याविाररक, अनन्य तथा सहक्रय अध्यवसायी िोनी चाहिए। गुरु की आज्ञाकाररता न तो टाल-मटोल करती िै और न सन्ेदेि िी प्रकट करती िै। दम्भी हिष्य अपने गुरु की आज्ञाओं ंका पालन भयवि करता िै। सिा हिष्य अपने गुरु की आज्ञाओं ंका पालन प्ेरेम के हलए प्ेरेम के कारण करता िै।

आज्ञा-पालन की हवहध सीत्मखए। उस त्मथथहत में िी आप आदेि दे सकते िैं। हिष्य बनना सीत्मखए, तभी आप गुरु बन सकेंगे।

इस भ्रामक धारणा को त्याग दीहिए हक गुरु की अधीनता स्वीकार करना, उनका आज्ञानुवती िोना तथा उनकी हिक्षाओं ंको कायागत्मित करना दासता की मनोवृहत्त िै। अज्ञानी व्यत्मक्त समझता िै हक हकसी अन्य व्यत्मक्त की अधीनता स्वीकार करना उसकी गररमा के प्रहतकूल तथा उसकी स्वाधीनता के हवपरीत िै। यि एक बडी गम्भीर भूल िै। यहद आप ध्यानपूवगक हचन्तन करें, तो आप देखेंगे हक आपकी वैयत्मक्तक स्वतन्त्रता वास्तव में आपके अपने िी अिं तथा हमथ्याहभमान की हनतान्त घृहणत दासता िै, यि हवषयी मन की तरंग िै। िो अपने अिं तथा मन पर हविय प्राप्त कर लेता िै, वास्तव में विी स्वतन्त्र व्यत्मक्त िै। वि िूरवीर िै। इस हविय को प्राप्त करने के हलए िी व्यत्मक्त गुरु के उिर अध्यिीकृत व्यत्मक्तत्व की अधीनता स्वीकार करता िै। वि इस अधीनता स्वीकरण द्वारा अपने हनम्न अिं को पराहित करता तथा असीम चेतना के आनन्द को प्राप्त करता िै।

डनडिन्त डिष्य

आध्यात्मिक पथ कला की स्नातकोत्तर उपाहध के हलए िोध-प्रबन्ध हलखने िैसा निीं ंिै। यि सवगथा हभन्न प्रणाली िै। इसमें गुरु की सिायता की आवश्यकता प्रहत क्षण रिती िै। इन हदनों ंसाधक अि-हनभगर, उद्धत तथा स्वाग्रिी बन गये िैं। वे गुरु की आज्ञाओं ंको कायागत्मित करने की हचन्ता निीं ंकरते। वे गुरु बनाना निीं ंचािते। वे प्रारम्भ से िी स्वतन्त्रता चािते िैं। वे समझते िैं हक वे तुरीय अवथथा में िैं, िब हक उन्ें आध्यात्मिकता अथवा सत्
का प्रारत्मम्भक ज्ञान भी निीं ंिोता। वे स्ेवेच्छाचाररता अथवा अपनी बात मनवाने और स्ेवेच्छानुसार चलने को स्वतन्त्रता समझने की भूल करते िैं। यि गम्भीर िोचनीय भूल िै। यिी कारण िै हक उनकी उन्नहत निीं ंिोती। वे साधना की क्षमता तथा ईश्वर के अत्मस्तत्व में हवश्वास खो बैठते िैं। वे कश्मीर से गंगोत्तरी तक और गंगोत्तरी से

रामेश्वरम् तक मागग में 'हवचार-सागर' और 'पंचदिी' से कुछ अनापि–नाप बकते तथा िीवनुमुक्त िोने का ढोंग रचते लापरविाी से हनरुद्देश्य ठोकरें खाते हफरते िैं।

समपथण िथा कृपा

यहद आप नल से िल पीना चािते िैं, तो आपको अपने को झुकाना पडेगा। इसी भााँहत यहद आप गुरु के पहवत्र ओष्ठों ंसे प्रवाहित िोने वाली अमरत्वप्रदायक आध्यात्मिक सुधा का पान करना चािते िैं, तो आपको हवनीतता तथा हवनम्रता का मूतग रूप बनना िोगा।

मन की हनम्न प्रकृहत का पूणगतया नवीकरण करना चाहिए। साधक अपने गुरु से किता िै 'मैं योगाभ्यास करना चािता हाँ। "मैं हनहवगकि समाहध में प्रवेि करना चािता हाँ। मैं आपके चरणों ंमें बैठना चािता हाँ। मैंने आपको आि-समपगण कर हदया िै।" परन्तु वि अपनी हनम्न प्रकृहत और स्वभाव को; पुराने चररत्र, व्यविार और आचरण को पररवहतगत करना निीं ंचािता।

व्यत्मक्त को अपने वैयत्मक्तक अिं, पूवागवधाररत धारणाओं,ं हप्रय हवचारों,ं पूवागग्रिों ंतथा स्वाथगमयी अहभरुहचयों ंको त्याग देना चाहिए। ये सब गुरु के आदेिों ंऔर उपदेिों ंके कायागियन में बाधक िैं। अपने हृदय के भेद को अपने गुरु के समुमुख अनावृत कर दें। आप हितना िी अहधक ऐसा करेंगे, उतनी िी सिानुभूहत अथागत् पाप तथा प्रलोभन के हवरुद्ध संघषग में आपको ित्मक्त की प्रात्मप्त िोगी।

गुरु की कृपा की आकांक्षा करने से पूवग साधक को उसका पात्र बनना चाहिए। हदव्य कृपा की आपूहतग तभी िोती िै, िब साधक में सिी हपपासा िो और िब वि उसे ग्रिण करने योग्य िो।

गुरु की कृपा उन्हीं ंपर अवतररत िोती िै, िो उसके प्रहत पूणगरूपेण हवनम्र तथा हनष्ठावान् अनुभव करते िैं। हनष्ठा गुरु में हवश्वास तथा सम्प्रत्यय िै। गुरु साक्ष्य अथवा प्राहधकार के रूप में िो घोहषत करता िै, उसकी सत्यता पर हबना हकसी अन्य साक्ष्य अथवा प्रमाण के दृढ़ हवश्वास करना हनष्ठा िै। हिस हिष्य की गुरु में हनष्ठा िै, वि वाद-हववाद निीं ंकरता, सोच-हवचार निीं ंकरता, तकग-हवतकग निीं ंकरता तथा हचन्तन निीं ंकरता । वि उसकी आज्ञाओं ंका मात्र पालन करता िै।

हिष्य का गुरु के प्रहत आि-समपगण तथा गुरु की कृपा में पारस्पररक सम्बन्ध िै। समपगण गुरु की कृपा को नीचे की ओर आकहषगत करता िै और गुरु-कृपा समपगण को पूणग बनाती िै। गुरु-कृपा साधक में साधना के रूप में कायग करती िै। यहद साधक अपने पथ में दृढ़तापूवगक संलि रिता िै, तो यि गुरु-कृपा िै। यहद प्रलोभन के अभ्याक्रमण करने पर वि प्रहतरोध करता िै, तो यि गुरु कृपा िै। यहद लोग प्रेम तथा सम्मान के साथ उसका स्वागत करते िैं, तो यि गुरु कृपा िै। यहद उसे समूपूणग िारीररक आवश्यकताएाँ सुलभ िैं, तो यि गुरु-कृपा िै। यहद नैराश्य तथा अवसाद के समय उसे प्रोत्सािन तथा बल प्राप्त िोता िै, तो यि गुरु-कृपा िै। यहद वि िरीर चेतना का अहतक्रमण कर िाता िै और अपने आनन्द-स्वरूप में हवश्राम करता िै, तो यि गुरु कृपा िै। प्रत्येक पग पर उसकी कृपा का अनुभव कीहिए तथा उसके प्रहत हनष्कपट तथा सत्यहनष्ठ रहिए।

गुरु की उपदेि-हवहध

गुरु वैयत्मक्तक उदािरण द्वारा हिक्षा देता िै। गुरु का दैनत्मन्दन आचरण सतकग हिष्य के हलए एक िीवन्त आदिग िै। सिे हिष्य के हलए गुरु का िीवन एक िीवन्त धमोपदेि िै। हिष्य अपने गुरु के हनरन्तर सम्पकग द्वारा

उसके सद्गुणों ंको ओसात् करता ि ै। वि ि नैःि–नैः नव-आकार लेता ि ै। छान्दोग्योपहनषद् को पहढ़ए। उसमें आप पायेंगे हक इ प्रिापहत के पास एक सौ एक वषग तक रि े और उनकी अनन्य भाव से सेवा की।

अपने हिष्यों ंकी आध्यात्मिक आवश्यकताओं ंको केवल गुरु ि ी ि ानता ि ै। वि हिष्य की प्रकृहत तथा हवकास के अनुसार उपदिे देता ि ै। इस उपदिे को गुप्त रखना चाहिए। हिष्यों ंमें उसकी पररचचाग गुरु की आलोचना तथा साधना में हिहथलता की ओर ले ि ाती ि ै। आध्यात्मिक प्रगहत निीं ंि ो पाती ि ै। गुरु के उपदिे का अक्षरिः पालन कीहिए। स्मरण रत्मखए हक वि केवल आपके हलए ि ै। अन्य हिष्यों ंने भी गुरूपदिे ग्रिण हकया हुआ ि ै। उन्ें उसका पालन करने दीहिए। आपने ि ो उपदिे प्राप्त हकया ि ै, उसे दूसरों ंपर न थोहपए ।

हिष्य अपनी हनष्ठा की मात्रा के अनुपात में ि ी अपने गुरु से ओसात् अथवा प्राप्त करता ि ै। ि ब गुरु आध्यात्मिक उपदिे देने के हलए हिष्य के पास आता ि ै, उस समय हिष्य यहद ध्यान निीं ंदेता, वि यहद अहभमानी और लापरवाि ि ै, यहद वि अपने हृदय-द्वार में अगगला लगा देता ि ै, तो वि लाभात्मित निीं ंि ोता।

गुरु द्वारा परीक्षा

सद्गुरु बार-बार अनुनय-हवनय करने तथा कठोर परीक्षा लेने के पिात् ि ी अपने हवश्वस्त हिष्यों ंको उपहनषद् के गूढ़ रिस्यों ंको बतलाता ि ै। गुरु कभी-कभी अपने हिष्य को प्रलोहभत कर सकता ि ै; हकन्तु हिष्य को चाहिए हक गुरु में दृढ़ हनष्ठा के द्वारा इसे पार कर ि ाये।

प्राचीन काल में बहुत ि ी कहठन परीक्षाएँ ली ि ाती थीं।ं एक बार गोरखनाथ ने अपने कुछ हिष्यों ंको एक ऊँचे वृक्ष पर चढ़ने तथा उनसे हिर के बल नीचे एक तीक्ष्ण हत्रिूल के ऊपर कूदने के हलए कि ा। अनेक अहवश्वासी हिष्य हनिल खडे रि गये; हकन्तु एक हनष्ठावान् हिष्य तत्काल हवद्युत्-गहत से वृक्ष पर चढ़ गया और विाँ से नीचे हत्रिूल पर कूद गया। गोरखनाथ के अदृश्य ि ाथों ंने उसकी रक्षा की। उसे तत्काल ओ-साक्षात्कार प्राप्त हुआ ।

एक बार वैिाखी के अवसर पर गुरु गोहवन्दहसंि ने अपने हिष्यों ंकी परीक्षा ली। उन्ोंनें कि ा : "मेरे हप्रय हिष्यो ! ि ै कोई ऐसा ि ो धमग के हलए अपने प्राण दे सके ?" सुनते ि ी सभा में सन्नाटा छा गया। परन्तु पिले एक हिष्य खडा ि ो गया। उसे गुरु अपने खेमे में ले गये। विाँ पर एक बकरे की बली दे कर खून से सनी तलवार ले कर बािर आये और बोले— "और कौन धमग के हलए ि ि ी देने के हलए तैयार ि ै ?" तत्पिात् एक के बाद एक चार हिष्यों ंने अपने को प्रस्तुत हकया और चारों ंबार विी हुआ ि ो पिले हिष्य के साथ हुआ था। तदुपरान्त गुरु पाँचों ं हिष्यों ंको खेमे से बािर ले कर आये और उन्ें 'पंच प्यारे' कि कर सम्माहनत हकया।

गुरु हिष्यों ंकी हवहवध प्रकार से परीक्षा लेता ि ै। कुछ हिष्य उन्ें गलत समझते ि ैं और उनमें अपनी हनष्ठा खो बैठते ि ैं। अतः वे लाभात्मित निीं ंि ोते।

चार प्रकार के डिष्य

सवोत्तम हिष्य भूतेल (पेटरोल) अथवा उड्डयन आसव की भाँहत ि ोता ि ै। वि बहुत दूर से गुरु के उपदिे के सुफुहलंग के प्रहत तत्काल प्रहतहक्रया करता ि ै।

हद्वतीय प्रकार का हिष्य कपूगर की भाँहत ि ोता ि ै। एक स्पिग उसकी अन्तराि ा को उदबुद्ध बनाता और उसमें आध्यात्मिकता की अहि प्रज्वहलत करता ि ै।

तृतीय प्रकार का हिष्य कोयले की भााँहत िोता िै। उसमें भाव उत्पन्न करने के हलए गुरु को कठोर श्रम करना पडता िै।

चतुथग प्रकार का हिष्य कदली-स्तम्भ की भााँहत िोता िै। उस पर हकया गया कोई भी प्रयास सफल निीं िोता। गुरु चािे कुछ भी करे, वि भाविून्य तथा हनत्ष्क्रिय बना रिता िै।

सुन्दर ढंग से तैयार की हुई मूहतग अथवा प्रहतमा के हलए दो वस्तुएाँ आवश्यक िोती िैं। एक िै संगमरमर का पूणग अनवद्य सुन्दर प्रस्तर-खण्ड तथा दूसरा िै हनपुण मूहतगकार। सुन्दर प्रहतमा के उत्कीणगन तथा तक्षण के हलए संगमरमर-खण्ड को अप्रहतबन्ध रूप से मूहतगकार के िाथों में रिना चाहिए। इसी भााँहत हिष्य को भी अपने को हनमगल तथा िुद्ध करना और पूणगतया अहनन्द्य संगमरमर का प्रस्तर-खण्ड बनाना चाहिए तथा अपने गुरु के कुिल मागग-हनदेिन में रख कर उसे भगवान् की मूहतग के रूप में उत्कीणगन तथा तक्षण के हलए खुला छोड देना चाहिए।

तृतीय अध्याय

पावन गुरुपूहणगमा-हदवस की अथगवत्ता

िंकरं िंकराचायथ केिवं बादरायणम्।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः॥

"श्री िंकराचायग साक्षात् िंकर िैं और वेदव्यास साक्षात् हवष्णु-रूप िैं। मैं ब्रह्मसूत्र तथा उसके भाष्यकताग—दोनों भगवत्स्वरूपों की बारम्बार वन्दना करता हाँ।"

(गुरुवन्दनम्)

आषाढ़ मास की पूणगमासी गुरुपूहणगमा का अतीव मांगहलक तथा पहवत्र हदवस िै। मिहषग श्री व्यास भगवान् अथवा श्रीकृष्ण द्वैपायन के सूमृहत हदवस इस आषाढ़ पूहणगमा के हदन संन्यासी स्वाध्याय, वेदान्त-हवचार तथा मिहषग व्यास द्वारा रहचत अतीव श्लाघ्य ब्रह्मसूत्रों पर प्रवचन करने के हलए एक स्थान पर हटक कर हनवास करते िैं। श्री वेदव्यास ने चारों वेदों का सम्पादन तथा अठारि पुराणों, मिाभारत और भागवत की रचना कर मानव-हित की

अहवस्मरणीय िाश्वत सेवा की िै। िम उनके प्रहत गम्भीर कृतज्ञता के ऋण से िो ऋणी िैं, उसके पररीोधन का प्रयास उनकी रचनाओं ंके हनरन्तर स्वाध्याय तथा इस कहलयुग में मानवता के पुनरुद्धार के हलए उन्िोंने िो उपदेि हदये िैं, उनके आचरण से कर सकते िैं। सभी साधक तथा भक्त गण इस हदव्य श्रेष्ठ पुरुष के सम्मान में आि के हदन व्यास-पूिा करते िैं, साधक अपने गुरु की पूिा करते िैं; साधु-मिात्माओं ंका सम्मान तथा आहतथ्य-सत्कार हकया िाता िै तथा गृिथथी बडी श्रद्धा तथा हनष्कपटता से दान-पुण्य करते िैं। संन्याहसयों ंका चातुमागस आि के हदन से िी आरम्भ िोता िै। संन्यासी वषाग ऋतु के चार मासों ंमें एक थथान पर रि कर ब्रह्मसूत्रों ंका स्वाध्याय तथा हनहदध्यासन करते िैं।

इस मित्त्वपूणग हदवस की गम्भीर अथगवत्ता पर पूणग ध्यान दें। आषाढ़ पूहणगमा चातुमागस अथवा उत्सुकतापूणग प्रतीहक्षत वषाग के प्रारम्भ की घोषणा करती िै। उष्ण ग्रीष्म ऋतु में कहषगत तथा मेघ के रूप में संहचत िल अब प्रचुर वृहष्ट के रूप में प्रकट िोता िै िो सवगत्र नवि–ीवन के आगमन का प्रारम्भक िै। इसी भााँहत आप सबने भी अपने अध्यवसायी पररीीलन द्वारा हिन हसद्धान्तों ंतथा तत्त्वज्ञान को अपने में संहचत कर रखा िै, गम्भीरतापूवगक उन सबको वास्तहवक कायग रूप में पररणत करना आरम्भ कर दें। आि के हदन से िी व्याविाररक आध्यात्मिक साधना प्रारम्भ करें। आध्यात्मिकता की नवीन लिरें उत्पन्न करें। िो कुछ आपने पढ़ा, सुना, देखा तथा सीखा िै, उस सबको साधना द्वारा हवश्व-प्रेम के अहवरत भावोद्गार, अहवराम प्रेममयी सेवा तथा प्राहणयों ंमें हवरािमान प्रभु की सतत पूिा तथा प्राथगना में पररणत िोने दें।

आि के हदन दूध तथा फल पर हनवागि करें और उग्र िप तथा ध्यान का अभ्यास करें। चातुमागस काल में ब्रह्मसूत्र का स्वाध्याय तथा अपने गुरु-मन्त्र अथवा इष्ट-मन्त्र का कुछ लाख िप का अनुष्ठान अथवा पुरश्ररण करें। इससे आप अत्यहधक लाभात्मित िोंगे।

यि हदव्य गुरु-पूिा-हदवस के रूप में सिे हिष्य के हलए हविुद्ध आनन्द का हदन िै। अपने परम हप्रय गुरु को अपनी श्रद्धांिहल अपगण की प्रहतक्षा से पुलहकत साधक इस अवसर की उत्सुकता तथा श्रद्धा के साथ प्रतीक्षा करते िैं। एकमात्र गुरु िी मोि-पाि को भंग करता तथा साधक को सांसाररक िीवन के बन्धन से मुक्त करता िै। श्रुहत किती िै

यस्य देवे परा भक्तियथा देवे िथा गुरौ ।
सैिये कडथिा ह्यथाथ:प्रकािन्ते महात्मनः ।।

"हिसकी परमेश्वर में परम भत्मक्त िोती िै तथा हिस प्रकार परमेश्वर में िोती िै उसी प्रकार अपने गुरु में िोती िै, उस मिात्मा पुरुष के हृदय में िी ये रिस्यमय अथग प्रकाहित िोते िैं" (श्वेताश्वतर उपहनषद् : ६-२३) । गुरु साक्षात् ब्रह्म िै। वि आपकी अन्तरतम सत्ता से आपका पथ-प्रदिगन करते तथा आपको प्रेरणा देते िैं।

समस्त जगत् को गुरु-स्वरूप देखें

नवीन दृहष्टकोण अपनायें। समस्त िगत् को गुरु-स्वरूप देखें। इस सृहष्ट के प्रत्येक पदाथग में गुरु के मागग-दिगक कर, उद्बोधक वाणी तथा प्रबोधक संस्पिग के दिगन करें। अब समग्र िगत् आपकी पररवहतगत दृहष्ट के समक्ष रूपान्तररत रूप में त्मथथत िोगा । हवराट् गुरु िीवन के सभी मूल्यवान् रिस्यों ंका उद्घाटन कर ज्ञान प्रदान करेंगे। दृश्य प्रकृहत के रूप में अहभव्यक्त परम गुरु आपको िीवन की सवागहधक उपयोगी हिक्षाएाँ प्रदान करेंगे। इन गुरुओं ंके गुरु की, उस गुरु की हिसने अवधूत दत्तात्रेय को भी उपदेि हदया, हनत्य पूिा कीहिए। अपनी उदात्त सहिष्णुता वाली मौन परम सिनिीला पृथ्वी, सेवैत्मच्छक आि-बहलदान करने वाला छायादार फलदायक वृक्ष, नन्िे बीि में धैयगपूवगक िान्त पडा रिने वाला मिान् पीपल, अपने अध्यवसाय से हिलाओं ंको हघस िालने वाली टपकने

वाली बूँदें, सुव्यवत्मथथत समयहनष्ठ तथा हनयमहनष्ठ ग्रि तथा ऋतुएँ— ये सब उनके हलए हदव्य गुरु िैं िो देखता, सुनता तथा ग्रिण करता िै।

ुद्धिा एवां उिडि

ग्रिणिीलता के मूतग रूप बनें। अपनी कुषिु अि भावना से अपने को ररक्त बनायें । प्रकृहत के वक्षथथल में बन्द समस्त हनहध आपकी िो िायेगी। आप अि काल में िी ओयगिनक उन्नहत तथा पूणगता प्राप्त करेंगे। पवगतीय समीर की भाँहत िुद्ध तथा अनासक्त बनें। िैसे सररता अपने लक्ष्य सागर की ओर अनवत्मच्छन्न, अनवरत तथा हनरन्तर प्रवाहित िोती िै, वैसे िी आप अपने िीवन के प्रत्येक क्षण में सत्मिदानन्द की परमावथथा की ओर गहत करके अपने सभी हवचार, वाणी और कमग को केवल चरम लक्ष्य की ओर हनदेहित करें।

चिमा सूयग के चकाचौंधं करने वाले प्रकाि को प्रहतहबत्मम्बत कर चमकाता िै। पूहणगमा का राकेन्दु िी सूयग के तेिस्वी प्रकाि को उसके पूणग वैभव में प्रहतहबत्मम्बत करता िै। वि सूयग को महिमात्मित करता िै। सेवा तथा साधना की अहि द्वारा अपने को िुद्ध बनायें तथा राकेि की भाँहत आत्मा के तेिस्वी प्रकाि को प्रहतहबत्मम्बत करें। प्रकािों के प्रकाि ब्रह्म-वैभव के पूणग परावतगक बहनए। देदीप्यमान सूयों के सूयग, हदव्यता के िीवन-साथी बनने को अपना लक्ष्य बनाइए ।

त्त्विमडस

एकमात्र ब्रह्म अथवा परमात्मा िी सत् िै। वि सबका आत्मा िै। वि सवगस्व िै। वि इस ब्रह्माण्ड का सारतत्त्व िै। वि ऐसा अद्वैत तत्त्व िै िो प्रकृहत की सभी हवहवधताओं तथा हभन्नताओं में कभी भी द्वैत स्वीकार निीं करता। आप विी अमर, सवगव्यापक, सवागनन्दमय ब्रह्म िैं। तत्त्वमहस —तुम विी (ब्रह्म) िो। इसका साक्षात्कार करें तथा मुक्त बनें।

ब्रह्मसूत्र के ये चार मित्त्वपूणग सूत्र स्मरण रखें :

(१) अथातो ब्रह्महिज्ञासा- अब यिाँ से ब्रह्म-हवषयक हवचार आरम्भ हकया िाता िै (१-१-१);
(२) िन्माद्यस्य यतः इस िगत् के िन्माहद हिससे िोते िैं (१-१-२);
(३) िास्त्ि योहनत्वात् — िास्त्र में ब्रह्म को िगत् का कारण बताया गया िै (१-१-३); तथा
(४) तत्तु समियात्—वि ब्रह्म समस्त िगत् में अनुगत िोने से (उपादान भी िै) (१-१-४)।

अब गायें :

जय परम गुरु डिव गुरु हरर गुरु राम ।
जगद्गुरु गुरु सद्गुरु श्याम ।।

श्री व्यास तथा ब्रह्महवद्यागुरुओं को स्मरण करें तथा उनकी पूिा करें। आप सबको उनका आिीवागद प्राप्त िो! आप सब अहवद्या-ग्रत्मन् का उच्छेदन कर भाग्यिाली िीवनुमुक्तों की भाँहत सवगत्र िात्मन्त, आनन्द तथा प्रकाि हवकीणग करते हुए देदीप्यमान िों!

चतुथग अध्याय

मिहषग व्यास तथा हिन्दू–ास्त्ों ंको उनका योगदान

नमोऽसुतु ि व्यास डविालबुद्धे फुल्लारडवन्दायिपत्र नेत्र ।
येन त्वया भारिैलपूणथः प्रज्वाडलिो ज्ञानमयः प्रदीपः ।।

"ि प्रसुफुहटत पद्म-पत्र सदृ नेत्र हवहिष्ट मिामहत व्यास आपको नमस्कार; हिसने मिाभारत सदृ तैल द्वारापररपूणग ज्ञानमय प्रदीपप्रज्वहलत हकयािै।"

(गीताध्यानम्)

प्राचीन काल में िमारे पूवगि, आयागवतग के ऋहषिन व्यासपूहणगमा- िो हक हिन्दू-पंचांग में एक हवहिष्ट तथा मित्त्वपूणग हदवस ि—के उत्तरवती चार मिीनों ंमें तपस्या करने के हलए वन में चले िाया करते थे। इस स्मरणीय हदवस को िी भगवान् के अवतार व्यास िी ने अपने ब्रह्मसूत्रों ंकी रचना आरम्भ की थी। िमारे प्राचीन ऋहष यि तपस्या गुिाओं ंतथा वनों ंमें करते थे; हकन्तु अब समय पररवहतगत िो चला ि और यद्यहप ऐसे गृिथथ तथा रािा अहवद्यमान निीं ंिैं िो ऐसी सिायता तथा सुहवधाएँ िो वे प्रदान कर सकते िैं, चतुथग आश्रहमयों ंके अहधकार में देने को समथग तथा उत्सुक िैं, पर ऐसी सुहवधाएँ अब सवगसुलभ निीं ंरिी िैं। वनों ंएवं गुिाओं ंका थथान उनके गुरुद्वारों ंऔर मठों ंके कुटीरों ंने ले हलया ि। व्यत्मक्त को अब आवश्यकताव‍ि अपने को थथानों ंतथा समयों ंके उपयुक्त बनाना िोगा। थथान तथा पररत्मथथहत के पररवतगन से िमारी मानहसक अहभवृहत्त में इतना अहधक अन्तर निीं ंआने देना चाहिए। चातुमागस व्यासपूहणगमा-हदवस से आरम्भ िोता ि। िास्त् के अनुसार िमसे अपेक्षा की िाती ि हक मि इस हदन व्यास तथा ब्रह्महवद्या-गुरुओं ंकी पूिा करें तथा ब्रह्मसूत्रों ंऔर अन्य आषग ग्रन्ों ंका स्वाध्याय आरम्भ कर दें।

कृष्णदै्वैपायन का जन्म

मिारे पुराण अनेक व्यासों ंका उले्लेख करते िैं और ऐसा कि िाता ि हक द्वापर युग के अन्त में प्रसुतुत व्यास–कृष्णदै्वैपायन—के िन्म लेने से पूवग अट्ठाईस व्यास िो चुके थे। उनका िन्म कुछ हवलक्षण तथा असाधारण पररत्मथथहतयों ंमें पराि़र ऋहष के द्वारा मत्स्य-कन्या सत्यवती से हुआ। पराि़र परम ज्ञानी तथा फहलत ज्योहतष के सविो हविेषज्ञों ंमें से एक थे। उन द्वारा रहचत 'पाराि़र िोरा' आि भी फहलत ज्योहतष का पाठ्य-ग्रन् ि। उन्ोंनें 'पाराि़र सूमृहत' के नाम से एक सूमृहत ग्रन् की भी रचना की। इसे इतना अहधक सम्मान प्राप्त ि हक मानव-हवज्ञान तथा नीहत–ास्त् के वतगमान काहलक लेखक इसका उद्धरण देते िैं। पराि़र को पता चला हक अमुक घहटका में गभगधारण करने वाला बालक मित्तम युगपुरुष के रूप में िन्म लेगा। इतना िी निीं,ं वि साक्षात् भगवान् हवष्णु का अंि िोगा। उस हदन पराि़र ऋहष नौका द्वारा यात्रा कर रिे थे। उन्ोंनें नाहवक को इस आसन्न िुभ घडी के सम्बन्ध में बतलाया। नाहवक के एक हववािोपयुक्त वयस्क पुत्री थी। वि ऋहष की सन्तता तथा मित्ता से प्रभाहवत िो गया। उसने पराि़र को हववाि में अपनी पुत्री भेंट कर दी। इस युग्मन से िमारे व्यास का िन्म हुआ। कि िाता ि हक उनका िन्म स्वयं भगवान् हिव के आिीवागद से हुआ हिन्ोंनें एक उच्च कोहट के ज्ञानी ऋहष का एक हनम्न कुलोत्पन्न कन्या से संयोग को आिीवागद हदया था।

डहन्दू-िास्त्ों ंको उनका महान् योगदान

अत्यिवयस्कावथथा में िी व्यास ने अपने माता-हपता को अपने िीवन के रिस्य से अवगत करा हदया था हक वे वन में िा कर अखण्ड तप करेंगे। उनकी माता प्रथम तो सिमत निीं ंहुई; हकनुतु बाद में उन्ोंनें इस आवश्यक प्रहतबन्ध पर अपनी अनुमहत प्रदान कर दी हक िब कभी उनको उनकी उपत्मथथहत की इच्छा िो, वे उनके समुमुख प्रकट िो िायें। यि स्वयं इस बात को व्यक्त करता िै हक माता-हपता तथा पुत्र हकतने दूरदिी थे। पुराणों ंका कथन िै हक व्यास ने अपने इक्कीसवें गुरु वसुदेव ऋहष से दीक्षा ग्रिण की। उन्ोंनें सनक तथा सनन्दन ऋहषयों ंतथा अन्य लोगों ंसे िास्त्ों ंका अध्ययन हकया। उन्ोंनें मानव हिताथग वेदों ंका वगीकरण हकया तथा िुरुहतयों ंके अिु तथा सिि बोध के हलए ब्रह्मसूत्रों ंकी रचना की। उन्ोंनें मिाभारत का भी प्रणयन हकया हिससे हक त्मस्त्याँ, िूि तथा अन्य अितर बुत्मद्ध वाले लोग परमोत्कृष्ट ज्ञान को सरलतम हवहध से हृदयंगम कर सकें। उन्ोंनें अठारि पुराणों ंकी रचना की तथा उपाख्यानों ंद्वारा उनको समझाने की िैली संथथाहपत की। इस भाँहत उन्ोंनें तीन मागों अथागत् कमग, उपासना तथा ज्ञान की थथापना की। उन्ें यि भी श्रेय प्राप्त िै हक उन्ोंनें अपनी माँ की वंि-परम्परा बनाये रखी तथा धृतराष्टर, पाणुडु तथा हवदुर उनकी सन्तान िैं। व्यास की अत्मन्तम कृहत भागवत िै हिसकी रचना उन्ोंनें देवहषग नारद की प्रेरणा से की। देवहषग नारद एक बार उनके यिाँ आये और उन्ें इसको हलखने के हलए परामिग हदया; क्योंहक इसके हबना वे अपने िीवन-लक्ष्य को न पहुँच पाते।

सभी हिन्दू व्यास को हचरंिीव मानते िैं। वे अब भी अपने भक्तों ंके कल्याण के हलए संसार भर में हवचरण करते रिते िैं और सिे तथा हनष्ठावान् भक्तों ंके समुमुख प्रकट भी िोते िैं। कििा िाता िै हक िगद्गुरु िंकराचायग ने मण्डन हमश्र के घर में उनके दिगन हकये तथा वे अन्य अनेक लोगों ंके समुमुख भी प्रकट हुए। इस भाँहत संक्षेप में किें तो वे संसार के कल्याण के हलए रिते िैं। आइए, िम सब प्राथगना करें हक िम सब पर तथा समग्र हवश्व पर उनका आिीवागद रिे !

ब्रह्मसूत्र िथा उन पर डवडवि भाष्य

प्रत्येक व्यत्मक्त को यि सुहवहदत िै हक िमारे पूवगिों ंने छि मित्त्वपूणग िास्त्ों ंका हवकास हकया, हिन्ें षि्दिगन अथागत् सांख्य, योग, न्याय, वैिेहषक, पूवगमीमांसा तथा उत्तरमीमांसा अथागत् वेदान्त किते िैं। प्रत्येक दिगन के हवचारों ंमें सूक्ष्म भेद िै। कालान्तर में ये हवचार अपररचालनीय िो चले, हिससे उन्ें सुव्यवत्मथथत करने के हलए सूत्रों ंका आहवभागव हुआ । लघु सूत्मक्तयों ंमें, हिन्ें संसूकृत में सूत्र किते िैं, हनबन्ध हलखे गये। सूत्र का अथग िै सूमृहत-संकेत अथवा प्रत्येक हवषय पर लम्बी पररचचागओं ंके सिायक। पद्मपुराण में सूत्र िब्द की पररभाषा दी गयी

िै हक सूत्र संहक्षप्त तथा असत्मन्दग्ध िोना चाहिए; हकनुतु संहक्षप्तता इस सीमा तक लायी गयी हक सूत्र अबोधगम्य िो

गया। यि बात ब्रह्मसूत्रों ंके हवषय में हविेष सत्य िै। आि िम एक िी सूत्र के दिगनों ंप्रकार से भाष्य करते हुए पाते िैं। व्यास अथवा बादरायण (यि व्यास का एक अहतररक्त नाम था) कृत ब्रह्मसूत्र 'वेदान्तसूत्र' के नाम से भी प्रहसद्ध िै; क्योंहक उनमें केवल वेदान्त पर िी हवचार हकया गया िै। वे चार अध्यायों ंमें हवभाहित िैं हिनमें से प्रत्येक को पुनः चार पादों ंमें उपहवभाहित हकया गया िै। यि ध्यान देने योग्य रोचक बात िै हक उनका आरम्भ 'अथातो ब्रह्महिज्ञासा' सूत्र से और अन्त 'अनावृहत्तः िब्दादनावृहत्तः िब्दात्' सूत्र से िोता िै, हिन्ें एक-साथ हमला कर पढ़ने पर अथग िोता िै : "ब्रह्म के स्वरूप की हिज्ञासा", "वापस निीं ंआता िै।" अथागत् "उस मागग से चल कर व्यत्मक्त अमरत्व प्राप्त करता िै" और "वि हफर संसार में वापस निीं ंआता।" इन सूत्रों ंके कृहतत्व के सम्बन्ध में, परम्परागत हवश्वास इसे व्यास का िी मानता िै। िंकराचायग अपने भाष्य में व्यास का उल्लेख गीता तथा मिाभारत के रचहयता के रूप में तथा बादरायण का ब्रह्मसूत्रों ंके रचहयता के रूप में करते िैं। वाचस्पहत, आनन्दहगरर तथा उनके अन्य अनुयायी दोनों ंको एक िी व्यत्मक्त मानते िैं, िब हक रामानुि तथा अन्य इसके कृहतत्व को व्यास का िी मानते िैं। ब्रह्मसूत्रों ंपर प्राचीनतम भाष्य िंकराचायग का िै। बाद में वल्लभ, रामानुि, हनम्बाकग, मध्व तथा अन्य

लोगों ंने उनका अनुसरण हकया और अपने-अपने वाद थथाहपत हकये। उनमें से मुख्य, हिनकी संख्या, िैसा हक ऊपर उल्लेख हकया िा चुका िै, पाँच िै, इन दो हवषयों ंमें प्रायः सिमत िैं। अथागत् (१) ब्रह्म इस िगत् का कारण िै, और (२) ब्रह्मज्ञान मोक्ष प्राप्त कराता िै। हकन्तु ब्रह्म के स्वरूप, िीविा के तथा परमािा के सम्बन्ध तथा मुक्तिा की दिा के हवषय में उनमें परस्पर मतभेद िैं। उनमें से कुछ लोगों ंके अनुसार मोक्ष-प्राप्तप्त का मुख्य साधन भक्ति िै, ज्ञान निीं ंिैसा हक िंकराचायग ने प्रहतपाहदत हकया िै।

व्यास का िीवन आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसार िेतु िन्म ग्रिण करने वाले व्यक्ति का अनुपम उदािरण िै। उनकी कृहतयाँ आि भी िमें तथा समग्र हवश्व को प्रेरणा प्रदान करती िैं। अच्छा िो हक िम उनकी कृहतयों ंकी भावनाओं ंके अनुरूप िीवन-यापन करें।

पंचम अध्याय

श्री दहक्षणामूहतग

डनिये सवथडवद्यानां डभषजे भवरोडगनाम् ।
गुरवे सवथलोकानां श्री दडक्षणामूथये नमः ।।

" श्री दहक्षणामूहतग को नमस्कारिैिोसबहवद्याओंकेआगारिैंभवरोगसेपीहडत सभी लोगों ंके हलए वैद्यतथा सभी केगुरुिैं। "

(गुरुगीता)

भगवान् हिव पाश्वग में पावगती देवी के साथ कैलास पवगत पर महणयों ंसे रमणीय ढंग से सुसत्मज्जत मण्डप में आसीन थे। इस समय देवी ने भगवान् की पूिा की तथा दक्ष-पुत्री िोने के कारण उनका पिले िो दाक्षायणी नाम पडा था, उसे पररवहतगत करने की उनसे प्राथगना की। दक्ष को भगवान् हिव ने उनके अनादर तथा दपग के कारण मार िाला था। भगवान् हिव ने देवी की यि प्राथगना सुन कर उन्ें आदेि हदया हक वि सन्तान प्राप्त्यथग उग्र तप कर रिे पवगतराि की कन्या के रूप में िन्म ग्रिण करें। उन्ोंने पावगती से यि भी किा हक वे उनके साथ हववाि करने उनके पास पधारेंगे। इस प्रकार आज्ञा पा कर पावगती देवी ने पवगतराि की पुत्री के रूप में िन्म ग्रिण हकया और भगवान् हिव की वधू बनने के हलए अपने पाँचवें वषग की वय में कठोर तप करना आरम्भ कर हदया।

देवी की अनुपत्मथथहत से िब भगवान् हिव िी अकेले थे, तब ब्रह्मा के पुत्र—सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार भगवान् हिव िी के दिगनाथग पधारे और उन्ें दण्डवत् प्रणाम हकया। उन्ोंने भगवान् से उन्ें अहवद्या को हवदूररत करने तथा मोक्ष-प्राप्तप्त की हवहध की हिक्षा देने की प्राथगना की। उन्ोंने बतलाया हक िास्त्-ग्रन्ों ंके हवहवध पररिीलन के बाविूद भी उन्ें मानहसक िात्मन्त प्राप्त निीं ंहुई तथा उन्ें अन्तरथथ रिस्य को िानने की आवश्यकता िै हिसको िान लेने पर वे मोक्ष प्राप्त कर सकें।

भगवान् हिव ने ऋहषयों ंकी प्राथगना सुन कर दहक्षणामूहतग का रूप धारण कर हलया और परम गुरु के रूप में रि कर मौन धारण तथा अपने िाथ से हचन्मुिा-प्रदिगन द्वारा उन्ें अन्तरथथ रिस्य का ज्ञान देना प्रारम्भ कर

हदया। भगवान् द्वारा प्रदहिगत हवहध से ऋहषयों ने ध्यान करना आरम्भ कर हदया तथा अवणगनीय और असीम आनन्द की अवथथा प्राप्त की।

इस भााँहत भगवान् हिव दहक्षणामूहतग-नाम से प्रहसद्ध हुए। भगवान् दहक्षणामूहतग का आिीवागद िम सब पर िो ! आप सब उनकी कृपा से गिरा अवगिान करें तथा िाश्वत िात्मन्त और आनन्द का उपभोग करें!

ॐ िात्मन्तः ! िात्मन्तः !! िात्मन्तः !!!

षष्ठ अध्याय

भगवान् दत्तात्रेय तथा उनके चौबीस गुरु

आदौ ब्रह्मा मध्ेये डवषुणुरन्ेते देवः सदाडिवः
मूडिथत्रयस्वरूपाय दत्तात्रेयाय नमोऽसुतु िे ।
ब्रह्मज्ञानमयी मुद्रा वसे्त् चाकािभूिले
प्रज्ञानघनबोिाय दत्तात्रेयाय नमोऽसुतु िे ॥

"भगवान् दत्तात्रेय को नमस्कार िै िो हत्रमूहतगस्वरूप िैं, िो आहद में ब्रह्मा, मध्य में हवषुणु तथा अन्त में सदाहिव िैं । भगवान् दत्तात्रेय को बारम्बार नमस्कार िै हिनकी मुिा ब्रह्मज्ञान िै, हिनके वस्त् आकाि तथा भूतल िैं तथा िो साकारप्रज्ञानघन िैं। '

(श्री िंकराचायग)

अनसूया को प्रायः सतीत्व के प्रहतमान के रूप में उद्धृत हकया िाता िै। वे मिहषग अहत्र की पत्नी थीं, िो एक मिान् ऋहष तथा सप्तहषगयों में से एक थे। वे पाहतव्रत-धमग में सुप्रहतहित थीं तथा अपने पहत की भाव-प्रवण सेवा करती थीं। उन्होंने ब्रह्मा, हवषुणु तथा हिव-तुल्य पुत्र प्राप्त करने के हलए सुदीघग काल तक कठोर तपस्या की।

एक बार नारद िी चने के दाने के बराबर लोिे की एक छोटी गोली ले कर सरस्वती देवी के पास गये और उनसे किा: "िे सरस्वती देवी! कृपया इस लोिे की गोली को भून दीहिए। मैं यात्रा-काल में इस लोिे के चने को खाऊाँगा।" सरस्वती देवी िाँस पडी और किा: "िे नारद ऋहष! यि लोिे की गोली क्योंकर भूनी िा सकती िै? यि कैसे खायी िा सकती िै?" तत्पश्चात् नारद िी मिालक्ष्मी तथा पावगती देवी के पास गये और उनसे लोिे की गोली को भूनने की प्राथगना की। वे भी नारद ऋहष पर िाँस पडी। तब नारद िी ने किा "िे देहवयो देखें, मैं इसे अहत्र मिहषग की पत्नी अनसूया से भुनवाऊाँगा। वे परम पहतव्रता िैं तथा भूलोक में रिती िैं।"

तब नारद िी अनसूया के पास आये और उनसे लोिे के चने को भूनने की प्राथगना की। अनसूया से लोिे की गोली को एक कडािी में िाल हदया, अपने पहतदेव के रूप का ध्यान हकया तथा उनके चरणोदक की कुछ बूाँदें लोिे की गोली के ऊपर हछडक दीं। वि तुरन्त भुन गयी। नारद सरस्वती, लक्ष्मी तथा पावगती के पास गये, उनके सम्मुख भुने हुए लोिे के चने खाये तथा उसमें से थोडा-सा उन्हें भी हदया। उन्होंने अनसूया के िील तथा सतीत्व की भूरर-भूरर प्रिंसा की। तब नारद ने ब्रह्मा, हवषुणु तथा हिव-तुल्य पुत्रों को िन्म देने की अनसूया की इच्छा पूणग करने का हनश्चय हकया।

उन्ोंनें सरस्वती, लक्ष्मी तथा पावगती से किा: “यहद आप सबने श्रद्धा, ि्िुद्ध हृदय तथा भत्मक्तपूवगक अपने-अपने पहतयों ंकी सेवा की िोती, तो आप भी लोि की गोली को भून सकती थीं।ं अपने पहतयों ंसे अनसूया के पाहतव्रत की परीक्षा लेने की प्राथगना कीहिए।"

तब सरस्वती, लक्ष्मी और पावगती ने अपने-अपने पहतयों ंसे अहत्र मिहषग की पत्नी अनसूया के पाहतव्रत धमग की परीक्षा लेने तथा उनसे हनवागण हभक्षा-हनवथथा में दान लेने के हलए प्राथगना की।

हत्रमूहतगयों ंको ज्ञान दृहष्ट से नारद की करतूत तथा अनसूया के तप और मनोकामना का पता चल गया। वे सिमत िो गये। हत्रमूहतगयों ंने संन्यासी का वेि धारण हकया, अनसूया के समुमुख प्रकट हुए तथा उनसे उन्ें हनवागण हभक्षा देने की याचना की। अनसूया बडे धमगसंकट में पड 'गयीं।ं वे हभक्ुषुओं ंको 'न' निीं ंकि सकती थीं।ं उन्ें अपने पाहतव्रत धमग का पालन भी करना था। उन्ोंनें अपने पहत के रूप का ध्यान हकया, उनके चरणों ंकी िरण ली और अपने पहत के चरणोदक को तीनों ंसंन्याहसयों ंके ऊपर हछडक हदया। उस चरणामृत के प्रताप के कारण हत्रमूहतग तीन ििुओं ंमें रूपान्तररत िो गये। उसी समय अनसूया के स्तनों ंमें दुग्ध भर आया। उन्ोंनें इन ििुओं ंको अपना िी ििु समझा और हनवथथा में उन्ें दुग्ध-पान कराया और उन्ें पालने में सुला हदया। वे अपने पहत, िो स्नानाथग बािर गये थे, के आगमन की उतुसुकतापूवगक प्रतीक्षा करने लगीं।ं

अहत्र ऋहष ज्यों ंिी घर वापस आये, अनसूया ने उनकी अनुपत्मथथहत में िो-कुछ घहटत हुआ था, सब अपने पहत से कि सुनाया, उनके चरणों ंमें तीनों ंििुओं ंको रख हदया तथा उनकी (ऋहष की) पूिा की। हकन्ुतु अहत्र को अपनी हदव्य दृहष्ट से ये सब बातें पिले िी ज्ञात िो चुकी थीं।ं उन्ोंनें तीनों ंििुओं ंका आहलंगन हकया। वे तीनों ं ििु दो पैर, एक धड, तीन हिर तथा छि िाथों ंसे युक्त एक ििु बन गया। अहत्र ऋहष ने अपनी पत्नी को आिीवागद हदया और उसे अवगत हकया हक उनकी कामना की तुहष्ट के हलए हत्रमूहतगयों ंने िी तीन ििुओं ंका रूप धारण कर रखा िै।

नारद ब्रह्मलोक, वैकुण्ठ और कैलास गये तथा सरस्वती, लक्ष्मी और पावगती को सूहचत हकया हक उनके पहतयों ंने िब अनसूया से हनवागण-हभक्षा माँगी, तो वे उनके पाहतव्रत-धमग की ित्मक्त से ििुओं ंके रूप में पररवहतगत िो गये िैं और यहद वे अहत्र से भतृग-हभक्षा निीं ंमाँगेंगीं,ं तो वे वापस निीं ंआयेंगे। सरस्वती, लक्ष्मी तथा पावगती ने सामान्य त्मस्त्यों ंका रूप धारण हकया, अहत्र के समुमुख प्रकट हुईं और भतृग-हभक्षा की याचना की : “िे ऋहष! कृपया िमारे पहतयों ंको िमें वापस दें।" अहत्र ने तीनों ंदेहवयों ंका यथोहचत सम्मान हकया तथा करबद्ध िो कर उनसे प्राथगना की हक उनकी तथा अनसूया की इच्छा पूणग िो! अब हत्रमूहतग अहत्र के समक्ष अपने वास्तहवक रूप में प्रकट हुए और किा: “आपके कथनानुसार यि बालक एक मिान् ऋहष और अनसूया के इच्छानुसार िमारे समान िोगा। इस बालक का नाम दत्तात्ेरय िोगा।" तत्पिात् वे अन्तधागन िो गये।

दत्तात्ेरय प्रौढ़ हुए। क्योंहक उनमें हत्रमूहतगयों ंके अंि थे और वे एक मिान् ज्ञानी थे, इसहलए सभी ऋहष तथा तपस्वी उनकी पूिा करते थे। वे सौम्य, िान्त तथा स्ेनिी थे। उनके पीछे लोगों ंकी बहुत बडी भीड सदा लगी रिती थी। दत्तात्ेरय उनसे अपना पीछा छुडाना चािते थे; हकन्ुतु उनके सभी प्रयास हवफल रिे। एक बार िब वे अनेक लोगों ंसे हघरे थे, वे स्नानाथग एक नदी में प्रवेि कर गये और उसमें से तीन हदन तक बािर निीं ंहनकले। वे िल के अन्दर समाहधथथ िो गये। तीसरे हदन िब वे बािर आये, तो उन्ोंनें देखा हक लोग उनके वापस आने की प्रतीक्षा में तब भी सररता-तट पर बैठे हुए थे।

वे इस उपाय से लोगों ंसे अपना हपण्ड छुडाने में सफल न हुए। उन्ोंनें अन्य हवहध अपनायी। उन्ोंनें अपनी योगि–त्मक्त से एक सौन्दयगवती हकिोरी तथा एक बोतल सुरा उत्पन्न की। वे एक िाथ से उस हकिोरी को

तथा दूसरे िाथ में सुरा की बोतल पकडे हुए िल से बिार हनकले। लोगों ंने समझा हक दत्तात्रेय योग-भ्रष्ट िो गये िैं; अतः वे उन्ें छोड कर चले गये ।

दत्तात्रेय ने अपनी सभी वैयत्मक्तक सम्पहत्त को, यिााँ तक हक उनके पास िो नाम मात्र का वस्त् था, उसे भी त्याग हदया और अन्त में अवधूत बन गये। वे वेदान्त के सत्यों ंकी हिक्षा तथा उपदेि देने बिार हनकल पडे। दत्तात्रेय ने 'अवधूत-गीता' नामक अपनी गीता की हिक्षा भगवान् सुब्रह्मण्यम् या काहतगकेय को दी। यि बहुत िी उपयोगी ग्रन् िै। इसमें वेदान्त के सत्य तथा रिस्य और आत्मा की अपरोक्षानुभूहत अन्तहवगष्ट िै।

एक बार िब दत्तात्रेय वन में आनन्दपूवगक हवचरण कर रिे थे, उनकी भेंट रािा यदु से हुई। यदु ने उन्ें अत्यन्त आनत्मन्दत देख कर उनसे उनके आनन्द का रिस्य तथा उनके गुरु का नाम िानना चािा। दत्तात्रेय ने किा : "आत्मा िी मेरा गुरु िै, तथाहप मैंने चौबीस व्यत्मक्तयों ंसे हिक्षा ग्रिण की अतः से मेरे गुरु िैं।"

तब दत्तात्रेय िी ने अपने चौबीस गुरुओं ंके नाम तथा उनमें से प्रत्येक से ग्रिण की हुई हिक्षाओं ंका उल्लेख हकया।

मेरे चौबीस गुरुओं ंके नाम िैं:

(१) पृथ्वी, (२) िल, (३) वायु, (४) अहग्न, (५) आकाि, (६) चिमा, (७) सूयग, (८) कपोत, (९) अिगर, (१०) समुि, (११) पतंग, (१२) मधुमक्खी, (१३) मिु हनकालने वाला, (१४) िाथी, (१५) िररन, (१६) मछली, (१७) हपंगला वेश्या, (१८) कुरर पक्षी, (१९) चालक, (२०) कुमारी कन्या, (२१) सपग, (२२) बाण बनाने वाला, (२३) मकडी तथा (२४) भृंगी कीट।

(१) मैंने पृथ्वी से धैयग तथा परोपकार की हिक्षा ली िै; क्योंहंक वि लोगों ंद्वारा अपने ऊपर हकये गये सभी आघातों ंको सिन करती िै और बदले में िस्य, फल आहद उत्पन्न कर उनका हित करती िै।

(२) िल से मैंने पहवत्रता की हिक्षा ली िै। िैसे िुद्ध िल दूसरों ंको स्वच्छ बनाता िै वैसे िी हनष्कल्मष तथा स्वाथग, काम, क्रोध, लोभ, अिंकार आहद से मुक्त सन्त अपने सम्पकग में आने वाले सभी को पहवत्र बनाता िै।

(३) वायु सदा अनेक पदाथों से िो कर प्रवाहित िोता रिता िै, परन्तु वि उनमें से हकसी से भी आसक्त निीं ंिोता; अतः मैंने वायु से अनासक्त रिने की हिक्षा ग्रिण की िै, यद्यहप मैं इस संसार में अनेक लोगों ंके मध्य में हवचरण करता रिता हाँ।

(४) िैसे अहग्न प्रज्वहलत िोने पर ज्योहतमगय िोती िै, वैसे िी सन्त पुरुष को अपने ज्ञान तथा तपस्या की आभा से देदीप्यमान िोना चाहिए।

(५) वायु, तारे, मेघ आहद सभी आकाि में अन्तहवगष्ट िैं; हकन्तु आकाि इनमें से हकसी के भी सम्पकग में निीं ंआता िै। मैंने आकाि से यि हिक्षा ली िै हक आत्मा सवगव्यापक िै, तथाहप वि हकसी पदाथग के सम्पकग में निीं ंआता िै।

(६) यद्यहप चिमा पर पडने वाले पृथ्वी के पररवती प्रहतहबम्ब के कारण वि घटता-बढ़ता-सा प्रतीत िोता िै; पर वि सदा पूणग िी रिता िै। मैंने चिमा से यि हिक्षा ग्रिण की िै हक आत्मा सदा िी पूणग तथा हनहवगकार िै। केवल उपाहधयााँ िी उसे आच्छाहदत करती िैं।

(७) िल के हवहभन्न पात्रों ंमें प्रहतहबत्मम्बत हुआ सूयग अनेक प्रहतहबम्बों ंके रूप में दृहष्टगोचर िोता िै, वैसे िी ब्रह्म भी मन द्वारा प्रहतहबत्मम्बत उपाहधयों ं(िरीरों)ं के कारण हभन्न-हभन्न हदखलायी पडता िै। यि हिक्षा मैंने सूयग से
ग्रिण की।
(८) एक बार मैंने एक कपोत दम्पहत को अपने बिों ंके साथ देखा । व्याध ने िाल फैलाया और बिों ं
को पकड हलया। कपोती को अपने बिों ंमें बहुत राग था। वि अब िीना निीं ंचािती थी, अतः वि िाल में िा
हगरी और पकडी गयी। कपोत कपोती पर अनुरक्त था, अतः वि भी िाल में िा हगरा और पकडा गया। इन सबसे
मैंने यि हिक्षा ली हक राग िी बन्धन का कारण िै।

(९) अिगर भोिन के हलए कोई चेष्टा निीं ंकरता िै। िो कुछ उसे स्वतः िी प्राप्त िो िाता िै, उससे
सन्तुष्ट रि कर वि एक थथान पर पडा रिता िै। इससे मैंने हिक्षा ली हक भोिन के हवषय में उदासीन रिे और •
प्रारब्ध से प्राप्त भोिन से सन्तुष्ट रिे (अिगर-वृहत्त) ।

(१०) िैसे समुि में सैकडों ंनहदयााँ हगरती िैं, हकन्तु वि उनसे अप्रभाहवत रिता िै; वैसे िी सुधी व्यत्मक्त को सभी प्रकार के प्रलोभनों,ं कहठनाइयों ंतथा कष्टों ंमें िान्त रिना चाहिए। यि हिक्षा मैंने समुि से ग्रिण की।

(११) िैसे पतंग अहि की चमक पर मोहित िो कर उसमें कूद पडता िै और िल मरता िै, वैसे िी
वासनामय पुरुष िो सुन्दरी हकिोरी के प्रेम-पाि में पडता िै, िोक को प्राप्त िोता िै। मैंने पतंग से दृगेत्मिय को
हनयत्मन्त्रत करने तथा मन को आत्मा पर केत्मित करने की हिक्षा ली िै।

(१२) िैसे मधुमक्खी एक िी पुष्प से रस न चूस कर हवहभन्न पुष्पों ंसे रस चूसती िै, वैसे िी मैं भी थोडी हभक्षा एक घर से और थोडी हभक्षा दूसरे घर से ले कर अपनी क्षुधा िान्त करता हाँ (मधुकरी-हभक्षा अथवा मधुकरी-वृहत्त)। मैं गृिथथ के हलए भार निीं ंबनता हाँ।

(१३) मधुमत्मक्खयााँ बहुत कष्ट उठा कर मधु-संचय करती िैं, हकन्तु हिद हनकालने वाला आता िै और
बडी सरलतापूवगक मधु ले कर चलता बनता िै; वैसे िी लोग बडी कहठनाई से धनाहद का संचय करते िैं, हकन्तु
िब काल आ कर उन पर अहधकार करता िै तो उन्ें उन सबको तत्काल छोड कर प्रयाण कर िाना िोता िै।
इससे मैंने यि हिक्षा ग्रिण की हक पदाथों का संग्रि व्यथग िी िै।

(१४) िाथी कागि की िहथनी को देख कर कामान्ध िो हतनके से आच्छाहदत गतग में िा हगरता िै। वि
पकडा िाता िै, बााँधा िाता िै तथा अंकुि के द्वारा उत्पीहडत िोता िै। वैसे िी कामुक व्यत्मक्त त्मस्त्यों ंके िाल में
पड कर दुःख भोगते िैं। अतएव काम-वासना को नष्ट करना चाहिए। यि हिक्षा मैंने िाथी से ग्रिण की।

(१५) संगीत से राग िोने के कारण िररन व्याध के प्रलोभन में आ कर िाल में बाँध िाता िै। इसी भााँहत
व्यत्मक्त दुिररत्र त्मस्त्यों ंके गीत से आकहषगत िो कर हवनाि को प्राप्त िोता िै। व्यत्मक्त को कामुक गीत कभी भी
निीं ंसुनना चाहिए। यि हिक्षा मैंने िररन से ली िै।

(१६) िैसे भोिन की लोभी मछली सरलता से चारे का हिकार बनती िै वैसे िी िो मनुष्य स्वादलोलुप
और अपनी रसनेत्मिय के विीभूत िोता िै, वि अपनी स्वतन्त्रता खो बैठता िै और अनायास िी हवनाि को प्राप्त
िोता िै। अतएव भोिन की लोलुपता को नष्ट करना चाहिए। यि हिक्षा मैंने मछली से ग्रिण की िै।

(१७) हविदे नगरी में हपंगला नाम की एक वैश्या रिती थी। एक राहत्र वि ग्रािकों ंकी प्रतीक्षा करते-करते ऊब गयी। वि हनरािो गयी। तब उसके पास िो कुछ था, उसने उसी से सन्तोष कर हलया और गम्भीर हनिा में सो गयी। मैंने उस पहतता स्त्री से यि हिक्षा ली हक आिा का त्याग सन्तोषप्रदायक िोता िै।

(१८) एक कुरर पक्षी अपने चोंचं में मांस का टुकडा हलये दूसरे पहक्षयों ंने उसका पीछा हकया और उसे चोंचं से मारने लगे। उस कुरर हुए था। पक्षी ने अपनी चोंचं से मांस का टुकडा फेंक हदया, तभी उसे िात्मन्त तथा हवश्रात्मन्त हमली। मैंने इससे यि हिक्षा ली हक सांसाररक मनुष्य िब ऐत्मिक सुखों ंके पीछे दौडता िै, तो उसे सभी प्रकार के कष्ट तथा दुःख झेलने पडते िैं; परन्तुु िब वि ऐत्मिक सुखों ंको त्याग देता िै, तो वि उस कुरर पक्षी की तरि सुखी िो िाता िै।

(११) स्तन-पान करने वाला ितुु सभी हचन्ताओं,ं हचत्तोद्‌वेगों ंतथा आकुलताओं ंसे मुक्त तथा सदा आनन्द-मि रिता िै। मैंने ितुु से आनन्दमनता के गुण की हिक्षा ग्रिण की।

(२०) एक हकिोरी कन्या के माता-हपता उसके हलए उपयुक्त वर खोिने के हलए बािर गये हुए थे। वि हकिोरी घर में अकेली थी। उसी उद्‌देश्य से माता-हपता की अनुपत्मथथहत में, उसके हववाि के प्रस्ताव के सन्दभग में उसे वरण करने के हलए कई लोग उसके घर आये। उसने स्वयं उनका आहतथ्य सत्कार हकया। वि धान कूटने के हलए घर के अन्दर गयी। धान कूटते समय उसकी दोनों ंकलाइयों ंमें पडी िूहडयााँ िोर-िोर से बि रिी थीं।ं बुत्मद्धमती कुमारी ने सोचा : "चूहडयों ंके िब्द से लोगों ंको पता लग िायेगा हक मैं स्वयं धान कूट रिी हाँ और यि हक मेरा पररवार इतना हनधगन िै हक वि इस कायग को करने के हलए दूसरे लोगों ंको निीं ंरख सकता। दोनों ंिाथों ंमें दो-दो चूहडयों ंको छोड कर मुझे अपनी िेष चूहडयााँ तोड िालनी चाहिए।" तदनुसार उसने प्रत्येक िाथ में दो-दो चूहडयााँ छोड कर सभी चूहडयााँ तोड िालीं।ं वे दो-दो चूहडयााँ भी बहुत बिती थीं।ं तब उसने एक-एक चूडी और तोड दी। यद्यहप वि धान कूटती रिी, पर तब हकसी प्रकार की आवाि निीं ंहुई। मैंने उस कुमारी के अनुभव से हनम्न हिक्षा ग्रिण की : िब बहुत लोग एक-साथ रिते िैं तब मतभेद, हवक्षोभ, हववाद तथा कलि िोता िै और दो व्यत्मक्त भी साथ रिते िैं तब भी अनावश्यक बातचीत तथा अनबन तो िोती िी िै। तपस्वी अथवा संन्यासी को हनिगन थथान में अकेले रिना चाहिए।

(२१) सााँप अपना हबल निीं ंबनाता। वि दूसरों ंके बनाये हुए हबल में रिता िै। उसी भााँहत तपस्वी अथवा संन्यासी को अपने हलए घर निीं ंबनाना चाहिए। उसे दूसरों ंकी बनायी हुई गुिाओं ंअथवा मठों ंमें रिना चाहिए। मैंने सपग से यिी हिक्षा ली िै।

(२२) एक बार एक बाण बनाने वाला कारीगर बाण को तीक्ष्ण तथा सीधा करने में िब तन्मय था, तब उसकी दुकान के सामने से िी दल-बल के साथ रािा की सवारी हनकल गयी। कुछ समय पिात्‌ एक व्यत्मक्त ने कारीगर के पास आ कर पूछा हक क्या रािा उसकी दुकान के पास से गये िैं? कारीगर ने उत्तर हदया हक उसने कुछ निीं ंदेखा। वस्तुुतः कारीगर का मन अपने काम में पूणगतः तल्लीन था। इससे उसे यि पता निीं ंचला हक.. उसकी दुकान के सामने से कौन िा रिा िै। मैंने कारीगर से मन की गिन एकाग्रता के गुण की हिक्षा ग्रिण की ै।

(२३) मकडी अपने मुख से लम्बा सूत्र हनकालती िै और उससे िाला बनाती िै। वि अपने िी बनाये हुए िाल में फाँस िाती िै। इसी प्रकार मनुष्य अपने िी हवचारों ंका िाल बुनता िै और उसमें उलझ िाता िै। मकडी से मैंने यि हिक्षा ली हक ज्ञानी पुरुष को सांसाररक हवचारों ंको त्याग कर केवल ब्रह्म-हचन्तन करना चाहिए।

(२४) भृंगी एक कीडे को पकड कर अपने घर में बन्द कर देता िै और उसको िंक मारता िै। बेचारा कीडा भृंगी के लौटने और उसके दंि की आिंका से सदैव उस भृंगी का हचन्तन करता रिता िै और स्वयं भृंगी

बन िाता ि ै। मनुष्य हिस रूप का बारम्बार हचन्तन करता ि ै, वि काल-क्रम से उसी वसुतु के स्वरूप को प्राप्त ीिता ि ै। मैंने भृंगी तथा कीट से हनरन्तर अिा-हचन्तन द्वारा स्वयं को अिा में रूपान्तररत करने और इस भााँहत रीिर से सब प्रकार के मिो त्याग देने तथा मोक्ष प्राप्त करने की हिक्षा ली ि ै।

दत्तात्रेय की हिक्षाओं ंसे रािा बहुत प्रभाहवत हुए। संसार का त्याग कर अिा पर हनरन्तर ध्यानाभ्यास करने लगे।

दत्तात्रेय सभी प्रकार की असहिषुणुता तथा पूवागग्रि से सवगथा मुक्त थे। उन्िोंनें हिस स्रोत से ज्ञान प्राप्त िो सका, उसी से उसे प्राप्त हकया। सभी हिज्ञासुओं ंको दत्तात्रेय का अनुसरण करना चाहिए।

सप्तमअध्याय

गुरुपन — एक मिाहवनािाकारी रोग

जडटलो मुण्डी लुंडचिकिः काषायाम्बर बहुकृि विः ।
पश्यिडप च न पश्यडि मूढो उदरडनडमत्तां बहुकृि विः ।।

"मनुष्य अपने उदर के हलए क्या िी छद्म वेष धारण करता िै। कोई हिर पर िटा बढ़ाता िै, तो कोई अपने हिर का मुण्डन करा लेता िै और अन्य व्यत्मक्त काषाय वस्त् धारण करता िै। अज्ञानी व्यत्मक्त देख कर भी निीं ंदेंखता िै।"

(श्री िंकराचायग)

भारतवषग िो अदै्वत-दिगन की पहवत्र भूहम रिा िै, हिसने िीवन की अहभन्नता तथा चेतना की एकता का प्रहतपादन करने वाले श्री िंकर, दत्तात्रेय, वामदेव तथा िडभरत को िन्म हदया, विी आि साम्प्रदाहयकों ंसे आकीणग िै। यि क्या िी मिान् खेद का हवषय िै! आि आप कैसी िोचनीय त्मथथहत देख रिे िैं! आप सागर-तट की हसकता- कहणकाओं ंकी गणना करने में भले िी सफल िो िायें; हकन्तु आि भारत में अहभभावी सम्प्रदायों ंकी संख्या की गणना कर पाना अत्यन्त कहठन िै। प्रहतहदन िी एक-न-एक प्रकार का वाद पिले से िी यिााँ वतगमान फूट को बढ़ावा देने के हलए छत्रप (कुकुरमुत्ते) की भााँहत प्रकट िो रिा िै। हनरिाथगक फूट तथा असामंिस्य का सवगत्र िी बोलबाला िै। हवहभन्न सम्प्रदायों ंमें संघषग चल रिा िै। सवगत्र िी मतभेद, फूट, न्यायालयों ंमें बाद, झडपें, मुठभेड तथा हपिुनता का प्राबल्य िै। न तो िात्मन्त िै और न मेल-हमलाप। एक गुरु के हिष्य दूसरे गुरु के हिष्यों ंसे सडकों ंऔर चौरािों ंपर लडते-हफरते िैं।

यथाथग योगी िथा ढोंगी गुरु

एक नवयुवक िारमोहनयम का प्रहिक्षण तथा स्वल्प वक्तृत्व-ित्मक्त प्राप्त कर मंच पर चढ़ता िै। कुछ िी वषों में आचायग अथवा गुरु िोने का ढोंग रचता िै, कुछ अण्ड-बण्ड प्रपत्र तथा गाने प्रकाहित करता िै और अपना एक अलग सम्प्रदाय थथाहपत कर बैठता िै। भारत में अभी भी गम्भीर मूखगताओं ंका प्राचुयग िै, ििााँ कोई भी व्यत्मक्त अल्पावहध में अपने अनुयायी बना सकता िै।

आसनों,ं बन्धों ंतथा प्राणायामों ंका थोडा प्रहिक्षण प्राप्त अन्य नवयुवक गुप्त रूप से रखे हुए चालीस हदन तक पयागप्त िोने वाले खाद्य-पदाथग वाले एक भूहमगत कक्ष में अपने को बन्द कर लेता िै। वि कुछ िडी-बूटी खा लेता िै िो कुछ हदनों ंके हलए कुक्षुधा तथा हपपासा को नष्ट कर देती िै। भगवान् िी िानता िै हक वि कक्ष में क्या करता िै। वि कक्ष में सोता िै। तत्पिात् वि हमथ्या समाहध से बािर आता िै। यि हतहतक्षा का अल्प अभ्यास मात्र िै। उसके संस्कार तथा वासनाएँ हकंहचत् भी नष्ट निीं ंिोतीं।ं वि पिले का िी सांसाररक व्यत्मक्त िै। वि धन-संग्रि करने तथा हिष्य बनाने के हलए इधर-उधर मारा-मारा हफरता िै। वि योगी - गुरु िोने का ढोंग रचता िै। अज्ञानी सांसाररक िन सिि में िी प्रवंहचत िोते िैं। दुःखद बात तो यि िै हक लोग इस प्रकार अनुत्तरदायी ढोंग रचने वाले नवयुवकों ंके मूखगतापूणग कायों के कारण वास्तहवक समाहध में प्रवेि करने वाले सिे योहगयों ंमें भी श्रद्धा खो बैठते िैं। इन नवयुवकों ंने योग तथा आध्यात्मिक िीवन के गुरुत्व को निीं ंसमझा िै। हनःसन्देि समाहध सावगिहनक सडकों ंपर प्रदिगनाथग निीं ंिै। समाहध एक पहवत्र कायग िै। समाहध ििाकिल निीं ंिै। यि व्यहभचार संक्रामक िो चला िै। अनेक नवयुवकों ंने यि प्रदिगन अथवा करतूत आरम्भ कर दी िै।

इन धूतग योहगयों,ं हदन-दिाडे प्रवंचना करने वालों,ं ढोंगी गुरुओं,ं कुल-कलंकों ंसे सावधान रिें िो संसगगि पररवार तथा समाि पर भार िैं; िो देि के हलए संकट तथा अनहभज्ञ और भोले-भाले लोगों ंकी सम्पहत्त खसोटने वाले गृध्र िैं।

कुछ लोग वृद्धावथथा में अपनी सेवा के हलए हिष्य बनाते िैं। वे अपने हिष्यों ंकी हचन्ता निीं ंकरते।

मडहलाओ ंको चीवनी

तथाकहथत गुरुओं ंऔर आचायों से महिलाएँ सिि िी प्रवंहचत िो िाती िैं। महिलाएँ बहुत िी सरल स्वभाव तथा अिु हवश्वासी िोती िैं। वे मधुर संगीत तथा स्वर-माधुयग से बडी िी सरलता से आकहषगत िो िाती िैं। शुरुहतमधुर ध्वहन की सिि िी हिकार बनती िैं। ये गुरु नारी िाहत की गोहष्ठयों ंमें प्रवि करने का प्रयास करते िैं। वे उनें सिि िी प्रभाहवत कर लेते िैं और हनरायास उनका िोषण करते िैं। वे उनें अपनी स्वाथग पूहतग का साधन बना लेते िैं। वे उनसे अनुहचत लाभ उठाते िैं, अपनी उदर-पूहतग करते िैं तथा कौीय वस्त् और हविेष प्रकार के ूति धारण कर घूमते-हफरते िैं। गृिथथों ंके हलए महिला हिष्याएँ बनाना िास्त्-सम्मत निीं ंिै। िो लोग िालीन ीहिवकोपािन के हलए महिला हिष्याएँ बनाते िैं, वे हवष्ठा में प्रमोद करने वाले कीट के सदृि िैं। ऐसे दम्भी लोगों ं के हलए कोई प्रायहित्त निीं ंिै। वे रौरव तथा मिारौरव नरक में हनमगमतापूवगक िाल हदये िाते िैं।

िे देहवयो! अब िाग िायें। अपने नेत्र खोलें। अब आप सब हिहक्षत िो चली िैं। अपने हववेक का उपयोग करें। केवल प्रवचनों ंतथा संगीत से प्रभाहवत न िो िायें। आिम्बरी गुरुओं ंसे सावधान रिें। गृिथथ को कदाहप अपना गुरु न बनायें। उससे कभी दीक्षा न लें। यहद आप ऐसा करेंगी, तो आप रोयेंगी तथा दुष्पररणाम भोगेंगी। हिस व्यत्मक्त को आप अपना गुरु वरण अनुकरणीय िोना चाहिए। उसे काम से मुक्त िोना चाहिए। उसे सभी प्रकार के िो चाहिए। ि ि–ाखों ंका ज्ञाता िोना चाहिए। आपको बनाने पर आपका मागग-दिगन करने के अन्तः-आध्यात्मिक ित्मक्त तथा आि-साक्षात्कार से सम्पन्न िोना चाहिए।

पहत को चाहिए हक उसकी पत्नी हिस व्यत्मक्त को अपना गुरु बनाना चािती िै, उसकी उहचत संवीक्षा अथवा सम्यक् परीक्षण और पररचय के हबया उसे अपना गुरु बनाने की अनुमहत न दे। यहद वे गुरु बनाने को वास्तव दे अहधक मित्त्व देते िैं, व्यत्मक्त का सावधानीपूवगक अध्ययन तथा िाँच-पडताल के पिात् तथा उसके साथ सुदीघग काल तक रिने के अनन्तर िी उसे अपना गुरु वरण करें। पहत और पत्नी के पृथक् पृथक् गुरु निीं ंिोने चाहिए, अन्यथा संघषग उठ खडा िोता िै। उनका उभयहनष्ठ गुरु िोना चाहिए।

सम्प्रदायो ंिथा पन्ो ंकी डवभीडषका

चैतन्य मिाप्रभु, गुरु नानक, स्वामी दयानन्द —ये सभी उदारमना, उदात्त आिाएँ थीं।ं उनकी सभी हिक्षाएँ उदात्त तथा हवश्विनीन थीं।ं उन्ोंनें कभी भी अपना पन् अथवा सम्प्रदाय थथाहपत करना निीं ंचािा। यहद वे आि िीहवत िोते, तो वे अपने अनुयाहययों ंकी करतूतों ंपर अशुरुपात करते। अनुयायी िी गम्भीर भूलें तथा प्रमाद करते िैं। उनमें हविाल हृदय का हवकास निीं ंहुआ िोता िै। वे संकीणगमना िोते िैं। वे मतभेद, दलगत भावना तथा सभी प्रकार के उपिव उत्पन्न करते िैं।

धमागचायों ंको कभी भी अपना सम्प्रदाय थथाहपत निीं ंकरना चाहिए। उनमें व्यापक अन्तदृगहष्ट िोनी चाहिए। सम्प्रदाय की थथापना करने का अथग िै हवश्व िात्मन्त को भंग करने वाले एक युद्ध-कि का हनमागण। वि दिे का हित करने की अपेक्षा िाहन िी अहधक करता िै। उसकी एक संथथा िो सकती िै, हिसके हसद्धान्त तथा वाद उदार और सावगिनीन, दूसरे धमों के हसद्धान्तों ंतथा वादों ंके अहवरोधी और सवगतः सभी द्वारा स्वीकायग तथा अनुकरणीय िों।ं

सद्गुरु के लक्षण

सद्गुरु के ये लक्षण िैं। यहद आप हकसी व्यत्मक्त में इन लक्षणों ंको पाते िैं, तो आप तत्काल उसे अपना गुरु स्वीकार कर लें। सिा गुरु वि िै िो ब्रह्महनष्ठ तथा श्रोहत्रय िो। उसे आिा तथा वेदों ंका पूणग ज्ञान िोता िै। वि साधकों ंकी िंकाओं ंका हनवारण कर सकता िै। उसमें समदृहष्ट तथा सनुतुहलत मन िोता िै । वि राग, द्वेष, िषग,
िोक, अिंकार, क्रोध, लोभ, मोि, मद आहद से मुक्त िोता िै। वि करुणा-सागर िोता िै। उसकी उपत्मथथहत मात्र से व्यत्मक्त को िात्मन्त तथा मनोत्कषग की प्रात्मप्त िोती िै। उसकी उपत्मथथहत में साधक की सभी िंकाएँ हवदूररत िो
िाती िैं। वि हकसी से कुछ भी अपेक्षा निीं ंरखता। उसका चररत्र अनुकरणीय िोता िै। वि उल्लास तथा आनन्द से पररपूणग िोता िै। साधक को गुरु के चरण-कमलों में पूणग हवश्वास िै। मेरे हलए गुरु परम आराध्य िैं। मेरा हृदय उनके चरण-कमलों ंकी सदा सेवा करने के हलए लालाहयत रिता िै। मेरा हवश्वास िै हक मन के मलों ंका हनवारण करने के हलए गुरु की सेवा से अहधक पावनकारी अन्य कुछ भी निीं ंिै। मेरा पूणग हवश्वास िै हक दूसरे तट अमरत्व तक ले िाने के हलए गुरु की संगहत िी एकमात्र सुरहक्षत नौका िै।

व्यापाररक गुरुपन

हकनु्तु मैं व्यापाररक गुरुपन को नापसन्द करता हाँ। मुझे उन पाखत्मण्डयों ंके व्यविार पर घोर अप्रसन्नता िोती िै िो गुरु तथा आचायग िोने का ढोंग करते िैं और हिष्य बनाते िैं तथा धन अिोरण करते. घूमते-हफरते िैं। इस हवषय में आप सभी मुझसे सिमत िोंगें। इसमें कोई दो राय निीं ंिो सकती। वे समाि के कण्टक िैं। गुरुपन केवल व्यवसाय बन गया िै। इसका भारत की भूहम से पूणगतया उनू्मलन करना चाहिए। यि भारतवाहसयों ंका बहुत िी हवनाि तथा अहित कर रिा िै। यि पािात्य देिवाहसयों ंतथा हवहभन्न देिों ंके लोगों ंके मन पर बहुत िी बुरा प्रभाव रिा िै। भारत अपने इस गुरुपन के व्यविार के कारण अपनी आध्यात्मिक गररमा खो रिा िै। इस गम्भीर व्याहध का दमन करने तथा इसे आमूल नष्ट करने के हलए तत्काल सिक्त पग उठाने चाहिए। इसका उनू्मलन करने के हलए कुछ भी उठा निीं ंरखना चाहिए। इसने हवकराल रूप धारण कर हलया िै। यि बहुत िी संक्रामक िो चला िै। अनेक लोगों ंने इस गुरुपन-व्यवसाय को िालीन िीहवका के एक सरल साधन के रूप में अपनाया िै। बेचारे अनहभज्ञ महिलाएँ तथा पुरुषों ंका इन छद्म गुरुओं ंद्वारा बडे पैमाने पर िोषण िोता िै। क्या िी लज्जास्पद हवषय िै!

अनेक गुरु इधर-उधर घूमते-हफरते िैं। वे प्रवचन करते तथा भाषण देते िैं। उन्ें ब्रह्मसूत्र तथा गीता कण्ठथथ िोते िैं; हकनु्तु उनमें ज्ञान-ध्यान निीं ंिोते िैं। वे िीघ्र िी उत्तेहित िो उठते िैं। उनका अहभमान बहुत दृढ़ िोता िै। उनमें दैवी गुणों ंतथा साधुत्व का अभाव िोता िै। उनमें सेवा-भाव निीं ंिोता िै। वे सेवा, कीतगन आहद की हनन्दा करते िैं। वे बहुत से लोगों ंको भ्रूओं ंसे पकड लेते िैं। वे उनकी पीठ पर िाथ रख कर आिीवागद देते िैं; हकनु्तु वे एक भी व्यत्मक्त को मोक्ष तक निीं ंपहुँचा सकते।

िनता हकसी को तभी अपना गुरु स्वीकार करती िै, यहद वि कुछ हसत्मद्धयाँ प्रदहिगत करे। यि गम्भीर भूल िै। उन्ें अहत आिु हवश्वासी निीं ंिोना चाहिए। वे इन कपटी योहगयों ंसे िीघ्र िी प्रवंहचत िोंगें। उन्ें अपने हववेक तथा तकगणाि–त्मक्त का उपयोग करना चाहिए। उन्ें हकसी हनहित हनष्कषग पर पहुँचने से पूवग गुरु की हवहधयों, ं आदतों, ं प्रकृहत, आचरण, वृहत्त, स्वभाव आहद का अध्ययन करना चाहिए और उसके िास्त्- ज्ञान की िाँच करनी चाहिए।

इस देि की िनता को पथ-भ्रष्ट करने तथा लूटने वाले इन कुल-कलंक लोगों ंके पास िाने के थथान पर भगवान् कृष्ण, भगवान् राम, भगवान् हिव, अपने अन्तयागमी प्रभु को अपना गुरु मानना तथा उनके मन्त्र का िप करना श्ेरेयस्कर िै।

गौरविाली भारत श्री िंकर अथवा श्री दत्तात्रेय िैसे सि गुरुओं ंसे भरपूर िो! वि इन छद्म गुरुओं ंतथा गुरुपन से मुक्त िो िो हक मिा अहभिाप िै! सनातन-धमग के हवश्विनीन हसद्धान्त हवश्व में फूलें-फलें ! धमागचायग हवहवध पन्थों ंतथा सम्प्रदायों ंके एकीकरण के हलए यथािक्य प्रयास करें। वे नये सम्प्रदायों ंकी थथापना न करें। यि साम्प्रदाहयक लडाई-झगडे तथा कलि सदा के हलए समाप्त िो िायें! यि दिे त्याग, संन्यास तथा आो-साक्षात्कार का लक्ष्य रखने वाले सन्त-र्मिााओं, ं योहगयों, ं भक्तों ंतथा संन्याहसयों ंका दिे िोने की अपनी ख्याहत तथा प्रहतष्ठा को सदा बनाये रखे! एकता, िात्मन्त तथा सामंस्यि संसार-भर में अहभभावी िों! ं िम सब पर गुरुओं ंका आिीवागद रिे ! वे अध्यिा-पथ पर िमारा मागग-दिगन करें!

अष्टम अध्याय

संन्याहसयों ंसे वाताग

आपिावैराग्यविो मुमुक्षून् भवाक्तिपारां प्रडियिुमुद्यिान् ।
अिाग्रहो मज्जयिेऽन्तराले डवगृह्य कण्ठे डवडनवर्त्य वेगिा् ।।

"संसार सागर को पार करने के हलए उद्यत हुए क्षहणक वैराग्य वाले मुमुकुषुओं ंको अिा - रूपी ग्रिा अहतवेग से बीच में िी रोक कर गला पकड कर िुबो देता िै।"

(हववेक-चूडामहण : ८१)

रिर ॐ ! ब्रह्म को मेरी श्रद्धांहिल। श्री िंकराचायग, मिापुरुषों ंतथा संन्याहसयों ंको नमस्कार!

संन्यासी वि िै हिसने दिेाध्यास (दिे-भावना), स्वाथगपरता, वासनाओं,ं अिंभाव तथा अहभमान का न्यास (त्याग) कर हदया िै। ब्रह्मा के चार कुमार (श्री सनक, सनन्दन, सनतुकुमार तथा सनतुसुित), श्री दत्तात्रेय तथा श्री िंकराचायग इस हविुद्ध हनवृहत्त-मागग के पुरोगामी थे। वे इस संन्यास आश्रम के प्रवतगक िैं।

काल-प्रवाह

संसार आहथगक, िािनीहतक, सामाहिक, रिनैहतक, मनोवैज्ञाहनक तथा औद्योहगक प्रगहत के साथ-साथ आध्याहत्मक प्रगहत भी चािता िै। आध्याहत्मक पक्ष की कभी भी उपेक्षा निीं ंकरनी चाहिए। विी आधार िै। विी चरम लक्ष्य िै। आिकल कमगयोग-क्षेत्र के नेता गण केवल कमग पर िी बल देते िैं। उन्िोंने िीवन के आध्याहत्मक पक्ष की पूणगतया उपेक्षा कर रखी िै। अनेक संथथाओं ंके संन्यासी भी केवल सामाहिक सेवा कर रिे िैं। कुछ संन्याहसयों ंमें केवल पत्मण्डतोहचत हवद्वत्ता िोती िै। वे कुछ समय तक थोडे-से सम्मान के अहधकारी िोते िैं। उन्िोंने भी िीवन के हचन्तनिील पक्ष को अलग फेंक हदया िै। वे िनता के मन पर वास्तहवक तथा हचरथथायी प्रभाव उत्पन्न निीं ंकर पाते िैं; क्योंहक उनके पृष्ठाधान में यथाथग आध्याहत्मक सामग्री अथवा आन्तररक आहत्मक बल निीं ं िोता।

आध्याहत्मक व्यत्मक्तयों,ं योहगयों,ं ज्ञाहनयों ंतथा संन्याहसयों ंको धूमकेतु, काहतगक मास की हद्वतीया के चन्द्रमा अथवा प्रभु यीिु की भााँहत हवश्व मंच पर अल्प काल के हलए उपत्मथथत िोना चाहिए। उन्िें अपनी िहक्त प्रवाहित करनी चाहिए, हविाल कमग सम्पन्न करना चाहिए और हफर कमगक्षेत्र से अदृश्य िो िाना चाहिए। अहधक समय तक आध्याहत्मक वगों का संचालन करने तथा आश्रम खोलने का कायग कहनष्ठ संन्याहसयों ंका िै। यि प्रचण्ड असाधारण आध्याहत्मक गुणों ंवाले व्यत्मक्त की प्रकृहत के उपयुक्त निीं ंिोता िै। वे अल्प काल में िी वसुन्धरा को वैसे िी आध्याहत्मक िल अथवा अमरत्व प्रदायक अमृत (हदव्य ज्ञान) से आप्लाहवत कर देते िैं िैसे प्रावृट काल के चार मिीनों ंमें गंगा कर देती िै।

सुखद जीवन-यापन का प्रलोभन

हकसी संन्यासी अथवा गृिथथ को सुखी िीवन-यापन िेतु आश्रम निीं ंखोलना चाहिए। अनेक संन्यासी िब वे आश्रम खोलते िैं तो प्रारम्भ में, मेरे किने का भाव यि िै हक िब वे हनधगन िोते िैं, तब वे हनदोष िोते िैं; हकन्तु िब वे धनवान िो िाते िैं, िब उनके बहुत से प्रिंसक तथा भक्त बन िाते िैं, तब उनकी हनःस्वाथग सेवा की भावना क्षीण पड िाती िै और उनके हृदय में उसका थथान स्वाथगपरायण उद्देश्य ले लेता िै। हिस उद्देश्य से

उन्ोंनें आश्रम खोले, वि हवफल िो िाता िै। तब वि धनोपािगन की संथथा बन िाती िै। लोगों ंको उसमें कोई आकषगण निीं ंरि िाता िै। यहद संथथा का प्रमुख व्यत्मक्त वैराग्य तथा परम त्यागमय िीवन-यापन करता िै। तो आश्रम िा श्वत िा त्मन्त, आनन्द तथा सुख का कें अथवा नाहभक बन िा ता िै । यि लाखों ं लोगों ं को आकहषगत करता िै। संसार को सदा िी ऐसे आश्रमों ंकी आवश्यकता रिती िै, हिनके प्रमुख ऐसे असाधारण आध्यात्मिक
गुणों ंवाले व्यत्मक्त िों ं।
कुछ युवक संन्यासी कुचला के बीि का सेवन करते िैं, दो वषग में एक सौ बीस बीि हनगल िाते िैं, तीन वषों तक लघु हसद्धान्त कौमुदी तथा न्याय का अध्ययन करते िैं, हिना करते िैं हक वे हसि हसद्ध बन गये िैं और सांसाररक व्यत्मक्तयों ंसे स्वच्छन्द रूप से हमलते िैं। यि भयंकर भूल िै। कुचला से नपुंसकता उत्पन्न िोती िै। नपुंसकता ब्रह्मचयग में संत्मथथत िोना निीं ंिै। यि मानी हुई बात िै हक उनका शीघ्र पतन िोता िै। पूणग ज्ञाहनयों ंतथा पूणग हवकहसत योहगयों ंको भी बहुत सावधान रिना चाहिए। उन्ें सांसाररक व्यत्मक्तयों ंके साथ अन्धाधुन्ध, स्वच्छन्द रूप से हमलने-िुलने का पररिार करना चाहिए। मत्स्य के युग्मन के दृश्य ने एक हवकहसत ऋहष को उद्दीप्त कर हदया। एक महिला के कंकणों ंकी झनकार, हकनारीदार अथवा रंगीन वस्त्र भी मन में तीव्र उत्तेिना उत्पन्न करते िैं। उनके अपने दूहषत हिचयग िोते िैं। काम-वासना बहुत िी शत्मक्तशाहलनी िै। माया रिस्यमयी िै। िे साधको! सावधान रिो ।

हिह्वा तथा स्वादेत्मिय अनुशासनिीन युवक साधकों, ं ब्रह्मचाररयों ंतथा संन्याहसयों ंको सत्संग कराने के बिाने गृिथथों ंके हनकट सम्पकग में आने को बाध्य करती िैं। िे साधको! क्या तुमने अपनी हिह्वा को तुष्ट करने के हलए िी अपने माता-हपता को छोडा, अपने पद और सम्पहत्त का त्याग हकया तथा संन्यास ग्रिण हकया िै? अथवा ऐसा तुमने आत्म-साक्षात्कार करने के हलए हकया िै? यहद तुमने पूवोक्त के हलए ऐसा हकया िै, तो तुम संसार में धनोपािगन कर इसे भली प्रकार कर सकते थे। संन्यास आश्रम को कलंहकत न करो। यहद हिह्वा अहनयन्त्रणीय िै तो गैररक वस्त्र उतार दो, संसार में वापस चले िाओ, कुछ कायग करो और धनोपािगन करो। कमगयोग के द्वारा अपना उहद्वकास करो। हिह्वा के संयम के अभाव में मन का संयम सम्भव निीं ंिै।

क्या यह सत्सांग है ?

आिकल सत्संग हवकृत िो चला िै। एक प्रकार के मनोरंिन अथवा मनोहवनोद के रूप में इसका ह्रास िो गया िै। सायंकाल में एक घण्टे तक संन्याहसयों ंऔर गृिथथों ंके मध्य कुछ हनरथगक सांसाररक चचाग, कुछ परनीहत, कुछ हनन्दा तथा पैशुन्य, कुछ मूखगतापूणग िी - िी तथा ठिाकों ंऔर अस्पष्ट सामान्योत्मक्त में कोमल भावुकतापूणग उद्गारों ंके हमश्रण के साथ वेदान्त की गपशप को िी सत्संग का नाम हदया िाता िै। सत्संग कराने वाले संन्याहसयों ंतथा श्रोताओं ंका मन अनेक वषों तक की सत्संग-माला के अनन्तर भी वैसा िी रिता िै। कोई भी ज्ञान और आध्यात्मिक प्रगहत निीं ंिोती िै।

साधुओं ंतथा संन्याहसयों ंको संसार में हवचरण करते समय गृिथथों ंके समक्ष अनुकरणीय वैराग्यमय िीवन प्रदहशगत करना चाहिए। उन्ें गृिथथों ंसे िीवन की केवल अत्यावश्यक वसुतुएँ िी ग्रिण करनी चाहिए। उन्ें उनके साथ बहुत स्वच्छन्दतापूवगक निीं ंहमलना-िुलना चाहिए। उन्ें ग्राम अथवा नगर के बािर एकान्त थथान में हनवास करना चाहिए। उन्ें आध्यात्मिक वगग गम्भीर ढंग से चलाना चाहिए। मध्यावहध में उन्ें सांसाररक हवषयों ंकी चचाग निीं ंकरनी चाहिए। उन्ें िँसी लाने के हलए बहुत अहधक किाहनयों ंका सहन्नवेश निीं ंकरना चाहिए। उन्ें िास-पररिास निीं ंकरना चाहिए। गम्भीर प्रशात्मन्त रिनी चाहिए। सभी स्रोता मन्त्र-मुग्ध-से िोने चाहिए। विाँ पूणग नीरवता िोनी चाहिए। केवल तभी गृिथथ िनों ंपर प्रभाव पडेगा। उन्ें • अनुभव िोगा हक सत्संग से उन्ें कुछ प्राप्त हुआ िै।

खीर-परौठा पक्षी

हिस समय संन्यासी गृिथथों ंसे बारम्बार अनेक वसुतुओं ंकी माँग करने लगता िै, तो वि अपना सम्मान एवं प्रभाव खो बैठता िै। वि उस थथान को तुरन्त छोडने के हलए बाध्य िो िोता िै। कुछ हनलगज्ज संन्यासी लगातार कई मिीनों ंतक गृिथथों ंके मध्य परीवी बने हटके रिते िैं। वे खीर-परौठा पक्षी िैं। वे सिे संन्यासी निीं ंिैं। अहधकाररयों ंको आगामी िनगणना के समय अपना हववरण अग्रेहषत करने में बहुत सावधान रिना चाहिए। इन व्यत्मक्तयों ंका नाम साधु और संन्याहसयों ंकी श्रेणी में निीं ंआना चाहिए। मेमने की खाल में भेहडये की भााँहत वे रंगीन वस्त्रों ंमें व्यावसाहयक हभखमंगे िैं। सिे संन्याहसयों ंका ठीक अहभलेख िोना चाहिए। साधुओं ंकी संख्या को बढ़ाने और साधुओं ंकी संख्या ७४ लाख दिगने से क्या लाभ िै? तुम्हें २००० से अहधक अच्छे सांसूकृहतक संन्यासी निीं ंहमलेंगे िो अपने तथा सामान्य रूप से दिे के हलए उपयोगी िों। एक सिा साधु या संन्यासी तिस्वी सूयग की भााँहत िै। वि अिहनगि देदीप्यमान रिता िै।

सिाको ंका प्रहिक्षण

साधुओं ंतथा संन्याहसयों ंके हलए एकमात्र ऋहषकेि िी सवोत्तम थथान िै । यिााँ हनःिुल्क भोिन, हनःिुल्क कुटीर तथा हनःिुल्क पणगिालाएँ उपलब्ध िैं। एक सुन्दर पुस्तकालय िै। हचहकत्सा-सिायता हमल सकती िै। तुम पक्षी की भााँहत स्वतन्त्र रि सकते िो। तब तुम यत्र-तत्र क्यों ंभटक हफरते िो? यहद एक साधु-संन्यासी अथवा साधक वास्तव में आध्यात्मिक प्रगहत तथा आत्म-साक्षात्कार करना चािता िै, तो उसे नूयूनाहतनूयून बारि वषग तक एक हदन के हलए भी बािर न िा कर इस थथान में हटके रिना चाहिए और कठोर तथा अहवत्मच्छन्न साधना करनी चाहिए। थथान- पररवतगन करने की आवश्यकता निीं ंिै। गंगा तथा हिमालय हनत्य प्रेरणादायी, िाहन्तकारी तथा स्वास्थ्यप्रद िैं। थथान-पररवतगन हनबगल संकि वाले व्यत्मक्तयों, भ्रान्त हचहकत्सकों ंतथा धनी लोगों ंकी मूखगतापूणग किना िै।

एक संन्यासी अथवा साधु थथान-थथान पर घूम-हफर कर मंचों ंपर व्याख्यान देने से किीं ंअहधक ठोस तथा फलोत्पादक कायग अपने कुटीर की देिली पर िी कर सकता िै। िब पुष्प प्रसुफुहटत िोता िै, तब वि मधु मत्मक्खयों ंको हनमन्त्रण निीं ंभेिता िै। मधुमत्मक्खयााँ स्वयं िी आती िैं। इसी भााँहत सत्य के सिे हिज्ञासु सिे संन्याहसयों ंको उनके द्वार पर िी चतुहदगक् से घेरे रिते िैं। संन्याहसयों ंको इधर-उधर िाने की तथा हवज्ञापन देने की आवश्यकता निीं ंिै। मंच के भाषणों ंमें केवल आधे घण्टे की अथथायी उत्तेिना िोती िै। कुछ कोनों ंमें कुछ िल्ला-गुल्ला, कुछ संघषग, कुछ कलि, करतल ध्वहन, साधु-साधु के िब्द िोते िैं। संन्याहसयों ंके कुटीरों ंमें सिे अहधकारी िी उनसे हमलने िायेंगे। इन साधकों ंके हृदय संन्याहसयों ंके उपदेि मे वास्तव में बेधे िा सकते िैं। साधकों ंको प्रहिक्षण देना उत्तम सेवा िै िो संन्यासी कर सकता िै। प्रत्येक साधक आध्यात्मिक केन्द्र अथवा आनन्द, िात्मन्त और ज्ञान हवकीणग करने अथवा प्रसाररत करने वाला केन्द्र बन िाता िै। िब संन्यासी घूमता िै, तो उसका समय नष्ट िोता िै। कुतूिलवि सभी प्रकार के लोग उससे हमलने आते िैं। आिकल गृिथथ लोग उनकी आवश्यकताओं ंकी ओर ध्यान निीं ंदेते िैं, वे हनतान्त स्वाथी िो गये िैं। 'स्वामी िी मिाराि! मेरे लायक कुछ सेवा बताइए' ऐसा कि कर वे कुछ हदखावटी सिानुभूहत प्रदहिगत करते िैं। यि हनरा धोखा, पाखण्ड और धूतगता िै।

िब कोई व्यत्मक्त गैररक वस्त्र धारण करता िै, तो उसे स्मरण रखना चाहिए हक उसने मिान् संन्यास आश्रम में प्रवेि हकया िै तथा उसके कन्धों ं- पर मिान् उत्तरदाहयत्व आ पडा िै और वि िीघ्र िी हवश्व का धाहमगक तथा आध्यात्मिक गुरु बनने िा रिा िै। उसे सभी अहभिात, हदव्य गुणों ंसे सम्पन्न बनने तथा िुद्धता और वैराग्यमय आदिग िीवन यापन करने का यथासम्भव प्रयास करना चाहिए।

सिै संन्यासी संसार के हलए प्रकाि स्तम्भ और पथ-प्रदिगक िैं। िैसे प्रकाि-गृि सुदूर सागर में त्मथथत िलपोतों ंको प्रकाि पे्रहषत करता िै, वैसे िी संन्यासी भी अज्ञान तथा अन्धकार के पंक में हनमत्मज्जत दूर दिे के लोगों ंमें अपना हदव्य प्रकाि हवकीणग करते िैं। वे सारे संसार को प्रभाहवत कर सकते िैं।

सिै संन्याहसयों ंकी िय िो हिन्िोंनें सवगस्व त्याग हदया िै, िो सन्मागग का अनुसरण कर रिे िैं! उन संन्याहसयों ंको अहभवादन िै िो हनि-स्वरूप में त्मथथत िैं, ब्रह्महनष्ठ िैं! पररव्रािकाचायों की, ब्रह्महवद्या के गुरुओं ं की िय िो िो चतुहदगक् आिज्ञान का प्रसार कर रिे िैं! उनका आिीवागद िम सब पर िो !

नवम अध्याय

गुरु-भत्मक्त-योग

हिस प्रकार अिु भगवद्-दिगन के हलए कीतगन-साधना कहलयुग की हविेष साधना बन गयी िै, उसी प्रकार इसमें आपके हलए एक नया योग, ऐसा योग हदया िा रिा िै िो इस सन्देि तथा अहवश्वास के, अहभमान तथा अिं के युग में सवागहधक उत्कृष्ट रूप से उपयुक्त िै। यि गुरु-भत्मक्त-योग िै। यि योग चमत्काररक िै। इसकी त्मिक्त अत्यहधक हविाल िै। इसकी प्रभावोत्पादकता सवागहधक अमोघ िै। गुरु-भत्मक्त-योग की महिमा अवणगनीय िै। यि इस युग के हलए सवोत्कृष्ट योग िै। इससे भगवान् यिााँ आपके समक्ष सिरीर प्रकट िोते और इस िीवन में िी आपके साथ चलते-हफरते िैं। कठोर रिहसक अिं साधक का कट्टर ित्रु िै। गुरु-भत्मक्त-योग दपग को नष्ट करने तथा दुष्ट अिं को हवगहलत करने के हलए एक सवागहधक हनहित तथा सवोत्कृष्ट साधना िै। हिस प्रकार एक हविेष प्रकार के घातक िीवाणु का एक हविेष प्रकार की रासायहनक िीवाणुनािी औषहध से िी हवनाि हकया िा सकता िै, उसी प्रकार अहवद्या तथा अिंकार को नष्ट करने के हलए यि अनुपम गुरु-भत्मक्त-योग एक अहद्वतीय औषहध िै। यि एक सवागहधक उग्र 'मायानािक' तथा 'अिंनािक' िै। वे सवगथा ित्मक्त िीन िो िाते िैं और उस भाग्यिाली अिा को हिसने गुरु-भत्मक्त-योग की भावनाओं ंसे अपने को सन्तृप्त कर हलया िै अब पूवगवत् आक्रान्त निीं ंकरते। वि व्यत्मक्त वास्तव में िी धन्य िै िो इस योग को रुहचपूवगक अपनाता िै; क्योंहक उसे अन्य सभी योगों ंमें सविो सफलता प्राप्त िोगी। उसे कमग, भत्मक्त, ध्यान तथा ज्ञान योगों ंकी पूणगता के साथ श्रेष्ठतम फल उपलब्ध िोंगे।

इस योग का अहधकारी बनने के हलए सत्यिीलता, श्रद्धा तथा आज्ञाकाररता का सरल हत्रक िै। पूणगता की अपनी अभीप्सा में सत्यिील रिें। अहनहित तथा हनरुत्साि न रिें। आपने हिसे अपने गुरु के रूप में स्वीकार हकया िै, उसमें पूणग श्रद्धा रखें। सन्देि की छाया भी आपके पास न फटकने पाये। िब आपने उसमें एक बार पूणग हवश्वास रखा िै, तो समझ लें हक वि आपको िो कुछ भी आदेि देता िै, हनिय िी आपके सवोत्तम हित में िोगा। उसके उपदेिों ंका अक्षरिः पालन करें। इस प्रकार कायग करने में आप सत्यिील रिें और मेरे इस कथन को स्वीकार करें हक आप पूणगता प्राप्त करेंगे। मैं आपको बलपूवगक आश्वासन देता हाँ।

अब गुरु-भत्मक्त-योग का हववेचन हकया िाता िै।

(१) गुरु-भत्मक्त-योग सद्गुरु को पूणग अिा-हनवेदन करना िै।

(२) गुरु-भत्मक्त-योग के आठ मित्त्वपूणग अंग इस प्रकार िैं—(क) गुरु-भत्मक्त के अभ्यास के हलए वास्तहवक थथायी आकांक्षा; (ख) सद्गुरु के हवचार, वाणी तथा कमग में पूणग श्रद्धा; (ग) गुरु को नम्रतापूवगक साष्टांग नमस्कार करना तथा उनके नाम का िप करना; (घ) गुरु के आदेिों ंके पालन में पूणग आज्ञाकाररता; (ङ) फल-प्रात्मप्त की अिा रखे हबना सद्गुरु की वैयत्मक्तक सेवा करना; (च) सद्गुरु के चरण-कमलों ंकी भाव तथा भत्मक्तपूवगक हनत्य पूिा करना; (छ) सद्गुरु के हदव्य कायग िेतु अिा-समपगण अथवा तन-मन-धन अपगण करना; तथा (ि) सद्गुरु की सौम्य कृपा केप्राप्त्यथग उनके पहवत्र चरणों ंका ध्यान तथा उनके उपदेिों ंका श्रवण तथा उनका सिाईपूवगक अभ्यास ।

(३) गुरु-भत्मक्त-योग स्वयं में एक योग िै।

(४) यहद साधक गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास निीं ंकरता, तो उसके हलए भगवान् के साथ योग कराने वाले अध्याि-पथ में प्रवेि करना सम्भव निीं ंिै।

(५) हिसे गुरु-भत्मक्त-योग-दिगन-प्रणाली का ज्ञान िै, विीं ंअपने गुरु को अप्रहतबन्ध रूप से समपगण कर सकता िै।

(६) िीवन के परम लक्ष्य अथागत् अि-साक्षात्कार की प्रात्मप्त गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास से िोती िै।

(७) गुरु-भत्मक्त-योग एक वास्तहवक सुरहक्षत योग िै, हिसका अभ्यास हनरापद रूप से हकया िा सकता िै।

(८) गुरु-भत्मक्त-योग का सार गुरु के आदेिों ंके पूणगतः पालन तथा उनके उपदेिों ंको िीवन में कायग रूप में पररणत करने में िै।

(९) गुरु-भत्मक्त-योग का उद्देश्य गुरु के प्रहत पूणग अि-समपगण द्वारा व्यत्मक्त को हवषय-पदाथों की दासता तथा प्रकृहत के पाि मुक्त से कराना तथा उसे अपने परम मुक्त-स्वरूप का अनुभव कराना िै।

(१०) िो गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास करता िै, वि अिं का हनरायास िी उन्मूलन कर सकता िै और संसार रूपी दलदल को सििि िी पार कर सकता िै।

(११) िो गुरु-भत्मक्त-योग का पूणग हृदय के साथ हनयहमत रूप से अभ्यास करता िै, उसे वि अमरत्व तथा िाश्वत सुख प्रदान करता िै।

(१२) गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास मन को िात्मन्त तथा सनुतुलन प्रदान करता िै।

(१३) गुरु-भत्मक्त-योग स्वहगगक सुख के साम्राज्य का द्वार खोलने की सवगकुंिी (मास्टर - की) िै।

(१४) िीवन का लक्ष्य गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास द्वारा सद्गुरु की कल्याणमयी कृपा प्राप्त करना िै।

(१५) सद्गुरु के पूज्य चरणों ंके पास नम्रतापूवगक िायें। सद्गुरु के प्राण-रक्षक चरणों ंमें साष्टांग प्रणाम करें। सद्गुरु के चरण-कमलों ंकी िरण लें। सद्गुरु के पावन चरणों ंकी पूिा करें। सद्गुरु के पावनकारी चरणों ं में बहुमूल्य उपिार भेंट करें। सद्गुरु के महिमामय चरणों ंकी सेवा में िीवन अपगण करें। यिी गुरु-भत्मक्त-योग का रिस्य िै।

(१६) सद्गुरु के पावन चरणों ंमें अि-समपगण करना िी गुरु-भत्मक्त-योग का आधार िै।

(१७) आपसे गुरु-भत्मक्त-योग में मात्र गम्भीर तथा सिे प्रयास की अपेक्षा की िाती िै।

(१८) गुरु-भत्मक्त-योग में गुरु के प्रहत भत्मक्त सवोत्कृष्ट तत्त्व िै।

(१९) गुरु में श्रद्धा गुरु-भत्मक्त-योग-रूपी हनश्रयणी का प्रथम सोपान िै।

(२०) श्रोहत्रय ब्रह्महनष्ठ गुरु के हवचार, वाणी तथा कायग में पूणग हवश्वास गुरु-भत्मक्त-योग का सार िै।

(२१) इस युग में सवोत्कृष्ट तथा सरलतम योग-साधना गुरु-भत्मक्त-योग िै।

(२२) गुरु-भत्मक्त-योग-दिगन में मित्तम सूत्र गुरु का परब्रह्म के साथ तादात्म्य करना िै।

(२३) गुरु-भत्मक्त-योग-दिगन का व्याविाररक रूप गुरु को अपने इष्टदेव से अहभन्न समझना िै।

(२४) गुरु-भत्मक्त-योग कोई दिगन र्निीं ं िै, हिसका ज्ञान व्याख्यानों ंअथवा पत्र-व्यविार द्वारा प्रदान हकया ा सिके। हिष्य को गुरु के पास अनेक वषों तक गुरु के साहन्नध्य में रिना चाहिए तथा आि-संयम, अनुिासन तथा ब्रह्मचयगपूवगक िीवन-यापन करते हुए गम्भीर ध्यान का अभ्यास करना चाहिए।

(२५) गुरु-भत्मक्त-योग समस्त हवज्ञानों ंका हवज्ञान िै।

(२६) गुरु-भत्मक्त-योग अमरत्व, िाश्वत सुख, मुत्मक्त, पूणगता, अकुषुण्ण आनन्द तथा हचरन्तन िात्मन्त प्रदान करता िै।

(२७) गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास सांसाररक पदाथों के प्रहत अनासत्मक्त तथा वैराग्य उत्पन्न करता और कैवल्य मोक्ष प्रदान करता िै।

(२८) गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास मनोहवकारों ंतथा आवेगों ंके हनयन्त्रण में हिष्य के हलए सियक िोता िै, प्रलोभनों ंका सामना करने तथा मन से कुषुब्धकारी तत्त्वों ंको हवदूररत करने की ित्मक्त प्रदान करता िै तथा अन्धकार के दूसरे तट पर ले िाने वाली गुरु कृपा की प्रात्मप्त का अहधकारी बनाता िै।

(२९) गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास अमरता, परम िात्मन्त तथा हनत्य आनन्द प्रदान करता िै।

(३०) गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास आपको भय, अज्ञान, हनरािा, हंकंकतगव्यहवमूढ़ता, रोग तथा हचन्ता से मुक्त िोने में समथग बनाता िै।

(३१) गुरु-भत्मक्त-योग वैयत्मक्तक भावना, इच्छा, समझ तथा हनिय के ऊध्वगकरण द्वारा अिंभाव का असीम चेतना में रूपान्तरण िै।

(३२) गुरु-भत्मक्त-योग में प्रसुतुत साधनाएँ दूसरे तट, हनभगयता तक ले िाने के हलए बहुत िी सरल तथा अमोघ उपाय िैं।

(३३) गुरु-भत्मक्त- योग गुरु कृपा द्वारा प्राप्त कठोर अनुिासन का पथ िै।

(३४) गुरु-भत्मक्त-योग के दिगन के अनुसार फलािा-रहित गुरु-सेवा तथा गुरु के चरण-कमलों ंकी उत्तरोत्तर वधगमान भत्मक्त समग्र साधना िै।

(३५) िो कोई नैहतक पूणगता, गुरु-भत्मक्त आहद के हबना िी गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास करता िै, उसे गुरु कृपा र्निीं ंप्राप्त िो सकती िै।

(३६) गुरु-भत्मक्त-योग अन्य सब योगों—ंयथा कमगयोग, भत्मक्तयोग, रियोग, िठयोग आहदका आधार िै।

(३७) िो व्यत्मक्त गुरु-भत्मक्त-योग से हवमुख िै वि मृतुयु, अन्धकार तथा अज्ञान की परम्परा को प्राप्त िोता िै।

(३८) गुरु-भत्मक्त-योग की साधना िीवन के परम ध्येय की प्रात्मप्त का हनहित पथ बतलाती िै।

(३९) गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास सबके हलए खुला िै। सभी मिाि तथा हवद्वान् पुरुषों ंने गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास द्वारा िी मिान् कायग सम्पाहदत हकये िैं।

(४०) गुरु-भत्मक्त-योग में अन्य सभी योगों ंका समावेि िै। गुरु-भत्मक्त-योग का आश्रय हलये हबना कोई भी अन्य योगों ं— हिन पर चलना कहठन िै—का अभ्यास निीं ंकर सकता िै।

(४१) गुरु-भत्मक्त-योग की हवचारधारा में आचायोपासना द्वारा गुरु-कृपा प्राप्त करने पर बहुत मित्त्व हदया िाता िै।

(४२) गुरु-भत्मक्त-योग वेद तथा उपहनषद्-काल हितना िी प्राचीन िै।

(४३) गुरु-भत्मक्त-योग िीवन की सभी पीडाओं ंऔर दुःखों ंको दूर करने का मागग प्रदहिगत करता िै।

(४४) गुरु-भत्मक्त-योग िीवन की व्याहधयों ंकी एकमात्र अमोघ औषहध िै।

(४५) गुरु-भत्मक्त-योग का मागग मात्र योग्य हिष्य को िीघ्र फलप्रद िोता िै।

(४६) गुरु-भत्मक्त-योग की चरम पररणहत अिंभाव के नाि तथा अमर आनन्द की उपलत्मब्ध में िोती िै।

(४७) गुरु-भत्मक्त-योग सवोत्तम योग िै।

(४८) गुरु के पहवत्र चरणों ंमें साष्टांग प्रणाम करने में संकोच करना गुरु-भत्मक्त- योग में एक बहुत बडी बाधा िै।

(४९) काम-हनभगरता, अनौहचत्य, अिम्मन्यता, अहभमान, स्वाग्रि, दीघगसूत्रता, हिद्रान्वेषण, दुराग्रि, कुसंग, कपट, उद्दण्डता, काम, क्रोध, लोभ तथा अिंकार — ये गुरु-भत्मक्त-योग में मिान् बाधाएँ िैं।

(५०) गुरु-भत्मक्त-योग के सतत अभ्यास द्वारा मन की अत्मथथरता को नष्ट करें।

(५१) गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास द्वारा िब मन की हवकीणग रत्मश्मयााँ प्रकृहतथथ िो िाती िैं, तब आप चमत्काररक कायग कर सकते िैं।

(५२) गुरु-भत्मक्त-योग का हसद्धान्त हचत्त-िुत्मद्ध प्राप्त करने तथा ध्यान और साक्षात्कार करने के हलए गुरु-सेवा पर अत्यहधक बल देता िै।

(५३) सिा साधक गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास से आनत्मन्दत िोता िै।

(५४) प्रथम गुरु भत्मक्त-योग के तत्त्व-ज्ञान को समझें और तत्पिात् उसे चररताथग करें, तो आपको अवश्य सफलता प्राप्त िोगी।

(५५) सभी दुगुगणों ंके हनमूगलन के हलए एकमात्र प्रभावकारी उपाय गुरु-भत्मक्त-योग का हनष्ठापूवगक अभ्यास िै।

(५६) गुरु में अबाध श्रद्धा गुरु-भत्मक्त-योग-रूपी वृक्ष का मूल िै।

(५७) उत्तरोत्तर वधगमान भत्मक्त-भावना, नम्रता, आज्ञाकाररता आहद इस वृक्ष की िाखाएँ िैं, सेवा पुष्प िै तथा गुरु को आिहनवेदन अगर फल िै।

(५८) यहद आपमें सद्‌गुरु के त्राणदायक चरणों ंमें दृढ श्रद्धा तथा भत्मक्त-भाव िै, तो आपको गुरु भत्मक्त-योग-साधना में अवश्य सफलता प्राप्त िोगी।

(५९) गुरु के प्रहत सिा तथा िाहदगक समपगण गुरु-भत्मक्त-योग का सार िै।

(६०) गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास का अथग गुरु के प्रहत प्रगाढ़ िुद्ध प्रेम िै।

(६१) सत्यिीलता के हबना गुरु भत्मक्त योग में कोई भी प्रगहत सम्भव निीं ंिै।

(६२) गुरु िो हक एक मिान् योगी या हसद्ध िो, के सिर आध्यात्मिक स्पन्दनों ंसे युक्त एक िान्त थथान में हनवास करें। तत्पिात् उसके तत्त्वावधान में गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास करें। तभी आप गुरु-भत्मक्त-योग में सफलता प्राप्त कर सकते िैं।

(६३) गुरु-भत्मक्त-योग का मूल स्वर ब्रह्महनष्ठ गुरु के चरण-कमलों ंमें अप्रहतबन्ध आि-समपगण िै।

(६४) गुरु-भत्मक्त-योग-दिगन के अनुसार गुरु तथा भगवान् एक िी िै; अतएव गुरु के प्रहत पूणग आि-समपगण परमावश्यक िै।

(६५) गुरु-भत्मक्त-योग-रूपी हनश्रेणी में गुरु के प्रहत आिसमपगण हनिय िी सविो सोपान िै।

(६६) गुरु-भत्मक्त-योग में गुरु-सेवा अहनवायग ितग िै।

(६७) गुरु कृपा गुरु-भत्मक्त-योग का अत्मन्तम ध्येय िै।

(६८) िठी साधक गुरु-भत्मक्त-योग की साधना में कोई हनहित प्रगहत निीं ंकर सकता िै।

(६९) गुरु-भत्मक्त-योग की साधना करने की इच्छा रखने वाले साधक के हलए कुसंगहत एक ितुरु िै।

(७०) यहद आप गुरु-भत्मक्त-योग की साधना करना चािते िैं, तो हवषयी िीवन को त्याग दें।

(७१) िो व्यत्मक्त दु:ख का अहतक्रमण कर िीवन में सुख तथा आनन्द प्राप्त करना चािता िै, उसे गुरु-भत्मक्त-योग की साधना सिाई पूवगक करनी चाहिए।

(७२) सिा थथायी सुख तो गुरु-सेवा-योग का आश्रय ले कर िी, न हक हविनिील बाह्य पदाथों से, प्राप्त हकया िा सकता िै।

(७३) क्या िन्म तथा मृतुयु के अनवरत चक्र से, सुख-दुःख तथा िषग–िोक के द्वन्द्वों ंसे छुटकारा निीं ंिै? िे हिष्य सुनो! उसका एक अचूक उपाय िै। हवनािीील हवषय-पदाथों से अपने मन को पराङ्मुख कर लो और गुरु-सेवा-योग का आश्रय लो। यि तुम्हें द्वन्द्वों ंसे परे ले िायेगा।

(७४) िब मनुष्य गुरु-भत्मक्त-योग का आश्रय लेता िै, तभी उसका सिा िीवन आरम्भ िोता िै। िो कोई गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास करता िै, उसे इिलोक और परलोक में हचरन्तन सुख प्राप्त िोता िै।

(७५) गुरु-भत्मक्त-योग की साधना आपको अपररमेय तथा अपररहमत आनन्द प्रदान करती िै।

(७६) गुरु-भत्मक्त-योग अपने साधक को हचरायु तथा िाश्वत सुख प्रदान करता िै।

(७७) मन संसार अथवा उसकी प्रहक्रया का मूल िै। मन िी बन्धन तथा मोक्ष का, सुख तथा दुःख का कारण िै। इस मन को गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास द्वारा िी संयम में रखा िा सकता िै।

(७८) गुरु-भत्मक्त-योग अमरत्व, िाश्वत सुख, मुत्मक्त, पूणगता, हनत्य आनन्द तथा हचरन्तन िात्मन्त प्रदान करता िै।

(७९) परम िात्मन्त का मागग गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास से आरम्भ िोता िै।

(८०) िो–िो हसत्मद्धयााँ तप, त्याग, योग, दान, पुण्य कमग आहद से प्राप्त की िा सकती िैं, वे सब गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास से सत्वर िी प्राप्त िो िाती िैं।

(८१) गुरु-भत्मक्त-योग एक यथाथग हवज्ञान िै िो हनम्न प्रकृहत को वि में करने तथा परम सुख को प्राप्त करने की हवहध की हिक्षा देता िै।

(८२) कुछ लोग गुरु-सेवा-योग को हनम्न कोहट का योग समझते िैं। उन्िोंने आध्यात्मिक रिस्य का पूणगतया अन्यथा अथग ग्रिण हकया िै।

(८३) गुरु-भत्मक्त-योग, गुरु-सेवा-योग, गुरु–िरण-योग आहद पयागयवाची िब्द िैं। इनमें कोई अथग-भेद निीं ंिै ।

(८४) गुरु-भत्मक्त-योग सभी योगों ंका सम्राट् िै ।

(८५) गुरु-भत्मक्त-योग भागवतीय चेतना के हलए सबसे सरल, सुहनहित, िीघ्र, सुलभ तथा सुरहक्षत मागग िै। ईश्वर करे, आप सब गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास से इस िन्म में िी भागवतीय चेतना प्राप्त करें!

(८६) गुरु-भत्मक्त-योग का आश्रय ले कर अपनी खोयी हुई हदव्यता को पुनः प्राप्त करें।

(८७) गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास कर द्वन्द्व तथा दुःखि–नक हवषयों ंके परे चले िायें।

(८८) गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास हिष्य को परम िात्मन्त, आनन्द तथा अमरता प्रदान करता िै।

(८९) एक वन्य चीते, हसंि अथवा िाथी को पालतू बनाना बहुत सरल िै, अहन अथवा िल के ऊपर चलना बहुत सरल िै; हकन्तु यहद व्यत्मक्त में गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास की सिी आकांक्षा निीं ंिै, तो उसके हलए सद्गुरु के चरण-कमलों ंमें आि-समपगण करना बहुत कहठन िै।

(९०) गुरु-भत्मक्त-योग मन तथा उसकी वृहत्तयों ंका हनरोध िै।

(९१) गुरु के प्रहत पूणग अप्रहतबन्ध आि-समपगण गुरु-भत्मक्त की प्रात्मप्त का एक हनहित मागग िै।

(९२) गुरु-भत्मक्त-योग की नीवं गुरु के प्रहत पूणग श्रद्धा पर आधाररत िै।

(९३) यहद आप वास्तव में ईश्वर को चािते िैं, तो सांसाररक भोगों ंसे पराङ्मुख िो िायें और गुरु-भत्मक्त-योग के अभ्यास का आश्रय लें।

(९४) गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास अनवरत रूप से चालू रखें।

(९५) गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास िी मनुष्य को िीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अभय तथा हनत्य सुखी बना सकता िै।

(९६) गुरु-भत्मक्त-योग की साधना द्वारा अमर आनन्दमय आिा की खोि अपने अन्दर करें।

(९७) गुरु-भत्मक्त-योग को िीवन का एकमात्र िेतु, उद्देश्य तथा सिै रस का हवषय बनायें। इससे आप परमानन्द को प्राप्त िोगे ।

(९८) गुरु-भत्मक्त-योग ज्ञान-प्रात्मप्त में सिायक िै।

(९९) गुरु-भत्मक्त-योग का मुख्य उद्देश्य उच्छृंखल इत्मियों ंतथा भ्रमणिील मन को हनयत्मन्त्रत करना िै।

(१००) गुरु-भत्मक्त-योग हिन्दू-संस्कृहत की प्राचीन प्रणाली िै, िो को िाश्वत सुख के मागग पर ले िा कर ईश्वर के साथ आनन्दमय मनुष्य योग कराती िै।

(१०१) गुरु-भत्मक्त-योग आध्यात्मिक तथा मानहसक आि-हवकास का िास्त् िै।

(१०२) गुरु-भत्मक्त-योग का उद्देश्य मनुष्य को भौहतकता के चंगुल मुक्त कर उसे हदव्य महिमा तथा अमर आनन्द की मूल त्मथथहत में पुनः से प्रहतहष्ठत करना िै।

(१०३) गुरु-भत्मक्त-योग का अभ्यास िरीर तथा मन को व्याहधयों ंतथा हवकारों ंसे मुक्त करता िै।

(१०४) गुरु-भत्मक्त-योग साधक को िारीररक तथा मानहसक कायगक्षमता प्रदान करता िै।

(१०५) गुरु-भत्मक्त-योग साधक को दु:ख, िरा तथा व्याहध से मुक्त बनाता िै तथा उसे हचरायु और िाश्वत सुख प्रदान करता िै।

(१०६) गुरु-भत्मक्त-योग में िारीररक, मानहसक, नैहतक तथा आध्यात्मिक-सभी प्रकार की साधनाओं ंका समाविे िै, हिनसे व्यत्मक्त आि-संयम तथा आिानुभूहत प्राप्त कर सकता िै।

(१०७) गुरु-भत्मक्त-योग मन की ित्मक्तयों ंपर अहधकार प्राप्त करने का हवज्ञान तथा कला िै।

(१०८) श्रद्धा तथा भत्मक्त के पुष्पों ंसे गुरु की पूिा करें।

(१०९) गुरु का सत्संग आि-साक्षात्कार के मत्मन्दर का प्रथम स्तम्भ िै।

(११०) ईश्वर-कृपा गुरु का रूप धारण करती िै।

(१११) गुरु-दिगन िी ईश्वर दिगन िै।

(११२) हिसने गुरु का दिगन निीं ंहकया िै, वि अन्धा िी िै।

(११३) धमग केवल एक िी िै और वि िै गुरु के प्रहत भत्मक्त तथा प्ेरेम का धमग ।

(११४) िब आपमें सांसाररक आिा निीं ंरिती, तभी पहवत्र आचायग के प्रहत भत्मक्त-भाव िगता िै।

(११५) आध्यात्मिक हिक्षक (गुरु) की संगहत से आपका िीवन-संग्राम सरल बन िायेगा ।

(११६) गुरु का आश्रय लें तथा न्यायोहचत कायग करें।

(११७) अपने गुरु की कृपा में श्रद्धा रखें तथा अपने कतगव्य का पालन करें।

(११८) गुरु की आज्ञा का उल्लंघन करना अपनी कब्र खोदना िै।

(११९) सद्गुरु हिष्य के हलए सतत वरदान स्वरूप िै।

(१२०) िगद्गुरु का हृदय सौन्दयग का धाम िै।

(१२१) िीवन का ध्येय गुरु की सेवा करना िै।

(१२२) िीवन का प्रत्ेयेक कटु अनुभव गुरु के प्रहत आपके हवश्वास की कसौटी िै।

(१२३) साधक कायों को मित्त्व देता िै। गुरु उसके पीछे िेतु तथा उद्देश्य को मापता िै ।

(१२४) गुरु के कमग में िंका करना मिापातक िै।

(१२५) गुरु के समक्ष अपने दम्भ का प्रदिगन करने का प्रयास कभी निीं ंकरना चाहिए।

(१२६) हिष्य के हलए आज्ञा-पालन िीवन-हसद्धान्त िै।

(१२७) अपने हदव्य हिक्षक (गुरु) की सेवा करने का कोई भी अवसर न खोयें।

(१२८) िब आप अपने गुरु की सेवा करें, हनष्कपट और गम्भीर रिें।

(१२९) गुरु पर प्ेरेम रखना गुरु की सेवा करना िै।

(१३०) गुरु की सेवा करने के हलए िी िीना चाहिए।

(१३१) गुरु की आज्ञाओं ंका पालन उनका सम्मान करने से श्ेरेयस्कर िै।

(१३२) आचायग की आज्ञा का पालन करना त्याग से भी श्ेरेष्ठ िै।

(१३३) प्रत्ेयेक पररत्मथथहत में अपने गुरु के अनुकूल, समंहित तथा नमर्नील बने रिना चाहिए।

(१३४) अपने गुरु के समक्ष अहधक बातचीत न करें।

(१३५) गुरु के प्रहत िुद्ध प्ेरेम गुरु की आज्ञा के पालन का सिा स्वरूप िै।

(१३६) अपने पास की उत्तमोत्तम वसुतु प्रथम अपने गुरु को अपगण करें।

(१३७) हिष्य को ईष्याग, द्ेवेष तथा अहभमान से मुक्त, राग-रहित तथा गुरु के प्रहत दृढ़ भत्मक्त-भाव वाला, अधैयग-रहित तथा सत्य के साक्षात्कार का हनिय वाला िोना चाहिए।

(१३८) हिष्य को अपने गुरु में दोष दिगन र्निं ंकरना चाहिए।

(१३९) हिष्य को अपने गुरु के समक्ष अनावश्यक अथवा हनरथगक बात र्निं ंकरनी चाहिए।

(१४०) आचायग को यज्ञाहत प्रज्वहलत करने वाली अरहण के दो काष्ठ- खण्डों ंमें नीचे अथवा मुख्य काष्ठ के रूप में तथा हिष्य को ऊपर के काष्ठ के रूप में समझना चाहिए। उपदेि दोनों ंको संयुक्त करने वाला मध्य का काष्ठ िै तथा ज्ञान सुखिनक योग िै।

(१४१) इस प्रकार गुरु से िो सद्ज्ञान प्राप्त िोता िै, वि माया अथवा भ्रम का हनवारण करता िै।

(१४२) एक िी ईश्वर माया के कारण अनेक रूप बन गया िै, ऐसा ज्ञान हिसे गुरु कृपा से िो गया िै, वि सत्य को िानता तथा वेद को समझता िै।

(१४३) गुरु की सेवा तथा पूिा द्वारा प्राप्त एकाग्र भत्मक्त से बने तीक्ष्ण धार वाले ज्ञान- खड्ग से संसार रूपी वृक्ष का िात्मन्तपूवगक अहवरत गहत से उच्ेछेदन कर िालें।

(१४४) गुरु िीवन-पोत का कणगधार िै और ईश्वर उसे चलाने वाला अनुकूल पवन िै।

(१४५) िब मनुष्य में संसार से िुगुप्सा उत्पन्न िो िाती िै और उसमें वैराग्य आता िै और िब वि अपने गुरु द्वारा प्रदत्त उपदेिों ंपर हचन्तन करने में समथग िो िाता िै, तो ध्यान के बारम्बार के अभ्यास के कारण उसका मन अहनष्ट प्रकृहत को त्याग देता िै।

(१४६) गुरु के पास से उपयुक्त रीहत से मन्त्र में दीहक्षत िोने पर िी मन्त्र-ित्मद्ध िोती िै।

(१४७) मनुष्य अनाहद काल से अज्ञान के प्रभाव में िोने से गुरु के हबना उसे आत्म-साक्षात्कार निीं िो सकता िै। एक ब्रह्महवद् िी दूसरे को ब्रह्मज्ञान प्रदान कर सकता िै।

(१४८) बुत्मद्धमान् मनुष्य को गुरु को आत्मा तथा परमात्मा रूप िान कर असीम भत्मक्तपूवगक उनकी पूिा करनी चाहिए।

(१४९) हिष्य में गुरु तथा ईश्वर के प्रहत हविुद्ध भत्मक्त-भाव िोना चाहिए।

(१५०) हिष्य को आज्ञाकाररता, सतकगता तथा हनष्कपटता से गुरु की सेवा करनी चाहिए तथा उनसे भागवत-धमग की हिक्षा लेनी चाहिए।

(१५१) हिष्य को गुरु की ईश्वर-रूप में सेवा करनी चाहिए िो हक सवेश्वर को प्रसन्न करने तथा उनकी कृपा का अहधकारी बनने का अचूक उपाय िै।

(१५२) हिष्य को वैराग्य का अभ्यास करना चाहिए तथा अपने आध्यात्मिक हिक्षक (गुरु) का सत्संग करना चाहिए।

(१५३) हिष्य को प्रथम अपने गुरु की कृपा प्राप्त करनी चाहिए और तब उनके द्वारा हनहदगष्ट पथ का अनुसरण करना चाहिए।

(१५४) हिष्य को इत्मियों को संयम में रख कर गुरु-गृि में हनवास करना चाहिए और िास्त्राध्ययन करना चाहिए।

(१५५) हिष्य को गुरु के पहवत्र िाथ से िो कोई स्वाहदष्ट अथवा सादा, बहढ़या अथवा घहटया, अि अथवा पयागप्त भोिन हमले, उसे खाना चाहिए।

(१५६) मन की हनम्न प्रकृहत का पूणग रूपान्तरण करना चाहिए। साधक अपने गुरु से किता िै : 'मुझे योगाभ्यास करना िै। मेरी हनहवगकि-समाहध में प्रवेि करने की इच्छा िै। मैं आपके चरणों में बैठना चािता हाँ। मैं आपकी िरण में आया हाँ।' हकन्तु वि अपनी हनम्न प्रकृहत और स्वभाव को, पुराने चररत्र, व्यविार और आचरण को बदलना निीं चािता िै।

(१९५७) हनम्न प्रकृहत का रूपान्तरण सिि निीं िै। आदत की ित्मक्त सदा बलवती तथा िठीली िोती िै। इसके हलए बहुत मनोबल की आवश्यकता िोती िै। प्राचीन स्वभाव की ित्मक्त से साधक अनेक बार हनरुपाय बन िाता िै। उसे हनयहमत िप, कीतगन, ध्यान, अथक हनःस्वाथग सेवा तथा सत्संग के द्वारा अपने सत्त्व तथा संकि का पयागप्त मात्रा में हवकास करना िोगा। उसे आत्म-हनरीक्षण करके अपने दोषों तथा कहमयों का पता लगाना चाहिए। उसे अपने गुरु के मागग-दिगन में रिना चाहिए। गुरु उसके दोषों का पता लगाता िै और उनके उन्मूलन का उपयुक्त उपाय हनदेहित करता िै।

(१५८) आपको साधन-चतुष्टय से सम्पन्न बन कर ब्रह्मश्रोहत्रय तथा ब्रह्महनष्ठ गुरु के समीप िाना चाहिए, उनसे अपनी िंकाओं का हनवारण करना चाहिए तथा उनसे प्राप्त आध्यात्मिक प्रकाि की सहायता से आध्यात्मिक मागग पर प्रयाण करना चाहिए। िब तक आपका उपयुक्त रूप से गठन न िो िाये, तब तक आपको

गुरु के साहन्नध्य में ि◌ी रिना चाहिए; क्योंहंक ओिसाक्षात्कार प्राप्त ओिाओं ◌ंका वैयत्मक्तक सम्पकग उन्नयनकारी बहुत िी िुआ करता ि◌ै। यहद आप सिे तथा हनष्कपट ि◌ैं, यहद आपमें ज्वलन्त मुमुकुषुत्व ि◌ै, यहद आप अपने गुरु के उपदेिों ◌ंका अहत-हनयमहनष्ठा से अनुकरण करते ि◌ैं, यहद आप सतत तीव्र ध्यान करते ि◌ैं, तो हनःसन्देि छि मिा के भीतर ि◌ी आपको परम लक्ष्य की प्रात्मप्त ि◌ो सकती ि◌ै। आप मेरी बात मिा मानें। ऐसा वास्तव में घहटत ि◌ोगा ।

(१५९) यि संसार प्रलोभनों ◌ंसे पूणग ि◌ै; अतएव नव-दीहक्षतों ◌ंको अपनी रक्षा बडी सतकगता से करनी चाहिए। पूणगतः रूपान्तररत ि◌ोने तक, गम्भीर ध्यान में प्रहतहष्ठत ि◌ोने तक उन्ें अपने गुरु के चरण-कमलों ◌ंमें बैठना चाहिए। अलमस्त साधक ि◌ो प्रारम्भ से ि◌ी स्वतन्त्र रिते ि◌ैं, ि◌ो अपने गुरुओं ◌ंकी वाणी पर ध्यान निीं ◌ंदेते, वे हनरािािनक नमूने ि◌ैं। वे हनरुद्देश्य ि◌ीवन-यापन करते ि◌ैं और सररता में बि रिे काष्ठ-फलक की भााँहत इतस्ततः मारे-मारे हफरते ि◌ैं।

(१६०) दुराग्रिी साधक अपने प्राक्तन स्वभाव से ि◌ी हचपका रिता ि◌ै। वि ईश्वर अथवा वैयत्मक्तक गुरु को समपगण करना निीं ◌ंचािता ि◌ै।

(१६१) यहद हिष्य वास्तव में अपना सुधार करना चािता ि◌ै, तो उसे अपने प्रहत सिा तथा अपने गुरु के प्रहत हनष्कपट ि◌ोना चाहिए।

(१६२) ि◌ो अवज्ञाकारी ि◌ै, ि◌ो अनुिासन भंग करता ि◌ै, ि◌ो अपने गुरु से हनष्कपट निीं ◌ंि◌ोता ि◌ै, ि◌ो अपने गुरु के समक्ष अपना हृदय उन्मुक्त निीं ◌ंकरता ि◌ै, वि गुरु की सिायता से लाभात्मित निीं ◌ंि◌ो सकता ि◌ै। वि स्व-हनहमगत पंक में फाँसा रिता ि◌ै तथा हदव्य पथ पर अग्रसर निीं ◌ंि◌ो सकता ि◌ै। क्या ि◌ी खेद का हवषय ि◌ै! हनिय ि◌ी उसकी दिा अतीव दयनीय ि◌ै।

(१६३) हिष्य को ईश्वर अथवा गुरु के प्रहत पूणग हनःिेष मुक्त हृदय से ओि-समपगण करना चाहिए।

(२६४) गुरुमात्र यिी कर सकता ि◌ै हक वि अपने हिष्य को सत्य को ि◌ानने की हवहध अथवा अन्त की त्मक्त का उद्घाटन करने वाला मागग बतला ि◌ै।

(१६५) सायन-चतुष्य से सम्पन्न साधक अपने गुरु के चरणों ◌ंमें बैठ कर शुरुहतयााँ तथा 'तत्त्वमहस' मिावाक्य की अथग-व्यंकिता का श्रवण करता ि◌ै और तब हवषय को गम्भीरता से मनन करता ि◌ै।

(१६५) भगवान् ि◌ार, भगवान् हिव, भगवान् कृष्ण, अपने गुरु अथवा भगवान् बुद्ध, प्रभु यिुि ि◌ैसे सन्तों ◌ंमें से हकसी एक के रूप पर धारणा करें। हचत्र की इस मनोमूहतग को लाने के हलए बारम्बार प्रयास करें। समूपूणग हवचार न ि◌ो ि◌ायेंगे। वि एक अन्य हवहध, भक्तों ◌ंकी हवहध ि◌ै।

(१६७) आज्ञाकाररता एक अमूल्य सद्गुण ि◌ै। यहद आप आज्ञाकाररता के सद्गुण को हवकहसत करने का प्रयत्न करेंगे, तो ओि-साक्षात्कार के मागग के िमिातुरु, अिं का ि◌नैः-िनैः उन्मूलन ि◌ो ि◌ायेगा।

(१६८) गुरु की पूणग आज्ञाकाररता दुस्साध्य कायग ि◌ै, लेहकन सद्भावपूवगक प्रयास करने से यि बन ि◌ाता ि◌ै।

(१६९) सामान्य कायग के सम्पादन में भी मिान कष्ट ि◌ोता ि◌ै। अतएव व्यत्मक्त को आध्यात्मिक साधना-पथ में हकसी-न-हकसी प्रकार के अनुिासन के अधीन रिने के हलए तैयार रिना चाहिए तथा गुरु की आज्ञाकाररता के पोषण का प्रयास करना चाहिए।

(१७०) आराधना, माल्यापगण तथा पूिा के द्वारा अपने आन्तररक भवों ंकी अन्य बाह्य अहभव्यत्मक्तयों ंकी अपेक्षा गुरु की आज्ञाकाररता किीं ंमित्तर ि ै।

(१७१) गुरु की आज्ञाकाररता उनके प्रहत सिी श्रद्धा प्रकट करती ि ै।

(१७२) आज्ञाकाररता का अथग ि ै—गुरु हिस प्रकार कायग करने की अपेक्षा करता ि ै, उसी प्रकार कायग करने का प्रयास करना।

(१७३) यहद हकसी को यि पता चल िाये हक गुरु अमुक कायग पसन्द निीं ंकरते, तो व्यत्मक्त को उस कायग को निीं ंकरना चाहिए। यि भी आज्ञाकाररता ि ै।

(१७४) गुरु-सेवा गुरु के प्रहत हकया गया हनष्काम सेवा-योग ि ै।

(१७५) गुरु की सेवा मानवता की सेवा ि ै।

(१७६) गुरु-सेवा मन की महलनता का हनवारण करती ि ै। यि प्रभावकारी अन्तःकरणिुत्मद्धकारक ि ै। अतः गुरु की भाव तथा बोधपूवगक सेवा कीहिए।

(१७७) गुरु-सेवा मन को हदव्य ज्योहत, ज्ञान तथा कृपा को ग्रिण करने के हलए तैयार करती ि ै।

(१७८) गुरु-सेवा हृदय को हवकहसत करती तथा सभी अपराधों ंको ध्वस्त करती ि ै। यि हचत्तिुत्मद्ध के हलए प्रभावकारी साधना ि ै।

(१७९) गुरु-सेवा मन को सदा गहतिील तथा सतकग रखती ि ै।

(१८०) गुरु-सेवा करुणा, हवनम्रता, आज्ञाकाररता, प्ेरम, श्रद्धा, भत्मक्त, धैयग, आत्म-त्याग आहद हदव्य सद्गुणों ं के हवकास में व्यत्मक्त की सिायता करती ि ै।

(१८१) गुरु-सेवा ईष्याग, घृणा तथा श्ेरेष्ठता - मनोग्रत्मन् को नष्ट करती ि ै।

(१८२) अपने गुरु की सेवा करने वाला व्यत्मक्त 'अिन्ता' तथा 'ममता' पर हविय पा लेता ि ै।

(१४३) िो हिष्य अपने गुरु की सेवा करता ि ै, वि वस्तुतः अपनी सेवा करता ि ै।

(१८४) गुरु-सेवा-योग की साधना में अहनवगचनीय सुख तथा िात्मन्त ि ै।

(१८५) गुरु-सेवा के हलए हियें ।

(९८६) प्रातः चार बिे उठ िायें। यि गुरु की मूहतग पर ध्यान करने का अनुकूल समय ि ै।

(१८७) हिष्य को अपने गुरु-गृि में हनवास करते समय सन्तुष्ट िीवन-यापन करना चाहिए। उसमें पूणग आत्म-संयम िोना चाहिए।

(१८८) हिष्य को गुरु के समक्ष मृदु, मधुर तथा सत्य बोलना चाहिए और अहिष्ट तथा परुष वचन निीं ं बोलना चाहिए।

(१८९) हिष्य को अपने गुरु की पीठ पीछे हनन्दा निीं ंकरनी चाहिए।

(१९०) िो अपने गुरु की पीठ पीछे हनन्दा करता िै, वि रौरव नरक में िाता िै।

(१९१) िो व्यत्मक्त भोिन के हलए िीता िै, वि पापी िै; हकनुतु िो व्यत्मक्त अपने गुरु की सेवा के हलए भोिन करता िै, वि सिा हिष्य िै।

(१९२) िो गुरु का ध्यान करता िै, उसे हमतिाार की आवश्यकता िोती िै।

(१९३) गुरु-सेवा के अभाव में सच्छास्त्रों ंका अध्ययन केवल समय

(१९४) गुरु दहक्षणा हदये हबना गुरु से िास्त्रों ंका अध्ययन करना समय नष्ट करना िै।

(१९५) गुरु की इच्छाओं ंकी पूहतग हकये हबना वेदान्त-पाठ उपहनषद् तथा ब्रह्मसूत्रों ंका मात्र अध्ययन न तो कल्याणकारी िोगा और न बोधप्रद िी।

(१९६) हचर काल तक सेवा करने से िुद्ध तथा िान्त पर व्यत्मक्त का गुरु बन िाता िै।

(१९७) भले िी आप हितना चिों उतने िी दािगहनक ग्रन्थों ंका पररीलन करें, अपनी हवश्वयात्रा- भर प्रवचन करें, हिमालय की कन्दराओं ंये सिस्रों ंवषग तक हनवास करें, वषों तक प्राणायाम की साधना करें, िीवन िीषागसन करें; पर गुरु कृपा के हबना आप मोक्ष प्राप्त निीं ंकर सकते िैं।

(१९८) यद्यहप गुरु के हलए ब्रह्म को 'इदं' कि कर इंहगत कर पाना तथा हिष्य के हलए अपरोक्षानुभूहत से पूवग ब्रह्म के स्वरूप का बोध कर पाना सम्भव निीं ंिै; हकनुतु गुरु-कृपा हिष्य को रिस्यमय ढंग से अपने अन्दर ब्रह्म-तत्त्व की अपरोक्षानुभूहत के हलए समथग बना देती िै।

(१९९) आपके गुरु िी आपके माता, हपता और गुरु िन िो।

(२००) यहद गुरु अनुमहत दें, तो उनके चरणों ंकी माहलि करें।

(२०१) प्रते्येक व्यत्मक्त को गुरु तथा वेदान्त-वाक्यों ंके यथाथग अथग के बोध की सियता से अपने िी ज्ञान द्वारा अपने अन्दर अिा का साक्षात्कार करना चाहिए।

(२०२) व्यत्मक्त के गुरु िों,ं तब भी उसे अपने िी प्रयत्नों ंद्वारा समूपूणग कामनाओं,ं वासनाओं ंतथा अिकार को नष्ट करना तथा अिा-साक्षात्कार प्राप्त करना चाहिए।

(२०३) गुरु के पास िाने के हलए आपको उपयुक्त अहधकारी िोना चाहिए। आपको वैराग्य, िम, दम तथा यम से सम्पन्न िोना चाहिए।

(२०४) यहद आप किते िैं, 'सद्गुरु र्नीं ंिैं', तो गुरु भी किते िैं, 'सद्हिष्य र्नीं ंिैं।' हिष्य के गुणों ंसे सम्पन्न बहनए। आपको सद्गुरु प्राप्त िोंगें।

(२०५) गुरु आपके उद्धारक तथा पररत्राता िैं। सदा उनकी आराधना तथा पूिा करें।

(२०६) गुरुपन एक भयंकर अहभिाप िै।

(२०७) अपने गुरु के समक्ष प्रहतहदन साष्टांग प्रणाम करें। वि परम सत्, हचत् तथा आनन्द िैं।

(२०८) हिष्य को सदा गुरु की मूहतग का ध्यान, गुरु के पहवत्र नाम का िप तथा उनके आदेिों ंका पालन करना चाहिए। उनके अहतररक्त अन्य हकसी का हचन्तन र्नीं ंकरना चाहिए। यिी साधना के रिस्य के मूल में िै।

(२०९) व्यत्मक्त को अपने गुरु की आराधना करनी चाहिए; क्योंहंक उनसे मित्तर कुछ भी र्नीं ंिै।

(२१०) गुरु का चरणामृत संसार-सागर का िोषण कर लेता िै तथा व्यत्मक्त को आत्मा की मित्त्वपूणग सम्पहत्त प्राप्त करने में समथग बनाता िै।

(२११) गुरु का चरणामृत हिष्य की हपपासा को िहमत करता िै।

(२१२) िब आप ध्यान के हलए बैठे तो अपने सभी सम के सन्तों ंको स्मरण करें। आपको उनका आिीवागद प्राप्त िोगा।

(२१३) मिात्माओं ंकी हववेकपूणग वाणी को सुहनए तथा उसका पालन कीहिए।

(२१४) िास्त् तथा गुरु हवहित सत्कमग िी कीहिए।

(२१५) िात्मन्त का पथ प्रदहिगत करने के हलए गुरु की हनतान्त आवश्यकता िै।

(२१६) 'वािे गुरु' गुरु नानक के अनुयाहययों ंका गुन िै। ग्रन्साहिब का अध्ययन करें। आपको गुरु की मिता ज्ञात िो िायेगी।

(२१७) गुरु की पूिा द्वारा उन्ें सदा स्मरण रखें। आपको सुख प्राप्त िोगा।

(२१८) िास्त्ों,ं गुरु की वाणी, ईश्वर तथा स्वयं में आत्मस्तक-बुत्मद्ध श्रद्धा िै।

(२१९) सवोत्कृष्ट साधना हनष्काम भाव से गुरु की सेवा करना िै।

(२२०) श्रवण का अथग िै सद्गुरु के चरण-कमलों ंमें बैठकर श्रुहतयों ंको सुनना ।

(२२१) गुरु की सेवा मिान् िुत्मद्धकाररणी िै।

(२२२) आत्म-साक्षात्कार के हलए गुरु कृपा आवश्यक िै।

(२२३) हितनी भत्मक्त-भावना आप प्रभु के प्रहत रखते िैं, उतनी िी गुरु के प्रहत भी रखें। तभी सत्य आपके हृदय में प्रकाहित िोगा।

(२२४) सदा एक िी गुरु के पास हटके रिें।

(२२५) ईश्वर आद्य गुरु िैं, हिन्िें हदक्काल का बन्धन निीं ंिै। वि अनाहद काल से िाश्वत काल तक मानवि–ाहत के गुरु िै।

(२२६) कुण्डहलनी ित्मक्त को उसकी सुषुप्तावथथा से िाग्रत करने के हलए गुरु की अहनवायग आवश्यकता िोती िै।

(२२७) हिष्यत्व का आरम्भ हिन्ता का हवनाि िै।

(२२८) हिष्यत्व की कुंिी ब्रह्मचयग तथा गुरु-सेवा िै।

(२२९) हिष्यत्व का पररधान गुरु-भत्मक्त िै।

(२३०) हिष्यत्व का हचह्न गुरु के चरण-कमलों ंमें िीवन समपगण िै।

(२३१) हिष्यत्व का रािपथ गुरुदेव की मूहतग का हनयहमत ध्यान िै।

(२३२) हिष्यत्व का आधार गुरु मिाराि की पूणग आज्ञाकाररता िै।

(२३३) गुरु को हमलने तथा उनकी सेवा करने की ज्वलन्त कामना मुमुकुषुत्व िै।

(२३४) देवों,ं हद्विों,ं गुरुओं ंतथा ज्ञाहनयों ंकी पूिा, िुहचता, ऋिुता, ब्रह्मचयग तथा अहिंसा िरीर के तप िैं।

(२३५) ब्राह्मणों,ं पहवत्र गुरुओं ंतथा ज्ञानी पुरुषों ंको प्रणाम करना, ब्रह्मचयग तथा अहिंसा िारीररक तप िैं।

(२३६) माता, हपता, गुरुओं,ं हनधगनों ंतथा रोहगयों ंकी सेवा भी िरीर की तपियागएँ िैं।

(२३७) अनुकूल िोने का गुण बहुत िी हवरल िोता िै और यि एक श्रेष्ठ गुण िै। इससे हिष्य, भले िी उसका स्वभाव कैसा भी क्यों ंन िो, अपने को गुरु के अनुकूल बना लेता िै।

(२३८) अिोकल अहधकांि साधकों ंको अपने को अपने गुरुभाइयों ंके अनुकूल बनाने अथवा उनके साथ समिय करने का ज्ञान निीं ंिै।

(२३९) हिष्य को अपने गुरु के अनुकूल बनना तथा उनके साथ हिल-हमल िाना चाहिए।

(२४०) गुरु-भत्मक्त-योग के हवकास के हलए हवनम्रता तथा आज्ञाकाररता आवश्यक िै।

(२४१) िब हिष्य एक गुरु के अधीन रिने वाले सिहिष्यों ंके अनुकूल बनना निीं ंिानता, तो संघषग उत्पन्न िोता िै और अपने गुरु को अप्रसन्न कर देता िै।

(२४२) िलपोत का अहधपहत सदा सतकग रिता िै। धीवर सदा सतकग रिता िै। िल्यहचहकत्सक िल्यािाला में सदा सतकग रिता िै। इसी भााँहत हपपासु तथा कुषुहधत हिष्य को अपने गुरु की सेवा में सदा सतकग रिना चाहिए।

(२४३) हनिालु, हनरुत्सिा, उदास, अकमगण्य, सुस्त तथा िडमहत हिष्य अपने गुरु की सन्तोषप्रद रूप से सेवा निीं ंकर सकता िै।

(२४४) अध्यवसाय गुण से सम्पन्न हिष्य अपने गुरु की सेवा में सफल िोता िै। समृत्मद्ध तथा अमरता उसके पररचर िैं।

(२४५) हिष्य में अपने गुरु की सेवा करने की आकांक्षा अथवा ज्वलन्त कामना िोनी चाहिए।

(२४६) गुरु के प्रहत भत्मक्त मानव की सभी िुभ मित्त्वाकांक्षाओं ंका एकमात्र वास्तहवक ध्येय िै।

(२४७) िब हिष्य गुरु के पास अध्ययन करता िो, तो उसके श्रोत्र सावधान िोने चाहिए और िब वि गुरु की सेवा करता िो, तो उसकी दृहष्ट सावधान िोनी चाहिए।

(२४८) हिष्य को अपने गुरु, माता-हपता, गुरु िनों ंतथा सभी काल के सन्तों ंऔर ज्ञानी िनों ंके साथ सद्व्यविार करना चाहिए।

(२४९) सद्व्यविार का अथग िै गुरु के साथ सदाचरण ।

(२५०) गुरु हिष्य के व्यविार से उसके स्वभाव तथा उसके मन के स्वरूप को िान सकता िै।

(२५१) अपने पावन गुरु के प्रहत सद्व्यविार आनन्दधाम का पारपत्र िै।

(२५२) गुरु की सेवा करते समय हिष्य को मनमौिी निीं ंिोना चाहिए।

(२५३) आचार अपने गुरु की सेवा से प्राप्त व्याविाररक ज्ञान की अहभव्यत्मक्त िै।

(२५४) दैवी सम्पद् तथा सद्गुण दुकानों ंसे क्रय निीं ंहकये िा सकते िैं। ये तो दीघग काल तक गुरु-सेवा, श्रद्धा तथा भत्मक्त द्वारा िी प्राप्त हकये िा सकते िैं।

(२५५) आप मिान् हवद्वान् तथा धनाढ्य िों,ं तो भी गुरु तथा मिात्माओं ंके समक्ष आपको बहुत िी हवनीत िोना चाहिए।

(२५६) हिष्य बहुत हवद्वान् न िो, पर यहद वि हवनम्रता का साकार रूप िो, तो उसके गुरु का उसके ऊपर अत्यहधक स्नेि िोता िै।

(२५७) यहद आप नल से िल पीना चािते िैं, तो आपको नीचे झुकना िोगा। इसी भााँहत यहद आप गुरु के पहवत्र मुख से प्रवाहित अमरत्व की अध्यात्म-सुधा का पान करना चािते िैं, तो आपको हवनम्रता तथा हवनयिीलता की मूहतग बनना िोगा।

(२५८) िो मनुष्य हवनम्र तथा हनष्ठावान् िोते िैं, उनके ऊपर िी गुरु की कृपा का अवतरण िोता िै।

(२५९) गुरु के चरण-कमलों ंकी पूिा के हलए नम्रता के पुष्प श्ेरेष्ठतर अन्य कोई पुष्प निीं ंिै।

(२६०) श्रद्धा गुरु में हवश्वास तथा हनष्ठा को किते िैं।

(२६१) श्रद्धा अपने पहवत्र गुरु तथा मिााओं ंके कथन, वाणी, कायों, लेखों ंतथा उपदिेों ंमें हवश्वास िै।

(२६२) गुरु साक्षी अथवा अहधकारी व्यत्मक्त के रूप में िो कि, उसमें हकसी साक्ष्य अथवा प्रमाण की हचन्ता हकये हबना दृढ़ हवश्वास रखना श्रद्धा िै।

(२६३) गुरु में पूणग श्रद्धा रखें और अपनी समूपूणग सत्ता को उनें् समहपगत कर दें। वि आपकी साँभाल करेंगे। उससे समूपूणग भय, अन्तराय तथा कष्ट पूणगतया नष्ट िो िायेंगे।

(२६४) सद्गुरु में दृढ़ श्रद्धा आिा को उन्नत करती, हृदय को िुद्ध बनाती तथा िीव को आि-साक्षात्कार की ओर ले िाती िै।

(२६५) गुरु के उपदिेों ंमें भाव-प्रवण श्रद्धा हिष्य का आदिग वाक्य िोना चाहिए। -

(२६६) आज्ञाकाररता गुरु तथा गुरु िनों ंके आदिेों ंके पालन की तत्परता िै।

(२६७) िो हिष्य अपने गुरु की आज्ञा का पालन करता िै, विीं ंअपनी हनम्न आिा पर िासन कर सकता िै।

(२६८) नम्रता, भत्मक्त-भाव, हनररिंकाररता आहद अन्य सभी गुण गुरु की आज्ञा के पालन से उत्पन्न िोते िैं।

(२६९) गुरु के आदिेों ंमें िंका न करना तथा उनके पालन में हवलम्ब न करना गुरु की सिी आज्ञाकाररता िै।

(२७०) गुरु की आज्ञाओं ंका पालन सभी अध्यवसायों ंमें सफलता की िननी िै।

(२७१) गुरु हिसकी आज्ञा दें, उस कायग को करना तथा हिसे हनषेध करें, उस कायग को न करना िी गुरु की सिी आज्ञाकाररता िै।

(२७२) दम्भी हिष्य भयवि अपने गुरु की आज्ञा का पालन करता िै, सिा हिष्य प्ेरेम के हलए, िुद्ध प्ेरेम से अपने गुरु की आज्ञा का पालन करता िै।

(२७३) हिष्य का प्रथम पाठ गुरु की सिी आज्ञाकाररता िै।

(२७४) भलाई एक सररता िै िो की आज्ञा-पालन के मागग से ईश्वर के चरण-कमलों ंसे प्रवाहित िोती िै।

(२७५) यहद हिष्य के हृदय में सन्तोष न िो, तो यि प्रकट करता िै हक हिष्य ने गुरु की आज्ञाओं ंका पूणग रूप से पालन निीं ंहकया िै।

(२७६) आपमें भाव तथा उत्सािा िोगा, तो गुरु आपकी भेंट से प्रसन्न िोंगे, न हक आपकी भेंट के प्रकार से।

(२७७) हिष्य को अपने गुरु की सेवा बहुत उत्सािा तथा मनोयोगपूवगक करनी चाहिए।

(२७८) यहद साधक श्रद्धा तथा भत्मक्त-भाव से अपने गुरु की सेवा निीं करता, तो उसके सभी व्रत तथा तप उसी भााँहत क्षीण िो िायेंगे िैसे कि घडे में रखा हुआ िल टपक िाता िै।

(२७९) मन तथा इत्मियों का सयम, गुरु-भगवान् का ध्यान करना, गुरु की सेवा करने में धैयग, सिनिीलता, गुरु के प्रहत भत्मक्त-भाव, सन्तोष, दया, स्वच्छता, सत्यवाहदता, ऋिुता तथा गुरु की आज्ञाकाररता-ये सब सत्मच्छष्य के लक्षण िैं।

(२८०) सत्य के हिज्ञासु को मन तथा इत्मियों के ऊपर संयम रख कर अपने आचायग के घर में रिना चाहिए तथा आदरपूवगक उनके अधीन िास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए।

(२८१) उसे कठोर ब्रह्मचयग-व्रत का पालन करना चाहिए तथा गुरु पूिा करनी चाहिए। की

(२८२) हिष्य को चाहिए हक वि गुरु को मनुष्य-रूप में न देख कर उन्ें साक्षात् भगवान् माने ।

(२८३) हिष्य को गुरु के दोष निीं देखने चाहिए; क्योंहक गुरु सभी देवों का प्रहतहनहध िै।

(२८४) हिष्य को गुरु के हलए हभक्षा मााँग कर लानी चाहिए और उन्ें बडी श्रद्धा तथा भत्मक्त से त्मखलाना चाहिए।

(२८५) हिष्य को सभी सुख-सुहवधाओं को त्याग देना चाहिए और अपने िरीर को गुरु की सेवा में समहपगत कर देना चाहिए।

(२८६) िास्त्रों के अध्ययन के पिात् हिष्य को अपने को दहक्षणा देनी चाहिए और उनकी अनुमहत से अपने घर वापस िाना चाहिए।

(२८७) िो गुरु-पद का उपयोग िीहवका के साधन के रूप में करता िै, वि धमग का नाि करने वाला िै।

(२८८) ब्रह्मचारी का मुख्य कतगव्य अपने आचायग की पूणग हृदय से हनःस्वाथग सेवा करना िै।

(२८९) गुरु की कृपा प्रात्मप्त के हलए उनकी व्यत्मक्तगत सेवा तथा उनकी पूणग आज्ञाकाररता हितनी सिायप्रद िै, उतना सिायप्रद तप, तीथगयात्रा, भेंट, दान निीं िै।

(२९०) वेद, अपरोक्ष ज्ञान, गुरु-वचन तथा अनुमान —ये ज्ञान के चार प्रमाण िैं।

(२९१) प्रत्येक कमग में दुःख के बीि हनहित िैं, हकन्तु गुरु की सेवा के हवषय में यि बात निीं िै।

(२९२) गुरु के आदिेों ंका पालन करने के हलए हिष्य को हकसी समय भी धन, भोग-हवलास, सुख-सुहवधा तथा अपने िरीर तक का त्याग करने के हलए तैयार रिना चाहिए।

(२९३) िो तन, मन तथा धन गुरु के चरणों ंमें अपगण कर देता िै, वि गुरु भत्मक्त योग हवकहसत करता िै।

(२९४) हिससे गुरु चरणों ंके प्रहत भत्मक्त-भाव की वृत्मद्ध िो, वि परम धमग िै।

(२९५) गुरु-मन्त्र का िप, गुरु-सेवा-काल में तपियाग, गुरु-वचन में श्रद्धा, आचायग-सेवन, सन्तोष, िुहचता, ास्त्-पररीलन तथा गुरु-भत्मक्त अथवा गुरु को आि-समपगण - ये हनयम िैं।

(२९६) गुरु के आदिेों ंके पालन करने में कष्ट सिन करना हतहतक्षा िै।

(२९७) गुरु ने हिस कमग का हनषेध हकया िो, उस कमग को छोड देना त्याग िै।

(२९८) गुरु की व्यत्मक्तगत सेवा करने से हिष्य अपने मन को वि में कर सकता िै।

(२९९) गुरु के भोिन कर लेने के पित् िो आिार बचा रिता िै, वि सवागहधक सात्मत्त्वक भोिन िै।

(३००) गुरु इस भूलोक में साक्षात् ईश्वर िैं तथा वि सिे हमत्र तथा हवश्वासपात्र सम्बन्धी िैं।

परररहिष्ट

गुरु-गीता का सार

मांगलाचरणां डिष्टाचाराद्वै फलदिथनि् ।

हिष्ट लोगों ंका आचार िै हक फल की प्रात्मप्त के हलए मंगलाचरण करना चाहिए।

मांगलां भगवान् डवषु्णुमांगलां गरुिध्वजः ।
मांगलां पुण्डरीकाक्षो मांगलायिनां हररः ।। १ ।।

भगवान् हवषुणु मंगल करने वाले िैं। भगवान् िो गरुड पर सुिोहभत िैं मंगल करने वाले िैं। भगवान् िो कमल-नयन िैं मंगलकारक िैं। भगवान् िरर मंगल को बढ़ाने वाले िैं।

सक्तिदानन्दकन्दाय जगदांकुरहिेवे ।
सदोडदिाय पूणाथय नमोऽनन्ताय डवष्णवे ॥ २ ॥

अनन्त हवषुणु को प्रणाम िै िो सदैव उहदत एवं पूणग िैं, िो समस्त िगत् के अंकुर - कारण िैं, िो सत्-हचत्-आनन्द के मित्तम द्योतक िैं।

सर्त्ानन्दस्वरूपाय बौीकसुखकाररणे ।
नमो वेदान्तवेद्याय गुरवे बुक्तद्धसाडक्षणे ॥ ३ ॥

गुरु को साष्टांग प्रणाम िै िो बुत्मद्ध का साक्षी िै, िो वेदान्त द्वारा जे्ञेय िै, िो चेतनानन्द का साधन िै, िो सत्यानन्द का स्वरूप िै।

गुरुब्रथह्मा गुरुडवथषुणुगुथरुदेवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षिा् परां ब्रह्म िस्मै श्रीगुरवे नमः ||४||

गुरु ब्रह्मा िै। गुरु हवषुणु िै। गुरु भगवान् मििे िै। गुरु प्रत्यक्ष रूप परम ब्रह्म िै। उस गुरु को प्रणाम िै।

अज्ञानडिडमरान्धस्य ज्ञानांजनिलाकया ।
चकुषुरुन्मीडलिां येन िस्मै श्रीगुरवे नमः ॥५ ॥

अने्धे की आाँखों ंको ज्ञान रूपी अज्ञान रूपी अन्धकार अंिनिलाका से खोलने वाले उस गुरु को साष्टांग प्रणाम िै।

स्थावरां जांगमां व्याप्तां यत्तकांडचत्सचराचरम् ।
त्वांपदां दडिथिां येन िस्मै श्रीगुरवे नमः ||६||

िो चिल और अचल सृहष्ट में त्मथथर एवं अत्मथथर िीवों ंमें व्याप्त िै, हिसने 'तू' िब्द का दिगन कराया िै, उस गुरु को प्रणाम िै।

अखण्डमण्डलाकारां व्याप्तां येन चराचरम् ।
त्पिदां दडिथिां येन िस्मै श्रीगुरवे नमः ॥७ ॥

िो त्मथथर और अत्मथथर सृहष्ट में अखण्डमण्डलाकार रूप में व्याप्त िै। हिसने 'वि' िब्द का दिगन कराया िै, उस गुरु को प्रणाम िै।

हचन्मयं व्याहपतं सवं तै्रैलोक्ं यं सचराचरम् ।
अहसत्ंव दहिगतं येन तस्ैमै श्रीगुरवे नमः ॥८ ॥

ाि हिचन्मय स्वरूप तीनों ंलोकों ंके चल एवं अचल सब हनवाहसयों ंमें व्याप्त िैहिसने ' तू िै' का दिगन कराया िै, उस गुरु को प्रणाम िै।

चैन्यां िाश्वां िान्तां व्योमािीां डनरांजनम् ।
नाददबन्दुकलािीां िस्मै श्रीगुरवे नमः ॥९॥

ाि चैतन्य, िाश्वत, िान्त,व्योम से परे िै, हनरंिन िै, िो नाद, हबन्दु और कला से परे िै, उस गुरु को प्रणाम िै।

यत्सरे्त्ेन जगत्सर्त्ां यत्प्रकािेन भाडि यि् ।
यदानन्देन नन्दक्तन्त िस्मै श्रीगुरवे नमः ।। १० ।।

हिसके अत्मस्तत्व से संसार का अत्मस्तत्व िै, हिसके प्रकाि से िगत् प्रकाहित िोता िै, हिसके आनन्द से सब आनत्मन्दत िैं, उस गुरु को प्रणाम िै।

न गुरोरडिकां तत्त्वां न गुरोरडिकां िपः ।
न गुरोरडिकां ज्ञानां िस्मै श्रीगुरवे नमः ।। ११ ।।

गुरु से बढ़ कर कोई तत्त्व निीं,ं गुरु से बढ़ कर कोई तप निीं,ं गुरु से बढ़ कर कोई ज्ञान निीं,ं उस गुरु को प्रणाम िै।

ध्यानमूलां गुरोमूथडिथः पूजामूलां गुरोः पदम् ।
मन्त्रमूलां गुरोवाथक्यां मोक्षमूलां गुरोः कृपा ।। १२ ।।

ध्यान का मूल गुरु की मूहतग िै, पूिा का मूल गुरु के चरण िैं। मन्त्रों ंका मूल गुरु-वाक्य िै और मोक्ष का मूल गुरु की कृपा िै।

गुरुपादोदकां पानां गुरोरुक्तिष्टभोजनम् ।
गुरुमूिः सदा ध्यानां गुरोनाथम सदा जपः ॥१३॥

गुरु के चरण-प्रक्षाहलत िल का पान करना चाहिए। गुरु के भोिन के बाद बचा हुआ भोिन ग्रिण करना चाहिए। गुरु की मूहतग का प्रहतहदन ध्यान करना चाहिए। गुरु के नाम का प्रहतहदन िप करना चाहिए।

अज्ञानमूलहरणां जन्मकमथडनवारणम् ।
ज्ञानवैराग्यडसद्ध्यथं गुरोः पादोदकां डपबेि् । । १४॥

ज्ञान एवं वैराग्य की प्रात्मप्त िेतु गुरु-चरण-प्रक्षाहलत िल का पान करना चाहिए, िो अज्ञान के मूल को दूर करता िै, िो िन्म एवं कमों के धनों ंका हनवारण करता िै।

कािीक्षेत्रां डनवासि जाह्नवी चरणोदकम् ।
गुरुडवथशे्वेश्वरः साक्षाि् िारकां ब्रह्म डनियम् ।। १५ ।।

किाी के्षेत्र हनवास थथल िैंगा िल उसके चरणों ंके हलए िल ि, साक्षात् मिेश्वर गुरु ि। तारक-मन्त्र हनहित रूप से परम ग्रिा ि।

आसनां ियनां वस्त्ां वाहनां भूषणाडदकम्।
सिाकेन प्रदािव्यां गुरुसन्तोषकारणम् ।। १६ ।।

साधक को गुरु के सन्तोष ितु गुरु को आसन, ियन-सामग्री, वस्त्, बािन, आभूषण आहद भेंट करने चाहिए।

िरीरडमक्तियां प्राणानथथस्वजनबान्धवान् ।
आत्मदाराडदकां सवं सद्गुरुभ्यो डनवेदयेि्ये ।।१७।।

अपना िरीर, इत्मियााँ, िीवन, सम्पहत्त, हमत्र, सम्बन्धी, िाी, पत्नी - सब कुछ गुरु चरणों ंमें हनवेहदत कर देना चाहिए।

गुरुरेको जगत्सवथ ब्रह्मडवष्णुडिवात्मकम् ।
गुरोः परिरां नात्क्तस्त िस्मिा् समूपूजयेद् गुरुम् ।। १८ ।।

ब्रह्मा, हवष्णु और हिव सहित एक गुरु सारा संसार ि। गुरु से मिान् कोई निीं ंि, अतः गुरु की पूिा करनी चाहिए।

कमथणा मनसा वाचा सवथदाऽऽराियेद् गुरुम् ।
दीघथदण्डां नमस्कृत्य डनलथज्जो गुरुसडिडिौ ।। १९ ।।

गुरु के समक्ष हबना संकोच के लम्बा दण्डवत् प्रणाम करना चाहिए और मन,कमग तथा वचन से िमेिा आराधना करनी चाहिए।

सप्तसागरपयथन्तां िीथथस्नानफलां यथा ।
गुरुपादपयोडबन्दो सहस्रांिेन ित्फलम् ।। २० ।।

सात समुिों ंतक के तीथग-स्नानों ंका फल गुरु-चरणों ंके प्रक्षालन से प्राप्त एक बूाँद पान के ििारवें अंि के समान ि।

डिवे रुष्टे गुरुस्त्ाािा गुरौ रुष्टे न किन ।
लब्ध्वा कुलगुरुां सम्यग् गुरुमेव समाश्रयेि् ।। २१ ।।

भगवान् के नाराि िोने पर गुरु रक्षक ि, गुरु के नाराि िोने पर कोई रक्षक निीं ंि। अतः कुल-गुरु प्राप्त करके उस उपयुक्त गुरु का िी आश्रय ले लेना चाहिए।

श्रीनाथचरणद्वन्द्वां यस्याां डदडि डवराजिे ।
िस्याां डदडि नमस्कुयाथद् भक्त्या प्रडिडदनां डप्रये ।। २२ ।।

हिस हदिा में लक्ष्मी-पहत के चरणयुगल सुिोहभत िोते िैं, िे प्यारे! उस हदिा में प्रहतहदन भत्मक्तपूवगक प्रणाम करना चाहिए।

ब्रह्मानन्दां परमसुखदां केवलां ज्ञानमूडिथ
द्वन्द्विाीां गगनसदृिां ित्त्वमस्याडदलक्ष्यम् ।
एकां डनत्यां डवमलमचलां सवथीसाडक्षभूिां
भावािीिां डत्रगुणरडहिां सद्गुरुां िां नमाडम ॥ २३ ॥

उस सद्गुरु को साष्टांग प्रणाम करता हाँ हिसकी सत्ता तीन गुणों ंसे रहित िै, िो भाव से परे िै, समूपूणग मानसों ंमें व्याप्त, पररवतगन-रहित, हनमगल, एक और हनत्य, द्वन्द्व से परे, गगनसदृि हविाल, 'तू वि िै' िैसे आहद-वाक्यों ंसे सुलभ, ब्रह्मानन्द, परम सुख का दाता, ज्ञान की मूहतग िै।

आनन्दमानन्दकरां प्रसन्नां
ज्ञानस्वरूपां डनजभाव युिम् ।
योगीि मीड्यां भवरोग वैद्यां
श्रीसद्गुरुां डनत्यमहां नमाडम ।। २४ ।।

मैं िमेिा प्रभु-हप्रय गुरु को प्रणाम करता हाँ िो संसार रूपी रोग के वैद्य िैं, िो योहगयों ंके आराध्य देव िैं, िो आनन्दमय िैं, िो सदैव प्रसन्न िैं, िो ज्ञान की प्रहतमूहतग िैं, िो यथाथग सत्ता से एकिा िैं।

हृदमुबुजेकडणथकमध्यसांस्थ
डसांहासने सांक्तस्थिडदव्यमूडिथम् ।
ध्यायेद् गुरुां चिकलाप्रकािां
सक्तित्सुखाभीष्टवरां दिानम् ।। २५ ।।

हदव्य रूप गुरु का ध्यान करना चाहिए, िो हृदय-रूपी कमल के मध्य में सुिोहभत िैं, िो भव्य हसंिासन पर हवरािमान िैं, िो चिकला की अभीष्ट वरदान को देने के भााँहत प्रकािवान् िैं, िो सत्-हचत्-आनन्द हलए तत्पर िैं ।

डनत्युद्धां डनराभासां डनराकारां डनरांजनम् ।
डनत्यबोधां डचदानन्दां गुरुां ब्रह्म नमाम्यहम् || २६ ।।

मैं उस गुरु को प्रणाम करता हाँ, िो ब्रह्म िै, हचदानन्द िै, हनत्य ज्ञानवान् िै, दोष-रहित िै, हनराकार िै, हनरंिन (दृहष्ट से परे) िै, हनत्य-हनमगल तथा अदृश्य िै ।

गुरुां त्वांकृत्य् हुांकृत्य् गुरुसाडिध्यभाषणः ।
अरण्ये डनजथले दि सम्भवेद् ब्रह्मराक्षसः || २७ ।।

वि िो गुरु को 'तू' कि कर और अपने को 'िम' कि कर सम्बोहधत करता िै, गुरु की उपत्मथथहत में अहधक बोलता िै, वि िलिीन अरण्य-क्षेत्र में ब्रह्मराक्षस (एक भयंकर राक्षस) बनता िै।

डनत्यां ब्रह्म डनराकारां डनगुथणां बोियेत्परम् ।
भासयन् ब्रह्मभावां च दीपो दीपान्तरां यथा ।। २८ ।।

दीपक का दीपक से अन्तर िैसे िी ब्रह्म-भाव को प्रकट करते हुए उस हनत्य, हनराकार, हनगुगण परम ब्रह्म को िानना चाहिए।

वन्देऽहां सक्तिदानन्दां भाविीिां जगद्गुरुम् ।
डनर्त्ां पूणथ डनराकारां डनगुथणां त्वात्मसांक्तस्थम् ।। २९ ।।

मैं सत्मिदानन्द की वन्दना करता हाँ िो भाव से परे िै, िगत् का गुरु िै, हनत्य, पूणग, हनराकार, हनगुगण, हकनुतु आिाओं ंमें त्मथथत िै।

गुरुः डिवो गुरुदेवो गुरुबथनु्धः िरीररणाम् ।
गुरुरात्मा गुरुजीवो गुरोरन्यि डवद्यिे ।। ३० ।।

गुरु हिव िै। गुरु ईश्वर िै। गुरु िरीरधाररयों ंका बनुधु (हमत्र) िै। गुरु आिा िै। गुरु िीव िै। गुरु के अहतररक्त कुछ निीं ंिै।

ज्ञानहीनो गुरुस्त्याज्यो डमथ्यावादी डविम्बकः ।
स्वडवश्राक्तन्तां न जानाडि परिाक्तन्तां करोडि डकम् ।। ३१ ।।

ज्ञानिीन, हमथ्यावादी और पाखण्डी गुरु त्याज्य िै । वि स्वयं यि निीं ंिानता हक िात्मन्त क्या िै तो दूसरों ं को हकस प्रकार िात्मन्त प्रदान कर सकता िै।

पाखक्तण्डनः पापरिा नाक्तस्तका भेदबुद्धयः ।
स्त्ीलम्पटा दुराचाराः कृिघ्ना बकवृत्तयः ॥ ३२ ॥

वे गुरु निीं ंिैं िो पाखण्डी िैं, िो पाप में रत रिते िैं, नात्मस्तक िैं,भेद-भाव स्वरूप िैं, िो स्त्ी-लम्पट िैं, िी दुराचारी िैं, कृतघ्न और कपटी िैं।

डनरस्तसवथसने्देहमेकीकृर्त् सुदिथनम् ।
रहस्यां यो दिथयडि भजाडम गुरुमीश्वरम् ।। ३३ ।।

मैं गुरु-रूप ईश्वर का भिन करता हाँ, िो समस्त दिगनीय हवषयों ंको एक कर, िंकाओं ंका समाधान कर रिस्य का दिगन कराता िै।

गुरवो बहवः सक्तन्त डिष्यडवत्तापहारकाः ।
मिेकां दुलथभां मने्ये डिष्यहृत्तापहारकम् ।। ३४ ।।

अपने हिष्यों ंसे धन खीचंने वाले बहुत से गुरु िैं; हकनुतु हिष्य के हृदय का दुःख दूर करने वाले उस एक को दुलगभ मानता हाँ।

चािुयथवान् डववेकी च अध्यात्मज्ञानवाांिुडचः ।
मानसां डनमथलां यस्य गुरुत्वां िस्य िोभिे ||३५||

उसका गुरुत्व वास्तहवक ोहभत ोता ै हिसका हनमगल मत्मस्तष्क चातुयगवान्, हववेकिील, अध्यिा-ज्ञान से पूणग और पहवत्र ै।

गुरवो डनमथलाः ान्ताः सािवो डमिभाडषणः ।
कामक्रोिडवडनमुथिाः सदाचाराः डजतेत्मियाः ॥ ३६ ॥

गुरु िन हनमगल, ात्मन्तमय, सज्जन, हमतभाषी, काम-क्रोध से मुक्त,सदाचारी एवं हितेत्मिय ोते ैं।

एकाक्षरप्रदातारं यो गुरुं नैव मन्यते ।
िुनां योडनितं गत्वा चण्डालेष्वडभजायते ।। ३७ ।।

एक अक्षर (ॐ) को देने वाले गुरु को ो निीं ंमानता ै, वि सैकडों ंिन्मों ंतक कुत्ते की योहन में ा कर चाण्डालों ंके वंि में िन्म लेता ै।

गुरुत्यागाद्भवेन्मृत्युमथन्त्रत्यागाद्दररद्रता ।
गुरुमन्त्रपररत्यागी रौरवां नरकां व्रजेत् ।। ३८ ।।

गुरु का त्याग करने से मृतुयु ोती ै, मन्त्र के त्याग से हनधगनता सताती ै। गुरु के द्वारा प्रदत्त मन्त्र को छोडने वाला रौरव नरक में िाता ै।

सप्तकोडटमहामन्त्राडित्तडवभ्रमकारकाः ।
एक एव महामन्त्रो गुरुररत्यक्षरद्वयम् ।। ३९ ।।

सात करोड मिामन्त्र मन को भ्रहमत करने वाले ैं। दो अक्षरों ंका 'गुरु' ी एकमात्र मिामन्त्र ै।

गुकारिान्धकारि रुकारस्तडिरोिकृत् ।
अन्धकारडवनाडित्वाद् गुरुररत्यडभिीयते ।। ४० ।।

'गु' अक्षर अन्धकार ै, रु' अक्षर उसका हनवारक ै। अन्धकार का हविनाि करने से ी 'गुरु' यि संज्ञा रखी िाती ै।

श्रद्धालुमुथत्क्तवाक्येषु वेदान्तज्ञानडलप्सया ।
उपायनकरो भूत्वा गुरुं ब्रह्मडवदां व्रजेत् ।। ४१ ।।

मुत्मक्त-वाक्यों ंमें श्रद्धा रखने वाला वेदान्त - ज्ञान की इच्छा से उपिार ले कर ब्रह्म को िानने वाले गुरु की िरण में िाये।

श्रवणां तु गुरोः पूवथ मननां तदनन्तरम् ।
डनडदध्यासनडमत्येतत् पूणथबोिस्य कारणम् ।। ४२ ॥

प्रथम गुरु के समक्ष श्रवण करना चाहिए। तदनन्तर उस पर (यि क्या िब्द ै) मनन करना चाहिए। तब पूणग हचन्तन पूणग ज्ञान का कारण बनता ै।

यथा यथा जात्यंधस्य रूपज्ञानं न डवद्यिे ।
थिा गुरूपदिेन डवना ज्ञानं न डवद्यिे ॥ ४३ ॥

हिस प्रकार िन्म से अन्धे मनुष्य को रूप का ज्ञान निीं ंिोता िै, उसी प्रकार गुरु के उपदिे के हबना यथाथग ज्ञान निीं ंिोता िै।

यदा सद्गुरुकटाक्षो भवडि
दिा भगवकथाश्रवणध्यानादौ श्रद्धा जायिे ।
िान्तो दान्तोऽडिडवरिः
सुश्रद्धो गुरुभिस्तपोडनष्ठः || ४४ ॥

बि गुरु की कृपा िोती िै, तब भगवत् कथाओं ंके श्रवण, ध्यान आहद में श्रद्धा का उदय िोता िै। साधक को क्षोभ रहित, हितेत्मिय, पूणग हवरक्त, श्रद्धायुक्त, गुरु भक्त और तप में त्मथथर िोना चाहिए।

डिष्यो ब्रह्मडनष्ठं गुरुमासाद्य प्रदडक्षणपूवथकं
दण्डवि् प्रणम्य प्रांजडलभूथत्वा डवनयेनोपसांगम्य ।
भगवन् गुरो मे परमित्त्वरहस्यं
डवडविं विव्यडमडि ।। ४५ ।।

साधक को ब्रह्महनष्ठ गुरु की िरण में पहुँच कर उसके चारों ंतरफ प्रदहक्षणा करते हुए, साष्टांग दण्डवत् तथा करबद्ध प्रणाम कर, अहत-हवनयी िो कर हनवेदन करना चाहिए, "िे प्रभो, िे गुरु, मुझे परम तत्त्व का पूणग रिस्य हवस्तार से बतलाने की कृपा करें।"

सवथज्ञं सवथगं िान्तं सवेषां हृदये त्तस्थिम् ।
सांवेद्यं गुरुमुखाि् सुदुबोमचेसाम् ||४६ ॥

डदव्यज्ञानोपदेष्टारं देडिकं परमेश्वरम् ।
पूजयेत्परया भक्त्या िस्य ज्ञानफलं भवेि् ।। ४७ ।।

िी परम श्रद्धा से उस गुरु की पूिा करता िै, िो सब कुछ िानने वाला, सवगत्र व्याप्त, िान्त, सबके हृदय में हवरािमान, गुरु-मुख से सिी रूप में िानने योग्य तथा मूखों द्वारा पूणग रूप से अज्ञात, हदव्य ज्ञान का उपदेिक तथा परमेश्वर रूप िै, उसका ज्ञान फलदायक िोता िै।

यस्य देवे परा भक्तियथा देवे िथा गुरौ ।
सैि्यिे कडथिा ह्याथाथः प्रकािन्िे महात्मनः ।। ४८ ।।

हिसकी ईश्वर में परम श्रद्धा िै और िैसी श्रद्धा ईश्वर में िै वैसी गुरु में भी िै, उस मिान आत्मा को उक्त अथग (हदव्य ज्ञान) अवश्य प्रकाहित करते िैं।

कणथिारं गुरुं प्राप्य िद्वाक्यं प्लववद्दृढम् ।
अभ्यासवासनािक्त्या िरत्तन्त भवसागरम् ।। ४९ ।।

लोग कणगधार गुरु को पा कर गुरु-वाक्य की सुदृढ नौका पर आरूढ़ ि◌ो अभ्यास-धारणा-रूपी ि◌त्मक्त से संसार सागर को पार करते ि◌ैं।

दुलथभो डवषयर्त्ागो दुलथभां ि◌त्त्वदिथनम् ।
दुलथभा सहजावस्था सद्गुरोः करुणाां डवना ।। ५० ।।

सदगुरु की दया के हबना हवषयों ◌ंका त्याग दुलगभ ि◌ै, तत्त्व-दिगन करना दुलगभ ि◌ै, औक्य दुलगभ ि◌ै।

नमः डिवाय गुरवे सक्तिदानन्दमूिथये ।
डनष्प्रपांचाय ि◌ान्ताय डनरालम्बाय ि◌ेजसे ।। ५१ ।।

उस हिव-रूप, सत्मिदानन्द, प्रपंचों ◌ंसे रहित, ि◌ान्त, हनरालम्ब, ति- युक्त गुरु को प्रणाम ि◌ै।

त्वां डह डवषु्णुडवथरांडचस्त्वां त्वां च देवो महेश्वरः ।
त्वमेव ि◌क्तिरूपोडस डनगुथणस्त्वां सनिानः । । ५२ ।।

तू ि◌ी हवषु्णु ि◌ै, तू ि◌ी ब्रह्मा ि◌ै और तू ि◌ी मिेश्वर ि◌ै। तू ि◌ी ि◌त्मक्त का रूप ि◌ै। तू ि◌ी हनगुगण ि◌ाश्वत ब्रह्म ि◌ै।

नमः ि◌ान्तात्मने ि◌ुभ्यां नमो गुह्यिमाय च ।
अडचन्त्यायाप्रमेयाय अनाडदडनिनाय च ॥५३॥

उस ि◌ान्त आिन् को प्रणाम ि◌ै ि◌ो रिस्यमय, अहचन्तनीय, अपररहमत और आहद-अन्त से मुक्त ि◌ै।

नमसे्ते सिे जगकारणाय
नमसे्ते डचिे सवथलोकाश्रयाय ।
नमोऽदै्विित्त्वाय मुक्तिप्रदाय
नमो ब्रह्मणे व्याडपने ि◌ाश्विाय ।। ५४ ।।

गित् के कारण सत् तुझे प्रणाम ि◌ै। लोकों ◌ंके आश्रय हचत् तुझे प्रणाम ि◌ै। मुत्मक्त को प्रदान करने वाले अदै्वैत तत्त्व तुझे प्रणाम ि◌ै। ि◌ाश्वत सवगत्र व्याप्त ब्रह्म तुझे प्रणाम ि◌ै।

ईश्वरो गुरुरात्मेडि मूडिथभेदडवभाडगने ।
व्योमवद् व्याप्तदेहाय दडक्षणामूिथये नमः ।।५५ ।।

िी ईश्वर, गुरु, आिा — इन तीनों ◌ंरूपों ◌ंमें प्रकट ि◌ोता ि◌ै, ि◌ो आकािवत् रूप से सवगत्र व्याप्त ि◌ै, उस दहक्षणामूहतग को प्रणाम ि◌ै।

डनिये सवथडवद्यानाां डभषजे भवरोडगणाम् ।
गुरवे सवथलोकानाां दडक्षणामूिथये नमः ।। ५६ ।।

ी सिब हवद्याओं ंके स्रोत िैं, िो संसार से पीहडतों ंके हलए वैद्य िैं, िो सभी लोकों ंके गुरु िैं, उन दहक्षणामूहतग को प्रणाम िै।

सवथपापप्रिमनां िमथकामाथथमोक्षदम् ।
यां यां डचन्तयिे कामां िां िां प्राप्नोडिडनडिम् । । ५७ ।।

यि (गुरु-गीता) सब पापों ंको िरने वाली िै; धमग, अथग, काम तथा मोक्ष-प्रदायक िै। हिस हवषय-वसुतु की व्यत्मक्त इच्छा करता िै, इसके माध्यम से प्राप्त करता िै। यि हनहित िै।

िुचीभूिा ज्ञानवन्तो गुरुगीिाां जपक्तन्त ये ।
िेषाां दिथनसांस्पिाथि् पुनजथन्म न डवद्यिे ।। ५८ ।।

ी हिनमगल और ज्ञानवान् िो कर इस गुरु-गीता का पाठ करते िैं, उनके दिगन एवं स्पिग मात्र से िी लोग पुनिगन्म से मुक्त िो िाते िैं।

ॐ िात्मिन्तः ! िात्मिन्तः!! िात्मिन्तः!!!